मांझी

वार्षिक पत्रिका (संयुक्तांक)

सत्र 2018-2019 एवं 2019-2020

शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय, डौण्डी

जिला - बालोद (छ.ग.)

Email : kmcollege.doundi@gmail.com

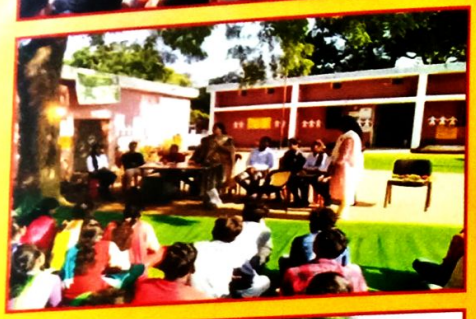

शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय, डौण्डी
जिला - बालोद (छ.ग.)

वार्षिक पत्रिका

मांझी

(संयुक्तांक)

2018-2019 एवं 2019-2020

संरक्षक, सम्पोषक
प्रो. (डॉ.) उमाकान्त मिश्र
प्राध्यापक एवं प्रभारी प्राचार्य

प्रधान सम्पादक
श्री विनोद कुमार कोमा
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र

सम्पादक मण्डल

श्रीमती राधेश्वरी देशमुख
(सहा. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, जन्तु विज्ञान)

श्री दीपक कुमार मेश्राम
(सहा. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, इतिहास)

छात्र संघ	2018–2019	2019–2020
अध्यक्ष	कु. धनेश्वरी	कु. हेमा धनकर
उपाध्यक्ष	कु. प्रीति	कु. ओमिन
सचिव	अंकित सिन्हा	कु. गुणिका
सहसचिव	कु. देविका	संदीप आंचला

कम्प्यूटर ग्राफिक्स – राहुल देवॉगन, प्रयोगशाला परिचारक

पत्रिका में प्रस्तुत विचार प्रस्तोता के हैं इससे सम्पादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है।

विषय सूची

क्र.	विवरण	पेज नम्बर
01	शुभकामना संदेश	4–11
02	प्राचार्य की कलम से	12
03	सम्पादकीय	13
04	महाविद्यालय परिवार	14
05	जनभागीदारी समिति के सदस्य सत्र 2019–2020	15
06	सम्पादक मण्डल	16
07	छात्रसंघ पदाधिकारी एवं कक्षा प्रतिनिधि सत्र 2018–2019	17
08	छात्रसंघ पदाधिकारी एवं कक्षा प्रतिनिधि सत्र 2019–2020	18
09	महाविद्यालय का परिचय	19
10	छात्रसंघ अध्यक्ष का विचार	20
11	छात्रसंघ सचिव का विचार	21
12	2019–20 में राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियॉं की जानकारी	22–25
13	हमारा पर्यावरण	26
14	ओ मेरे मांझी	27
15	Importance of English Language	28
16	हिन्दी दिवस में कविता	28
16	मानव सेवा का दूसरा नाम – रेडक्रास	29
17	महिलाओं को आर्थिक सशक्त बनाती केन्द्रीय सरकार की कल्याणकारी योजनाऍं	30
19	कोविड 19 तालाबंदी के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में प्रभाव	31–32
20	राष्ट्रीय युवा दिवस	33
21	बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओं	33
22	नदी अभियान (नदी संरक्षण की एक अनूठी पहल)	34–36
23	मन की आवाज	37
24	छ.ग. की ऐतिहासिक स्थलों का एक अध्ययन	38–39
25	वनस्पति विज्ञान एवं भौतिक विज्ञान – प्रायोगिक कार्य	40–41
26	सफलता की कुजी – आत्म विश्वास	41
27	स्वच्छ भारत मिशन में युवाओं की भूमिका एवं एन.एस.एस. का अनुभव	42
28	Importance of Forests to tribal Communities	43
29	सांसो का आना जाना	43
30	मानव की सबसे बड़ी पूंजी उसका चरित्र	44
31	धान का कटोरा – छत्तीसगढ़	44
32	कोरोना वायरस से विश्व अर्थव्यवस्था मंदी की ओर अग्रसर हो रहा है	45
33	वक्त – जब जागो तभी सबेरा	46
34	ग्रंथालय का महत्व	47
35	चुनाव में बढ़ता धन बल प्रयोग (चुनौतियां एवं समाधान)	48
36	व्यक्तित्व विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना की भूमिका	49
37	पानी की कहानी	50
38	आशाओं के दीपक	50
39	आदिवासी क्रांतिकारी कंगला मांझी	51–52
40	विश्व एड्स दिवस	52
41	वर्तमान में गांधी जो की विचारो की प्रासंगिकता	43
42	मॉं	54
43	जल संरक्षण एवं संर्वधन	55
44	पितृ–तर्पण का महत्व	56
45	राज्य स्तरीय शिविर का अनुभव	57
46	छत्तीसगढ़ का बस्तर क्षेत्र	58
47	गुरु/शिष्य पर कविता	59
48	सरदार पटेल के विचार एवं राष्ट्रीय एकता	60
49	प्रेरणा गीत	61
50	गीत	61
51	युवाओं के प्रति योग का महत्व	62
52	गणतंत्र दिवस पूर्व परेड में सम्मिलित होने का अवसर	62
53	रेडक्रास सोसायटी	63
54	हमारा महाविद्यालय कंगला मांझी है महान	64
55	सूचना क्रांति एवं युवा	65
56	स्वामी विवेकानन्द	65
57	कंगला मांझी महाविद्यालय	66
58	आओ कुछ सीखे	67
59	संगणक (कम्प्यूटर)	68
60	महान पुरुष कंगला मांझी	68
61	मेरे गुरुजनों की बाते मेरी जुबानी	69
62	महाविद्यालय में होने वाली गतिविधियों से संबंधित समाचार पत्र कवरेज	70–76
63	महाविद्यालय में होने वाली विभिन्न गतिविधियों की फोटो	77–78

सुश्री अनुसुईया उइके
राज्यपाल छत्तीसगढ़

राजभवन
रायपुर - 492001
छत्तीसगढ़, भारत
फोन : +91-771-2331100
फोन : +91-771-2331105
फैक्स : +91-771-2331108

क्र./ 87 /पीआरओ/रास/20
रायपुर, दिनांक 20 मई 2020

-: संदेश :-

अत्यंत हर्ष का विषय है कि शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी, जिला–बालोद द्वारा वार्षिक पत्रिका "मांझी" का प्रकाशन किया जा रहा है।

विद्यार्थियों के साहित्यिक एवं बौद्धिक स्तर को बढ़ाने, शिक्षण प्रणाली को रोचक और ज्ञानवर्धक बनाने तथा विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास में महाविद्यालयीन पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान होता है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मक गतिविधियों को उपयुक्त मंच प्रदान करेगी।

वार्षिक पत्रिका "मांझी" के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(सुश्री अनुसुईया उइके)

भूपेश बघेल
मुख्यमंत्री

Bhupesh Baghel
CHIEF MINISTER

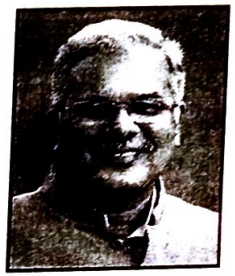

मंत्रालय, महानदी भवन
अटल नगर, रायपुर, 492002, छत्तीसगढ़
फोन: +91 (771) 2221000, 2221001
ई-मेल : cmcg@nic.in
Mantralaya, Mahanadi Bhawan,
Atal Nagar, Raipur, 492002, Chhattisgarh
Ph.: +91 (771) 2221000, 2221001
E-mail : cmcg@nic.in
Do.No. 564/HSCM Date 16/12/19

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी, जिला बालोद द्वारा वार्षिक पत्रिका 'मांझी' का प्रकाशन किया जा रहा है।

विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा को उभारने व अभिव्यक्ति का कौशल विकसित करने के लिए ऐसी पत्रिकाएं महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।

उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(भूपेश बघेल)

डॉ. अरूणा पल्टा
कुलपति

Dr. Aruna Palta
Vice Chancellor
Office – 0788-2359800, Fax-

हेमचंद यादव विश्वविद्यालय
रायपुर नाका, दुर्ग (छ.ग.) – 491001

HEMCHAND YADAV VISHWAVIDYALAYA
RAIPUR NAKA, DURG (C.G.) – 491001
; E-Mail – vicechancellor@durguniversity.ac.in

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय, डौण्डी द्वारा महाविद्यालय में चल रहे शैक्षणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक गतिविधियों को चित्रित करते हुए वार्षिक पत्रिका **"मांझी" 2019-20** का प्रकाशन किया जा रहा है।

उच्च शिक्षा का मूल उद्देश्य छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व विकास, चरित्र निर्माण, राष्ट्र सेवा, नेतृत्व क्षमता जैसे श्रेष्ठ गुणों का विकास करना है। सर्वप्रथम युवाओं में देशभक्ति की भावना जागृत करने तथा अपने देश और संस्कृति के प्रति गौरव की भावना को बढ़ाने की जरूरत है। इसी तरह उन्हें गुणवत्ता पूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान करने, उनका कौशल विकास करने की आवश्यकता है, उनमें नैतिकता का स्तर ऊँचा हो और वे देश और समाज के उत्थान के लिए समर्पित रहें।

आशा है कि महाविद्यालय द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों को, पत्रिका में शामिल किये जाने से अन्य युवाओं को भी प्रेरणा मिलेगी।

वार्षिक पत्रिका "मांझी" के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ!

(डॉ. अरूणा पल्टा)

उमेश पटेल
मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
उच्च शिक्षा, कौशल विकास,
तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार,
विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल एवं युवा कल्याण विभाग

मंत्रालय कक्ष क्रमांक- M1-12
महानदी भवन, नवा रायपुर अटल नगर, रायपुर 492002 (छ.ग.)
फोन : 0771-2510316, 2221316
नि. : D-1/2, शास. आवासीय परिसर, देवेन्द्र नगर, रायपुर
फोन : 0771-2881030
ग्राम व पोस्ट नंदेली, जिला-रायगढ़ कार्यालय: 7000477747

क्रमांक B/ 3086 दिनांक 08/09/2020

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकार हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की साहित्यिक प्रतिभा के विकास हेतु शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी, जिला बालोद द्वारा पत्रिका का प्रकाशन प्रशंसनीय कार्य है। क्रांतिवीर स्वतंत्रता सेनानी कंगला मांझी के प्रेरणास्पद व्यक्तित्व से छत्तीसगढ़ प्रदेश के साथ-साथ पूरा देश गौरवान्वित है। इस महापुरूष के सत्कार्यों को **"मांझी"** पत्रिका में प्रकाशित करने एवं युवा-वर्ग को सकारात्मक दिशा देने के लिए महाविद्यालय परिवार को बधाई देता हूँ।

मै आशा करता हूँ कि यह पत्रिका एक प्रेरणास्त्रोत एवं मार्गदर्शक के रूप में कार्य करेगा। पत्रिका के प्रकाशन पर महाविद्यालय परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

(उमेश पटेल)

श्रीमती अनिला भेड़िया
विधायक, डौण्डी लोहारा
मंत्री, छ.ग. शासन
महिला एवं बाल विकास विभाग

महानदी भवन, नवा रायपुर
अटल नगर, रायपुर 492002 (छ.ग.)

–: शुभकामना संदेश :–

शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी, जिला – बालोद (छ.ग.) द्वारा वार्षिक "मांझी" पत्रिका के प्रकाशन की सूचना से अतीव प्रसन्नता हुई। इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए मैं प्राचार्य एवं सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई देती हूँ।

आदिवासी क्षेत्र का यह महाविद्यालय अपने सीमित साधनों में अनेक प्रशंसनीय कार्य करते रहता है। क्षेत्र के विधायक होने के नाते विधायक निधि से सेवा करने का अवसर मुझे मिलते रहता है। अपने घरेलू कार्यो के साथ शिक्षा के क्षेत्र में छात्र–छात्रा का परिश्रम निरंतर रंग ला रहा है। इस हेतु छात्र–छात्राओं एवं अभिभावकों का मै अभिनन्दन करती हूँ।

जिस प्रकार कीचड़ में खिलने पर भी कमल राष्ट्रीय धरोहर बन जाता है उसी प्रकार अभाव में पले–पढ़े क्षेत्र के सभी छात्र–छात्रा परिश्रम और प्रतिभा के बल पर पूरे देश में अपना महत्व स्थापित करेंगें – ऐसी आशा है।

महाविद्यालय के विकास के लिए मैं सदैव कृतसंकल्पित रहती हूँ तथा जब भी आवश्यकता होगी, निरन्तर अपनी सेवा देती रहूंगी। अपने चरित्र और संस्कार को उज्ज्वल रखते हुए छात्र–छात्रा अनन्त ऊँचाइयों को छूने की दिशा में अग्रसर रहें – यही शुभकामना देती हूँ।

जय छत्तीसगढ़ !

पीयूष सोनी
(निज प्रतिनिधि)
महिला एवं बाल विकास विभाग (छ.ग.)

संदेश

मुझे यह जान कर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय द्वारा "मांझी" अंक पत्रिका प्रकाशित की जा रही है। मैं अभारी हूँ, महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. यू. के. मिश्र जी का जिन्होंने कंगला मांझी जी पर विभिन्न शोधपरक लेखों को एकत्र करके "मांझी" शीर्षक से वार्षिक पत्रिका प्रकाशित करने के सराहनीय कार्य का शुभारंभ किया है, आशा है कि यह सिलसिला ऐसे ही चलता रहेगा। मैं स्वयं की ओर से तथा अपने संगठन की ओर से समस्त महाविद्यालय प्रशासन को हार्दिक धन्यवाद देती हूँ।

"मांझी" अंक की सफलता के लिये मेरी हार्दिक शुभ कामनायें।

भवदीय
फुलमत देवी
अध्यक्ष
श्री मांझी अन्तर्राष्ट्रीय समाजवाद
आदिवासी किसान सैनिक संस्था
नई दिल्ली – 110002

–: शुभकामना संदेश :–

आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में स्थित शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी जिला बालोद (छ.ग.) में छात्र–छात्रा की साहित्यिक प्रतिभा को निखारने हेतु "मांझी" पत्रिका का प्रकाशन अत्यन्त सराहनीय तथा प्रशंसनीय कार्य है। इस सकारात्मक कार्य के लिए मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, सम्पादक मण्डल तथा पूरे महाविद्यालय परिवार का अभिनन्दन करता हूँ।

छात्र–छात्रा की प्रतिभा क्षेत्र विशेष पर निर्भर नहीं करती। उन्हें जहाँ भी सृजनात्मक और उन्नतिशील वातावरण मिलता है, वे प्रगति पथ पर आगे बढ़ने लगते हैं। पुस्तकीय ज्ञान से अलग लेखन की कला को समृद्ध करने में पत्रिका सहायक होती है।

कुछ माह पूर्व मुझे जनभागीदारी अध्यक्ष के रुप में सेवा करने का सुअवसर मिला है। मेरा प्रयास है कि सबके साथ मिलकर कुछ ऐसा ठोस कार्य महाविद्यालय के लिए किया जाये, जिससे इस क्षेत्र के दूर–दूर तक के विद्यार्थी समुदाय लाभान्वित हों। क्षेत्र के प्रतिनिधियों से भी मैं आग्रह करना चाहता हूँ, कि आपसी भेद–भाव को भूलकर महाविद्यालय के विकास के लिए वे तत्पर रहे। शिक्षा के समुचित विकास पर क्षेत्र, राज्य और देश का विकास निर्भर करता है। जय हिन्द !

शुभकामनाओं के साथ .....

सुरेश कुमार जैन
अध्यक्ष, जनभागीदारी समिति
शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय
डौण्डी, जिला – बालोद (छ.ग.)

शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी, जिला – बालोद (छ.ग.)

में स्नातक स्तर पर बी.ए. में हिन्दी साहित्य, समाज शास्त्र एवं स्नातकोत्तर स्तर पर एम.ए. में राजनीति विज्ञान, भूगोल के शुभारम्भ हेतु हार्दिक शुभकामना

श्री सुरेश जैन जी
अध्यक्ष, जनभागीदारी समिति
शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय
डौण्डी, जिला – बालोद (छ.ग.)

श्री पीयूष सोनी जी
मंत्री प्रतिनिधि
महिला एवं बाल विकास विभाग
छत्तीसगढ़ शासन

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी, जिला – बालोद (छ.ग.)

"मांझी" पत्रिका प्रकाशन हेतु
हार्दिक शुभकामना

श्री विजय कुमार जायसवाल
जनभागीदारी सदस्य व महाविद्यालयीन सांसद प्रतिनिधि
शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय, डौण्डी जिला – बालोद (छ.ग.)

प्राचार्य की कलम से

जिस प्रकार कृषक समुदाय खेतों में लहलहाती फसल को देखकर और चिकित्सकगण अस्वस्थ जनो को स्वस्थ होते देखकर अति प्रसन्न हो जाते है उसी प्रकार अध्यापक और प्राचार्य अपने शिष्यों को फलते फूलते देखकर खुशियों से भर जाते है। क्रांतिवीर कंगला मांझी की अविस्मरणीय देन को ध्यानस्थ कर आदिवासी क्षेत्र में स्थापित शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी में 01 सितम्बर 2016 से सेवा करने का सुअवसर मिला। महाविद्यालय के विकास की दिशा में छात्र/छात्रा, अभिभावक, स्थानीय नेतृत्व, पत्रकार, महाविद्यालयीन परिवार के सहयोग से अनेक सफलताएं मिली। मांझी की मूर्ति की महाविद्यालय परिसर में स्थापना, वनस्पति गार्डन का निर्माण, रंगमंच का उद्घाटन के साथ–साथ कला संकाय में इतिहास, हिन्दी साहित्य, समाजशास्त्र एवं विज्ञान संकाय में गणित, भौतिक विज्ञान जैसे विषयों के अध्यापन की शासन से स्वीकृति सफलता के ठोस प्रमाण है। इस सत्र से राजनीति विज्ञान एवं भूगोल विषय में एम.ए. के अध्यापन की मिली अनुमति भी अत्यन्त हर्ष का विषय है। महिला एवं बाल विकास मंत्री माननीय श्रीमती अनिला भेड़िया एवं उनके प्रतिनिधि श्री पीयूष सोनी और जनभागीदारी अध्यक्ष श्री सुरेश जैन के सहयोग से छात्र/छात्राओं के बैठने के लिए विधायक निधि से पर्याप्त फर्नीचर की व्यवस्था हो गई है। इसके लिए एवं निरन्तर सहयोग के लिए महाविद्यालय परिवार उन्हे आभार अर्पित करता है।

अभावों में भी परिश्रम के साथ खुशहाली पूर्वक जीना इस क्षेत्र के सभी विद्यार्थी अच्छी तरह जानते हैं। उनकी ऑखों में साकार होते सुनहरे सपनों का अवलोकन कर हम सब कृतार्थ हो जाते है। सभी छात्र समुदाय दिन–प्रतिदिन उज्ज्वल भविष्य की दिशा में गतिमान रहे और अपनी चतुर्दिक प्रतिभा से क्षेत्र और देश का निरन्तर विकास करते रहें – यही हमारी कामना है।

सभी सहयोगी जनों एवं महाविद्यालय परिवार को अनन्त साधुवाद व्यक्त करता हूँ।

जय हिन्द !

सम्पादकीय

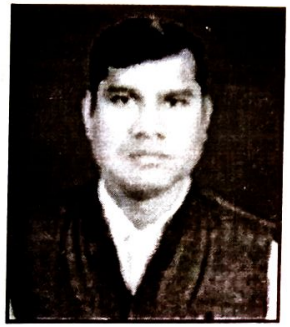

प्रधान सम्पादक, विनोद कुमार कोमा
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र

पत्रिका एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी भावनाओं, विचारो एवं लेखों को रेखांकित करता है। महाविद्यालय से प्रकाशित "माझी" पत्रिका इस दिशा में एक प्रयास है। इस पत्रिका में प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं के विचारो, भावनाओं एवं लेखो को शब्दो में पिरोकर प्रस्तुत किया जा रहा है। यह पत्रिका महाविद्यालयीन परिवार एवं छात्र – छात्राओं को उनके मंजिल तक पहुंचाने में सहायक सिद्ध होगी – ऐसी आशा है ! पत्रिका के प्रकाशन से छात्र–छात्राओं के आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त तो होगा ही साथ ही उन्हें विभिन्न प्रकार के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विचारो से संबंधित विशेष पक्षों की जानकारी भी होगी।

भारतीय शिक्षा पद्धति आरम्भ मे से एक ध्रुवीय रुप मे परिवारोपयोगी, समाजोपयोगी होने के साथ–साथ राष्ट्रोपयोगी बनी रही। मानवतावादी दृष्टिकोण को विकसित करने के साथ ही तद्युगीन आचार्य विद्यार्थियों में "वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना भरने में सफल रहे। आधुनिक वैश्वीकरण के युग मे शिक्षा पद्धति एक ध्रुवीय (आचार्य पर केन्द्रित) नहीं रही। इस वैज्ञानिक युग में आचार्य, विद्यार्थी, अभिभावक, शासन की शिक्षानीति आदि अनेक घटकों के समन्वय से वह बहुध्रुवीय शिक्षा पद्धति बन गई है। आज का विद्यार्थी युवा शक्ति के रुप में जनजागरण एवं राष्ट्र – निर्माण विकास आदि में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहण कर रहा है। युवा वर्ग अपनी ऊर्जा से राष्ट्र की सुप्त जनशक्तियों को जाग्रत कर उनमें कुछ कर पाने का उत्साह और बल भर देने में समर्थ होता है। सच तो यह है कि युवा शक्ति को किसी भी देश अथवा जाति की शक्ति का स्त्रोत माना जाता है।

राष्ट्र के इस बहुमूल्य धन युवा शक्ति को कर्तव्य पालन, तन–मन–मस्तिष्क की स्वस्थता और अच्छे संस्कारो का पाठ पढ़ाने के लिए अभिभावकों के साथ ही अध्यापको की सक्रियता अत्यावश्यक है। अध्यापक, डॉक्टर, समाज सेवक बनकर युवक जन शिक्षा का प्रचार – प्रसार, रोगियों, दुर्बलों की सेवा, समाज में फैली कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष और सुनीति–रीतियों का प्रचार कर देश को उन्नति के शिखर तक पहुँचा सकते है। इन कार्यो के लिए युवाओं को छात्र जीवन में ही प्रेरित करना होगा। जिस प्रकार आचार्य चाणक्य ने युवा शक्ति की जागृति का लाभ उठाकर दुराचारी नंदवंश का नाश किया था तथा महान सिकन्दर को मुंह तोड़ जवाब देकर अपने देश लौट जाने के लिए बाध्य कर दिया था, उसी प्रकार इस आधुनिक चाणक्यों को भी सजग रहना आवश्यक है।

छात्र/छात्रा की रुचि के अनुसार पाठ पढ़ाकर उनमें आत्म विश्वास पैदाकर उन्हें आत्म निर्भर बनाकर हम सब धरती माता के ऋण से मुक्त होने का प्रयास कर सकते है। महाविद्यालयीन पत्रिका का प्रकाशन छात्रों की प्रतिभा को निखारने तथा उनमें साहित्यिक, सामाजिक बोध जगाने की दिशा में एक प्रयास है। क्रांतिवीर कंगला मांझी के नाम पर संचालित यह महाविद्यालय अभावों के बीच पलने – बढ़ने वाले आदिवासी बाहुल्य सीधे सरल व्यक्तित्व सम्पन्न छात्र–छात्राओं को राष्ट्रीय विकास की धारा से जोड़ने की दिशा में कृत संकल्पित है।

आशा है कि चाणक्य और चन्द्रगुप्त के समान भारत के अंचल–अंचल में गुरु और शिष्य की पावन परम्परा फलती फूलती रहेगी और प्रकाशमान सूर्य की भांति अपनी स्वर्णिम किरण जन–जन के लिए बिखेरती रहेगी।

पत्रिका में गणमान्य जनों द्वारा शुभकामना संदेश देकर हमें उत्साहित एवं प्रोत्साहित किया गया है। महाविद्यालय परिवार उन सबके प्रति आभार व्यक्त करता है। महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ.यू.के.मिश्र के प्रति संपादक मंडल कृतज्ञ है। प्राचार्य की सक्रियता और मार्गदर्शन के कारण इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया है। साथ ही आप सबके सकारात्मक सुझावों की अपेक्षा निरंतर बनी रहेगी।

–: महाविद्यालय परिवार :–

क्र.	विषय	स्वीकृत	कार्यरत अधिकारी / कर्मचारी का नाम
1	प्राध्यापक हिन्दी	01	प्रो. (डॉ.) यू.के. मिश्र (प्राध्यापक एवं प्रभारी प्राचार्य)
2	सहायक प्राध्यापक भूगोल	01	श्री एन.के.साकरे
3	सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र	01	श्री व्ही.के. कोमा
4	सहायक प्राध्यापक अंग्रेजी	01	श्री रमेशर प्रसाद निषाद
5	सहायक प्राध्यापक प्राणी शास्त्र	01	श्रीमती राधेश्वरी देशमुख
6	सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान	01	श्री योगेश्वर साहू
7	सहायक प्राध्यापक इतिहास	01	श्री दीपक मेश्राम
8	सहायक ग्रेड – 01	01	श्री एस. एल. ध्रुव
9	प्रयोगशाला तकनीशियन	04	श्री मैथ्यू जैकब श्री के. एस. साहू
10	प्रयोगशाला परिचारक	03	श्री राहुल देव कुमार देवॉगन श्री भूपेन्द्र कुमार गायकवाड़ श्रीमती पूर्णिमा रावटे
11	भृत्य	02	श्री बंसत कुमार भुआर्य श्री जितेन्द्र कुमार ध्रुव

–: अतिथि महाविद्यालय परिवार सत्र 2018–19 एवं 2019–20 :–

क्र.	विषय	स्वीकृत पद	कार्यरत अधिकारी / कर्मचारी का नाम
1.	अतिथि प्राध्यापक वनस्पति शास्त्र	01	डॉ. श्रीमती चारुलता फिलिप
2.	अतिथि प्राध्यापक सूक्ष्म जीवविज्ञान	01	सुश्री भूमिका साहू
3.	अतिथि प्राध्यापक भौतिक शास्त्र	01	सुश्री गीता देवॉगन
4.	अतिथि प्राध्यापक गणित	01	सुश्री पदमावती साहू
5.	अतिथि प्राध्यापक रसायन शास्त्र	01	श्री पाल चन्द सिन्हा
6.	अतिथि प्राध्यापक वाणिज्य	01	श्री विजय कुमार कोरटिया
7.	अतिथि प्राध्यापक वाणिज्य	01	सुश्री रेणुका भोयर (जनभागीदारी)

–: जनभागीदारी समिति के सदस्य सत्र 2019–20 :–

अध्यक्ष	– श्री सुरेश जैन
उपाध्यक्ष	– एस.डी.एम. डौण्डी लोहारा (कलेक्टर द्वारा अनुमोदित)
सचिव	– प्राचार्य, शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय, डौण्डी
स्थानीय संगठन से सदस्य	– श्री कैलाश राजपूत
स्थानीय उद्योग से सदस्य	– श्री अशोक सिवहरे
स्थानीय संस्था से सदस्य	– श्री व्ही. के. कोमा (सहायक प्राध्यापक)
दानदाता सदस्य	– श्री अश्वनी जायसवाल
कृषक सदस्य	– श्री दुल्लू राम ठाकुर
पोषक शाला प्रतिनिधि	– प्राचार्य, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक शाला, डौण्डी
अभिभावक सदस्य(अ.ज.जा.)	– श्री शम्भू सिंह भैसवारें (औराटोला)
अभिभावक सदस्य (अ.जा.)	– श्री मदन लाल बंजारे (डौण्डी)
अभिभावक सदस्य (अ.पि.व.)	– श्रीमती दीप्ति सोनी
भूतपूर्व छात्र सदस्य	– श्री सौरभ यादव कु. भावना जैन

एन.एस.एस. परिवार महाविद्यालय डौण्डी

संरक्षक / सम्पोषक

प्रो. (डॉ) उमाकान्त मिश्र
प्राध्यापक एवं प्रभारी प्राचार्य

–: मांझी पत्रिका के सम्पादक मण्डल :–

प्रधान सम्पादक
श्री विनोद कुमार कोमा
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र

सम्पादक मण्डल

श्रीमती राधेश्वरी देशमुख
(सहा. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, जन्तुविज्ञान)

श्री दीपक कुमार मेश्राम
(सहा. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, इतिहास

–: महाविद्यालय के गौरव :–

1) श्री रोहित कुमार – बी.एस.एफ.
2) श्री डोमेन्द्र कुमार – बी.एस.एफ.
3) गुरुमेन्द्र कुमार भुआर्य – सी.आई.एस.एफ

छात्रसंघ पदाधिकारी 2018–2019

अध्यक्ष
(कु. धनेश्वरी)

उपाध्यक्ष
(कु. प्रीति)

सचिव
(अंकित सिन्हा)

सहसचिव
(कु. देविका)

कक्षा प्रतिनिधि

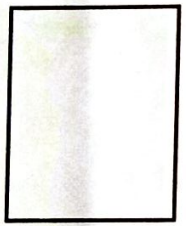

बी.ए. प्रथम वर्ष
(कु. मोनिका साहू)

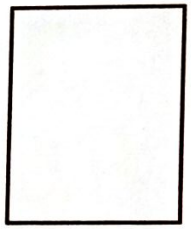

बी.ए. प्रथम वर्ष
(कु. कामिनी)

बी.ए. द्वितीय वर्ष
(कु. भूपेश्वरी)

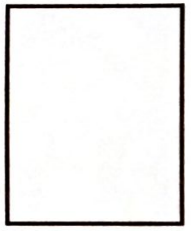

बी.ए. तृतीय वर्ष
(कु. कान्ता)

बी.एस–सी प्रथम वर्ष
(कु. ओमिन)

बी.एस–सी द्वितीय वर्ष
(लिखन राम)

बी.एस–सी तृतीय वर्ष
(प्रभा साहू)

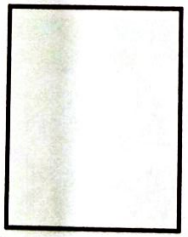

बी.काम. प्रथम वर्ष
(कु. विमला)

बी.काम. द्वितीय वर्ष
(कु. अनुसूईया)

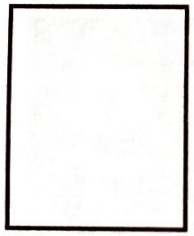

बी.काम. तृतीय वर्ष
(नितिन कुमार गुप्ता)

छात्रसंघ पदाधिकारी 2019–2020

अध्यक्ष
(कु. हेमा धनकर)

उपाध्यक्ष
(कु. ओमिन साहू)

सचिव
(कु. गुणिका श्रीवास)

सहसचिव
(संदीप आंचला)

कक्षा प्रतिनिधि

बी.ए. प्रथम वर्ष
(कु. नीलिमा)

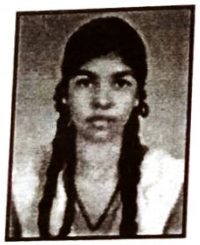

बी.ए. प्रथम वर्ष
(कु. लालेश्वरी)

बी.ए. द्वितीय वर्ष
(कु. मीना)

बी.ए. तृतीय वर्ष
(भुनेश्वर)

बी.एस–सी प्रथम वर्ष
(कु. आरती साहू)

बी.एस–सी द्वितीय वर्ष
(कु. छबिला)

बी.एस–सी तृतीय वर्ष
(लिखन राम)

बी.काम. प्रथम वर्ष
(कु. चंचल)

बी.काम. द्वितीय वर्ष
(कु. संध्या)

बी.काम. तृतीय वर्ष
(कु. अनुसूईया)

महाविद्यालय का परिचय

जिला मुख्यालय से 35 किलोमीटर दूरी पर स्थित स्वतन्त्रता सेनानी क्रांतिवीर कगला मांझी के नाम पर संचालित यह महाविद्यालय प्राकृतिक सुषमा से युक्त डोण्डी नगर से 02 किलोमीटर पूर्व ग्राम पंचायत कामता में स्थापित है। 08 जुलाई 2006 मे स्थापित आदिवासी क्षेत्र का यह एक एक मात्र महाविद्यालय 13 अगस्त 2008 से अपने नये भवन दल्लीराजहरा–भानुप्रतापपुर मार्ग पर 3.50 एकड़ क्षेत्रफल मे संचालित है। आदिवासी छात्र–छात्राओं से भरा–पूरा यह महाविद्यालय स्नातक स्तर पर कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों में हेमचन्द यादव विश्वविद्यालय दुर्ग (छ.ग.) से स्थायी रुप से सम्बद्ध है तथा अनेक सकारात्मक कारणों से क्षेत्र में आकर्षण का केन्द्र बना हैं।

महाविद्यालय में संचालित संकाय एवं पाठ्यक्रम प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष

स्नातक (कला संकाय) :– हिन्दी भाषा, अंग्रेजी भाषा, पर्यावरण
राजनीति विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र — कुल स्थान – 150 सीट
इतिहास — कुल स्थान – 45 सीट
हिन्दी साहित्य, समाज शास्त्र — कुल स्थान – 40 सीट

स्नातक (विज्ञान संकाय) :– हिन्दी भाषा, अंग्रेजी भाषा, पर्यावरण
रसायन, वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान — कुल स्थान – 100 सीट
सूक्ष्म जीवविज्ञान — कुल स्थान – 30 सीट

(गणित संकाय) :– हिन्दी भाषा, अंग्रेजी भाषा, पर्यावरण
रसायन, भौतिकी, गणित — कुल स्थान – 30 सीट

स्नातक (वाणिज्य संकाय):– हिन्दी भाषा, अंग्रेजी भाषा, पर्यावरण
सभी अनिवार्य विषय — कुल स्थान – 70 सीट

स्नातकोत्तर (कला संकाय):–राजनीति विज्ञान एवं भूगोल — कुल स्थान – 20 सीट

पी.जी.डी.सी.ए. (एक वर्षीय) :– — कुल स्थान – 40 सीट

–: विशेष सुविधाए :–

ग्रंथालय एवं वाचनालय :– महाविद्यालय में स्नातक कला, विज्ञान एवं वाणिज्य के तीनो वर्षो के लिए **पर्याप्त पुस्तकें** उपलब्ध हैं। वर्तमान में लगभग 7,000 (सात हजार) पुस्तकों के अतिरिक्त अनुसूचित जाति, **अनुसूचित जनजाति** एवं बी.पी.एल. छात्र–छात्रा के लिए भी बुक–बैंक की व्यवस्था हैं। इसके अतिरिक्त **ग्रंथालय में** साहित्यिक एवं प्रतियोगिता की तैयारी हेतु कम्प्यूटर, पी.एम.टी., पी.ई.टी., सामान्य ज्ञान, **प्रतियोगिता** दर्पण, महापुरुषो के जीवन पर आधारित पुस्तकें, रोजगार समाचार, रोजगार नियोजन, दैनिक **समाचार–पत्र** (नवभारत, दैनिक भास्कर, नई दुनिया, पत्रिका, The Hitavada (अंग्रेजी)) आदि उपलब्ध है। **छात्र–छात्राओं** के अध्ययन के लिए महात्मा गांधी वाचनालय की स्थापना की गई हैं।

प्रयोगशाला :– महाविद्यालय मे रसायन शास्त्र, वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, सूक्ष्म जीव विज्ञान, भौतिक **विज्ञान एवं भूगोल** विषयों में अलग–अलग प्रयोगशाला की व्यवस्था है।यहाँ छात्र–छात्राऐ संबंधित प्राध्यापक, **प्रयोगशाला** तकनीशियन एवं प्रयोगशाला परिचारक की देखरेख में प्रायोगिक कार्य सम्पन्न करते है।

कम्प्यूटर कक्षः– महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं को कम्प्यूटर में दक्षता प्रदान करने हेतु कम्प्यूटर कक्ष मे **दस कम्प्यूटर** सेट की व्यवस्था है। सहायक प्राध्यापक श्री दीपक कुमार मेश्राम, प्रभारी एवं प्रयोगशाला **परिचारक श्री** राहुल देवॉगन इसके सहायक हैं। वर्तमान मे उच्च शिक्षा विभाग द्वारा महाविद्यालय मे पी.जी. **डी.सी.ए. की** कक्षाए की स्वीकृति मिल चुकी है।

राष्ट्रीय सेवा योजना:– महाविद्यालय में जुलाई 2013 से राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई संचालित है। यहां पंजीकृत छात्र–छात्राओं के लिए 100 की संख्या निर्धारित है। कार्यक्रम अधिकारी श्री विनोद कुमार कोमा के मार्गदर्शन में "बी" प्रमाण पत्र एवं "सी" प्रमाण पत्र के छात्र–छात्रा पंजीकृत होते हैं। यहाँ के छात्र–छात्रा राज्य स्तरीय एवं राष्ट्र स्तरीय शिविर में भाग ले चुके हैं। इकाई द्वार गोद ग्राम का चयन, दैनिक गतिविधि एवं विशेष सप्त दिवसीय शिविर संचालित होते हैं।

क्रीड़ा (खेलकूद) विभाग :– महाविद्यालय में संचालित क्रीड़ा विभाग के प्रभारी श्री एन.के.साकरे हैं। शतरंज, व्हालीवॉल, कैरम, क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन, चायनीस चेकर आदि के साथ–साथ गोला, तवा, भाला, खो–खो, कबड्डी आदि के लिए अभ्यास एवं प्रतियोगिता कराया जाता हैं।

रेडक्रास (रेडरिबन क्लब) :– महाविद्यालय में रेड रिबन क्लब का प्रारम्भ किया गया है जिसके प्रभारी श्री विनोद कुमार कोमा है। जिन छात्र–छात्रा को एन.एस.एस. में स्थान नहीं मिल पाता वे इसमें पंजीकृत होकर स्वास्थ्य संबंधी जागरुकता लाने का प्रयास करते हैं।

छात्र संघ अध्यक्ष का विचार

कु. हेमा धनकर, बी.एस–सी. अंतिम वर्ष

शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी जिला – बालोद (छ.ग.) में सत्र 2019–2020 में प्रावीण्य सूची के आधार पर मुझे छात्रसंघ अध्यक्ष के रुप में सेवा का अवसर मिला। सर्वप्रथम मैं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. यू. के. मिश्र सर जी को धन्यवाद करना चाहती हूँ जिनके उच्च विचार से यह "मांझी" पत्रिका द्वितीय बार प्रकाशित हुई है तथा समस्त शिक्षको के सहयोग से ही यह कार्य सफल हुआ है। मैं महाविद्यालय के समस्त छात्रसंघ पदाधिकारी व कक्षा प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग से हमारे महाविद्यालय के विभिन्न छोटी–छोटी समस्याओं के समाधान में मुझे सहायता प्राप्त किए।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. मिश्र सर जी के प्रयासों से समय–समय पर विभिन्न विभागो जैसे – स्वास्थ्य विभाग, रेडक्रास आदि विभागो द्वारा समस्त छात्र–छात्राओं के सर्वागींण विकास हेतु अथक प्रयास रहता है जिससे विद्यार्थियो को शिक्षा के अतिरिक्त नैतिक, व्यवहारिक ज्ञान भी मिलता है।

इस महाविद्यालय में पेयजल की समस्या बहुत गंभीर थी जिसका निदान हुआ, प्राचार्य महोदय जी के प्रयासो से यहॉ सी.सी.टी.वी. कैमरा आदि की व्यवस्था की गई। हमारे महाविद्यालय में इस वर्ष पुस्तकालय में वाचनालय की व्यवस्था की गई, जिसमें छात्र–छात्राएं अपना समय देकर विभिन्न पुस्तक , उपन्यास, समाचार पत्र का अध्ययन करते है।

आने वाले वर्ष तक हमारे महाविद्यालय में पी.जी.डी.सी.ए. की कक्षाऐं प्रारम्भ होने वाली है यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है । मैं इस महाविद्यालय में तृतीय वर्ष की छात्रा हूँ मुझे मेरा यह तीन वर्ष कैसे बीता, पता ही नही चला। मैं बड़ी सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे इस महाविद्यालय में पढ़ने का अवसर मिला और मुझे खुशी हुई कि मुझे पत्रिका लिखने का विशेष अवसर मिला। इन तीन वर्षों में मुझे हमारे महाविद्यालय में बहुत विकास दिखा, यहॉ समस्त गुरुजनों का सम्पूर्ण सहयोग मिला।

हमारे महाविद्यालय में एक राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई है जिसके कार्यक्रम अधिकारी श्री विनोद कुमार कोमा सर जी है । मैं इस राष्ट्रीय सेवा योजना परिवार की सदस्य हूँ। महाविद्यालय के प्रत्येक कार्य में श्री कोमा सर जी का सम्पूर्ण सहयोग रहता है तथा रेडक्रांस की भी संस्था है।

मनोरंजन का मुख्य साधन खेल है समय–समय पर विभिन्न अवसरो पर खेल का आयोजन भी होता है श्री एन.के.साकरे सर जी के नेतृत्व में सफलता पूर्वक सम्पादित होता है।

इस प्रकार हमारा महाविद्यालय परिवार बहुत ही प्यारा परिवार है इस परिवार के सभी अभिभावक अर्थात गुरुजनों का धन्यवाद करती हूँ महाविद्यालय में ऐसा माहौल देने के लिए।

छात्र संघ सचिव का विचार

कु. गुणिका श्रीवास, बी.एस–सी. अंतिम वर्ष

आज जिस प्रकार एक ग्राम पंचायत से लेकर जिले, प्रदेश व देश को सफल संचालन के लिए मुख्यतया प्रतिनिधियों की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार इस महाविद्यालय के प्रतिनिधि के तौर पर मुझे छात्रसंघ सचिव पद पर चयन किया गया इसके लिए मैं सभी भाई–बहनो का धन्यवाद करती हूँ।

मैं आशा ही नही वरण विश्वास दिलाती हूँ कि आप सभी के विश्वास पर खरा उतरुंगी और सभी के दिशा निर्देशन व मार्गदर्शन से हमारे महाविद्यालय को विश्वविद्यालय के पृष्ठभूमि पर अग्रणीय रखने का अवसर मिलता रहेगा।

इस महाविद्यालय में इस सत्र में कुछ ऐसे कार्य किये गये जिन्हें हम कभी नहीं भुला पायेंगें और ये कार्य ऐसे है जिनमें सभी छात्र–छात्रा बहुत ही अच्छे एवं अनुशासित रहकर कार्य किये है।

हमारे संस्था प्रमुख प्राचार्य प्रो. (डॉ.) यू.के.मिश्र सर और छात्रसंघ प्रमुख प्रो. विनोद कुमार कोमा सर का भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ। जिन्होनें कदम–कदम पर हमारा साथ दिये एव हमेशा महाविद्यालय के विकास के बारे में सोचते है।

इस सत्र महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम व विकास के मार्ग में उठाए गए कदम निम्न है –

1) हमारे महाविद्यालय में इस वर्ष दूसरी बार "मांझी" पत्रिका प्रकाशित होने जा रही है और बड़े सौभाग्य की बात है कि हमे सभी प्राध्यापको के मार्गदर्शन से अपनी बात रखने का मौका मिला।
2) महाविद्यालय में पेयजल की समस्या के निदान हेतु बोर खनन का कार्य किया गया तथा सभी जगह पानी के लिए नल की व्यवस्था कराई गई।
3) छात्र–छात्रा हेतु प्रतियोगी पत्रिका, सामान्य ज्ञान, रोजगार समाचार पत्र एवं कई रोचक पुस्तकों की व्यवस्था पुस्तकालय में किया गया है।
4) महाविद्यालय में "गांधी वाचनालय" की स्थापना 02 अक्टूबर 2019 को गांधी जयंती पर हुई जिससे सभी छात्र–छात्रा लाभ उठा रहे है।
5) महाविद्यालय में विशेष कोचिंग क्लास प्रारम्भ किया गया जिससे प्रतियोगी परीक्षा के लिए छात्र जागरुक हो सके।
6) महाविद्यालय में जल संवर्द्धन के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना के सहयोग से सोखता गड्ढा का निर्माण कराया गया ।

महाविद्यालय के छात्र–छात्रा द्वारा हमे दिये गये अवसर पर हमने पूरे तन मन से महाविद्यालय की विकास में सहयोग किया। हमने तो बस शुरुवात की है अभी और विकास के लिए बहुत कुछ करना बाकी है। मुझे विश्वास है कि इस महाविद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी महाविद्यालय के नाम को एक नये मुकाम तक पहुचांयेंगें। इन्ही आशाओं के साथ ——

"No Religion is greater than the religion of humanity and that no service is greater than the service of the motherland."

सत्र 2019–20 में राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियों की जानकारी

श्री व्ही. के. कोमा. एन.एस.एस. प्रभारी

शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई सत्र 2013–14 से नियमित रुप से संचालित है। राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़ने वाले स्वयं सेवकों में न केवल समाज के प्रति जागरुकता ला रहे है। बल्कि उनके व्यक्तित्व का विकास भी हो रहा है। आज स्वयं सेवक में नेतृत्व क्षमता का विकास हो रहा है। महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई में अब तक 132 स्वयं सेवको को "बी" प्रमाण पत्र व 13 स्वयं सेवको को "सी" प्रमाण पत्र प्राप्त हो चुका है। सत्र 2019–20 में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई में 43 छात्र एवं 70 छात्रा कुल 113 स्वयं सेवक पंजीकृत है, जिसमें 31 स्वयं सेवक "बी" प्रमाण पत्र एवं 05 स्वयं सेवक "सी" प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए पंजीकृत हुए हैं।

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा सत्र 2019–20 में संचालित विभिन्न गतिविधियों की जानकारी इस प्रकार हैं –

1) योग दिवस :– शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी में 21 जून 2019 को चौथा अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। योग दिवस को संबोधित करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. यू.के. मिश्र ने कहा कि योग हमारे दैनिक जीवन का अनिवार्य हिस्सा है। अगर हमें स्वस्थ रहना है, तो अपने क्रियाकलापों में योग को अपनाना होगा। योग दिवस के अवसर पर कुछ महत्वपूर्ण योगाभ्यास भी करवाया गया, जिसमें अनुलोम–विलोम, कपालभाती, ताड़ासान, ब्रजासन, सुर्यासन, भ्रामरी, मयूरासन, वृक्षासन आदि। इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त स्टाफ एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित रहें।

2) जल संरक्षण अभियान :– शासन के निर्देशानुसार दिनॉक 22/07/2019 को महाविद्यालय में जल संरक्षण अभियान के तहत व्याख्यान एवं रंगोली प्रतियागिता, वाद विवाद का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य एवं प्राध्यापकों द्वारा वर्तमान में जल संरक्षण के महत्व पर अपने अपने विचार रखें। छात्र–छात्राओं द्वारा वाद विवाद प्रतियोगिता एवं रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और 25 जुलाई 2019 को गोद ग्राम कामता में जल संरक्षण पर रैली का आयोजन किया गया।

3) वृक्षारोपण :– दिनॉक 23 जुलाई 2019 को हरियर छ.ग. योजना के तहत महाविद्यालय परिसर में 105 फलदार, छायादार एवं औषधी पौधों का रोपण किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम अधिकारी श्री व्ही.के.कोमा ने कहा कि वृक्षारोपण कार्यक्रम को कानूनी अनिवार्यता करनी चाहिए, जिसके माध्यम से हर व्यक्ति एक पौधा लगाये व उसकी देखरेख भी करें। इससे न केवल हमारा पर्यावरण संतुलित होगा, बल्कि जल का स्तर भी बढ़ेगा। इस अवसर पर महाविद्यालय के अधिकारी/कर्मचारी राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवक एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित होकर वृक्षारोपण कार्यक्रम को सफल बनाए।

4) शिक्षक दिवस :– महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं द्वारा शिक्षकों को सम्मानित एवं उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए 05 सितम्बर को महाविद्यालय में शिक्षक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर छात्र–छात्राओं द्वारा समस्त शिक्षकों को गुलाल लगाकर तथा श्रीफल एवं कलम (पेन) देकर सम्मानित किया गया। प्राचार्य ने कहा कि वर्षो पुरानी परम्परा को आप लोग जीवंत रखकर आज हमें सम्मानित कर रहे है आप सभी को सुभाशीर्वाद।

5) पोषण आहार अभियान :– कुपोषण को दूर करने तथा महिलाओं का शिशुओं को स्वस्थ बनाये रखने के उद्देश्य से महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा 18 सितम्बर 2019 को महाविद्यालय में एक दिवसीय पोषण आहार अभियान पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। परियोजना अधिकारी दीपा शाह ने इस अवसर पर छात्र–छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि कुपोषण वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या है। आज हमें मिलकर कुपोषण को दूर भगाना है और जरुरी है गर्भवती माताओं एवं बच्चों को संतुलित आहार दें। आगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा महाविद्यालयो में पोषण युक्त विभिन्न प्रकार के व्यजंनों का स्टॉल लगाया गया। शिक्षकों के साथ–साथ छात्र–छात्राओं ने भी व्यंजनों का लुप्त उठाया।

6) स्वच्छता पखवाड़ा :– महाविद्यालय में दिनॉक 01 अगस्त 2019 से 15 अगस्त 2019 तक स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया गया एवं 02 अगस्त को प्राचार्य डॉ. यू.के.मिश्र द्वारा समस्त स्टाफ एवं छात्र–छात्राओं को स्वच्छता का शपथ दिलाया गया। 03 अगस्त को पूरे महाविद्यालय परिसर की साफ सफाई राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों द्वारा किया गया। 08 अगस्त को राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवको ने गोदग्राम कामता में जाकर डोर–टू–डोर कार्यक्रम के तहत स्वच्छता की जानकारी दी गई। साथ ही शौचालय का नियमित उपयोग करने की सलाह भी ग्रामवासियों को दिये। इसके बाद शासकीय भवनो, सड़को, गलियो एवं नालियों की साफ सफाई किये। 13 अगस्त को दो सार्वजनिक स्थलो स्वास्थ्य केन्द्र डौण्डी एवं महाविद्यालय परिसर की साफ–सफाई किये। 14 अगस्त को महाविद्यालय से डौण्डी नगर तक स्वच्छता रैली का आयोजन किया गया। रैली में नारे के माध्यम से नगर वासियों को जागरुक करने का प्रयास किया गया और 15 अगस्त स्वच्छता पखवाड़ा का समापन समीक्षा बैठक के साथ किया गया।

7) इंड़िया मूवमेन्ट कार्यक्रम :– दिनॉक 29 अगस्त 2019 को महाविद्यालय में फिर इंडिया मूवमेन्ट कार्यक्रम के तहत सभी अधिकारी/कर्मचारी एवं छात्र–छात्राओं ने माननीय प्रधानमंत्री जी का अभिभाषण सुना। इस कार्यक्रम के महत्व को बताते हुए प्रधानमंत्री जी ने कहा कि फिटनेश स्वस्थ्य एवं समृद्धि जीवन की एक जरुरत है। आज हमे स्वस्थ, नीरोग एवं दीर्घायु जीवन जीना है तो फिट रहना होगा। आगे उन्होंने कहा कि इस अभियान को पूरा देशवासी अपनाएं एवं इसे चर्चा का विषय बनाए।

8) स्थापना दिवस :–महाविद्यालय में 24 सितम्बर को राष्ट्रीय सेवा योजना परिवार के द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना का स्थापना दिवस मनाया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना के महत्व को बताते हुए कहा कि विद्यार्थी जीवन में इसका बड़ा महत्व हैं। इसके माध्यम से हम सामाजिक कार्यो से जुड़ने के साथ ही अपने व्यक्तित्व का निर्माण भी करते है। उपस्थित शिक्षकों एवं स्वयं सेवकों द्वारा स्वामी विवेकानन्द के विचारों पर अपने–अपने व्यक्तव्य रखें। इस अवसर पर निबंध, वाद–विवाद, तात्कालिक भाषण एवं रंगोली प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

9) गांधी जयंती :– 02 अक्टूबर को महाविद्यालय में गांधी जयन्ती मनाया गया। सबसे पहले महात्मा गांधी को श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया। इसके बाद सभी स्टाफ एवं छात्र–छात्राओं द्वारा महाविद्यालय परिसर की साफ–सफाई किया गया। वर्तमान समय में गांधी जी के विचारों की प्रांसगिकता पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

10) एक दिवसीय शिविर :– शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा दिनॉक 14 अक्टूबर 2019 को गोद ग्राम कामता में "स्वच्छता के लिए युवा" थीम पर एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में लगभग 80 स्वयं सेवकों ने भाग लिया। स्वयं सेवकों द्वारा ग्राम कामता के गलियो, सड़को, नालियों, पंचायत भवन, आगनबाड़ी केन्द्रो, प्राथमिक शाला एवं हाईस्कूल भवन के आस–पास साफ–सफाई कर स्वच्छता का संदेश ग्राम वासियों को दिये। अंत में स्कूली छात्र–छात्राओं के साथ मिलकर गांव में स्वच्छता जागरुकता रैली का आयोजन किया गया।

11) ग्रीष्म कालीन इंटर्नशिप :–महाविद्यालय में 10 जून से 31 जुलाई 2019 तक स्वच्छ भारत ग्रीष्म कालीन इंटर्नशिप के द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवको ने गोद ग्राम कामता में जाकर साफ–सफाई कर स्वच्छता का संदेश दिये।

12) विधिक साक्षरता शिविर :–15 अक्टूबर 2019 को महाविद्यालय में एक दिवसीय विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में कानून की जानकारी देने के लिए जिला – न्यायालय बालोद से श्री अनिल योगी अधिवक्ता एवं श्री पुष्प देव साहू जी अधिवक्ता उपस्थित रहें। छात्र–छात्राओं को संबोधित करते हुए योगी जी ने "पास्को" एवं "साइबर क्राइम" के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दिये। श्री पुष्प देव साहू जी ने संविधान की विभिन्न धाराओं एवं महिला एवं बाल उत्पीड़न पर अपने विचार व्यक्त किये।

13) राष्ट्रीय एकता दिवस :– महाविद्यालय में 31 अक्टूबर 2019 को सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस को राष्ट्रीय एकता दिवस के रुप में मनाया गया। सर्वप्रथम प्राचार्य डॉ. यू. के. मिश्र द्वारा समस्त स्टॉफ एवं छात्र–छात्राओं को राष्ट्रीय एकता का शपथ दिलाया गया। इस अवसर पर व्याख्यान एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

14) बाल दिवस :–राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयं सेवकों द्वारा गोद ग्राम कामता के प्राथमिक स्कूल में जाकर 14 नवम्बर को बाल दिवस मनाया गया। सबसे पहले स्वयं सेवकों ने नेहरु जी की छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किये। इसके बाद सभी बच्चों को गुलाल लगाकर स्वागत किया गया। तत्पश्चात् बच्चों के विकास के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता एवं खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विजेता बच्चों को कलम एवं कापी देकर सम्मानित किया गया।

15) वाटर हार्वेस्टिंग का निर्माण :–महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों के सहयोग तथा प्राचार्य डॉ. यू.के.मिश्र के मार्गदर्शन एवं कार्यक्रम अधिकारी श्री व्ही.के.कोमा के निर्देशन में महाविद्यालय में 02 वाटर हार्वेस्टिंग का निर्माण कार्य किया गया इसका उद्देश्य जल संरक्षण कर जल के स्तर को बनाए रखना हैं।

16) विश्व एड्स दिवस :–शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई, रेड रिबन क्लब एवं युथ रेडक्रास के संयुक्त तत्वाधान में 01 दिसम्बर को विश्व एड्स दिवस मनाया गया। विश्व एड्स दिवस के अवसर पर रेडक्रास प्रभारी श्री व्ही.के.कोमा ने कहा कि एड्स से बचाव का सबसे अच्छा तरीका जागरुकता है। इसके बाद मानव श्रृखंला बनाकर छात्र–छात्राओं ने एक जुटता का संदेश दिये।

17) मानव अधिकार दिवस :–महाविद्यालय में 10 दिसम्बर 2019 को मानव अधिकार दिवस मनाया गया। प्रो. योगेश्वर साहू ने मानव अधिकार के बारे में छात्र–छात्राओं को विस्तारपूर्वक जानकारी दिये इसके बाद महाविद्यालय छात्र–छात्राएं मीना, सुनिता, नीलकमल, कामिनी, ईशु मानकर आदि ने भी अपने–अपने विचार रखे।

18) उन्मुखीकरण कार्यक्रम :–रेडक्रास के तत्वधान में 14 दिसम्बर 2019 को महाविद्यालय में शहीद अस्पताल दल्ली राजहरा के डॉ. साईबाल जेना एवं डॉ. अमृत रंजन बसु द्वारा मानसिक तनाव से कैसे बचे एवं स्वस्थ जीवन कैसे जीये इस पर व्याख्यान दिया गया। कार्यक्रम के बीच–बीच में महाविद्यालय के छात्र–छात्राआं द्वारा डॉक्टरों से स्वास्थ्य से संबंधित प्रश्न पूछे गये जिनका तत्काल निवारण डाक्टरों द्वारा किया गया। साथ ही डाक्टरों ने पूरे महाविद्यालय परिवार से निवेदन किया कि अगर आपके आसपास कोई मानसिक रोगी मिले तो उसे तत्काल शहीद अस्पताल में लाये। ताकि समय रहते इलाज किया जा सके।

19) राष्ट्रीय युवा दिवस :–महाविद्यालय में 12 जनवरी 2020 को प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी स्वामी विवेकानन्द जी के जन्म दिवस को युवा दिवस के रुप में मनाया गया। प्राचार्य डॉ. यू.के.मिश्र ने कहा कि हम आज स्वामी विवेकानन्द जी की विचारों को आत्मसात करने की जरुरत है। इस अवसर पर महाविद्यालय में निबंध प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता एवं वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विजेताओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

20) राष्ट्रीय मतदाता दिवस :–25 जनवरी 2020 को महाविद्यालय में राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर प्रो. एन.के.साकरे ने महाविद्यालय स्टाफ एवं छात्र–छात्राओं को मतदाता दिवस का शपथ दिलाये। सभी ने संकल्प लिया कि हम सभी निर्भीक होकर, शांतिपूर्ण मतदान में भाग लेकर एक अच्छे मतदाता होने का परिचय देंगें।

21) सात दिवसीय शिविर :– शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का सात दिवसीय विशेष शिविर ग्राम –खैरवाही में दिनॉक 22 नवम्बर 2019 से 28 नवम्बर 2019 तक "नरवा, गरुवा, घुरुवा एवं बारी" थीम पर आयोजित हुआ है। इस शिविर में लगभग 50 स्वयं सेवकों ने भाग लिया। अपने थीम को पूरा करने के लिए स्वयं सेवकों ने प्रतिदिन, प्रभातफेरी, परियोजना कार्य, बौद्धिक परिचर्चा, जनसम्पर्क, रैली एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कर ग्रामवासियों को जागरुक किये। रेडक्रास के सहयोग से शिविर में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें शिविरार्थियों एवं ग्राम वासियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

हमारा पर्यावरण

प्रो. एन.के.साकरे, सहायक प्राध्यापक भूगोल

सूर्य हमारे सौरमण्डल का मुखिया है। ग्रह, उपग्रह, पूच्छल तारे, उल्का पिण्ड इनके परिवार के सदस्य है और सब मिलकर सौरमण्डल कहलाता है। ग्रहों की संख्या 8 (आठ) है, जिसमें से पृथ्वी एक है और ये ही जीवन से परिपूर्ण है। अब सवाल उठता है कि केवल पृथ्वी पर जीवन है बाकी ग्रहों में क्यों नहीं है इसका उत्तर है पृथ्वी के अपना वातावरण, जो कि विभिन्न प्रकार प्राकृतिक तत्वों का समूह है, जो कि जीवों के जीवित रहने एवं विकास में मदद करता है। वातावरण के सन्दर्भ में समय के साथ विचारधाराए भिन्न–भिन्न रही है जो कि जीवों एवं पर्यावरण के सम्बन्धों को अलग–अलग देखता है, किन्तु सभी विचारों का विश्लेषण किया जाए तो निष्कर्ष तौर पर कह सकते है कि पर्यावरण एवं मानव के बीच अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है तथा एक दूसरे से अलग नहीं रह सकते है।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में औद्योगीकरण एवं नगरीकरण मानवीय जीवन को उच्च स्तर प्रदान करता है तथा इनकी आवश्यकता की पूर्ति में मदद करता है, परन्तु विश्व के अधिकांश विकसित देश पर्यावरण की अनदेखी कर अधिक लाभ एवं उच्च जीवन की प्रत्याशा में प्राकृतिक संसाधनों का अति दोहन से पर्यावरणीय समस्याए पैदा कर रहे है, जैसे – जल प्रदुषण, वायु प्रदुषण, मृदा प्रदुषण, पृथ्वी की जैवविविधता के लिए खतरा बन गया है, किन्तु हम यह तो नहीं कर सकते कि औद्योगीकरण, खनन एवं नगरीकरण की प्रक्रिया को बंद कर दिया जाए लेकिन पर्यावरण को भी नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। पृथ्वी पर जनसंख्या की तीव्र वृद्धि तथा इनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी आवश्यक है तथा इसका भार हमारे प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ गया है तथा पर्यावरण असंतुलन की समस्या उत्पन्न हो गया है।

हमारी पृथ्वी को सुन्दर एवं खुशहाल बनाना है इसके लिए प्रत्येक मानव को अपना हर सम्भव मदद करनी चाहिए जैसे – कागज प्राकृतिक वनस्पति से बचते है हमें कागज का उपयोग मितव्ययता के साथ करें। इसी तरह धरातल मिट्टी, वन, खनिज एवं ऊर्जा संसाधन तथा जीव जगत का मितव्ययता के साथ उपयोग करें। आज हम स्थलीय एवं जलीय क्षेत्र के संसाधनों का दोहन करने लगे है। दुनिया के ज्यादातर तटीय क्षेत्र अधिक मानव बसाव को आकर्षित करता है। इसका कारण यहा की उपजाऊ मिट्टी, समतल भूमि जलीय संसाधन एवं परिवहन की सुविधाए है पर हम स्थलीय पर्यावरण के साथ जलीय क्षेत्र के पर्यावरण देश में उड़िसा राज्य समुद्र से झिंगा निकालने वाला राज्यों में प्रमुख है। यहॉ की झिंगा मछली की मांग अमेरिका एवं यूरोपीय देशों के अधिक है क्योंकि यहॉ की रेस्तारा एवं होटलों में लोग इसे बहुत पंसद करते है। इसके लिए उड़ीसा के मछुवारे अधिक झिंगा पकड़ने के लिए महीन जाल का प्रयोग करते है जिससे झिंगा के साथ कई अन्य प्रजातिक जीव जाल में फस जाते है और मारे जाते है जिसे वे समुद्र में फेंक देते है। अब तो स्थिति यहॉ तक पहुच गया है कि झिंगा की मात्रा कम हो गया है। इसके लिए हम प्रयास कर सकते है। जिस समय झिंगा का प्रजनन काल होता है इस उस समय इनको न पकड़े ऐसा करने पर समुद्र में इसकी संख्या बढ़ जायेगी तथा हमें झिंगा की पूर्ति बराबर होता रहेगा। पर हमारे प्रवृत्ति उस व्यक्ति की तरह है जो सोने की अण्डा देने वाली मुर्गी को मारकर सभी अंडे एक साथ प्राप्त करना चाहते है जिसका परिणाम यह होगा न रहेगी मुर्गी और नही मिलेगी अण्डा। इसी तरह दुनिया भर में जहॉ जहॉ सोने की अण्डे देने वाली प्राकृतिक संसाधनों का अति दोहन से हमारा पर्यावरण व हमारी पृथ्वी की निर्मल काया दागदार हो रहा है। जिसका परिणाम हमारी पृथ्वी के सभी जीवों एवं वनस्पतियों के साथ मानव जीवन पर प्रभाव देखा जा सकता है। अतः अब समय आ गया है कि पृथ्वी की जैव विविधता को संजोकर रखने के लिए हमारा पर्यावरण का संरक्षण पर ध्यान दिया जाए।

ओ मेरे मांझी

कु. ओमीन साहू, छात्रसंघ उपाध्यक्ष, बी.एस–सी. द्वितीय वर्ष

ओ मेरे मांझी सच्चे सरकार, हो जीवन नैय्या को किया है पार।
सेवा सुमिरन मन में धार, हो जीवन नैय्या को किया है पार।।
ओ मेरे मांझी सच्चे सरकार, हो जीवन नैय्या को किया है पार।

वीर शहीदों का ये जग सारा, मोह–माया का मिटे अंधियारा।
तुम हो दीपक तुम ही उजियार हो, जीवन नैय्या को किया है पार।।
ओ मेरे मांझी सच्चे सरकार, हो जीवन नैय्या को किया है पार।

तुमने गरीबो को दिये है मोती, मन में जगाये ज्ञान की ज्योति।
पिछड़े हुए में भर उत्हास, हो जीवन नैय्या को किया है पार।।
ओ मेरे मांझी सच्चे सरकार, हो जीवन नैय्या को किया है पार।

29 राज्य भारत नाम, कोटि–कोटि तुमको प्रणाम।
सबसे ऊँची मेरी सरकार , हो जीवन नैय्या को किया है पार।
ओ मेरे मांझी सच्चे सरकार, हो जीवन नैय्या को किया है पार।

जैसे आग बुझाए पानी, भूख मिटाऐ तेरे करतानी।
सबका करके तुम श्रृंगार, हो जीवन नैय्या को किया है पार।।
ओ मेरे मांझी सच्चे सरकार, हो जीवन नैय्या को किया है पार।

आए ऑधी या धूप घनेरा, कभी न छोड़े जीवन तेरा।
जीवन बीते जेल में आकर, हो जीवन नैय्या को किया है पार।।
ओ मेरे मांझी सच्चे सरकार, हो जीवन नैय्या को किया है पार।

मांझी की सहारा जिसे मिला है, दलन शोषण से मुक्ति पाए है।
तेरी कहानी अपरम्पार, हो जीवन नैय्या को किया है पार।
ओ मेरे मांझी सच्चे सरकार, हो जीवन नैय्या को किया है पार।

क्रांतिवीर हो तुम, आजादी के स्तंभ हो तुम।
1984 को जीवन हो गया किनार, हो जीवन नैय्या को किया है पार।।
ओ मेरे मांझी सच्चे सरकार, हो जीवन नैय्या को किया है पार।

Importance of English Language

By R.P.Nishad (Asst.Prof. English)

People have communication skill to express thoughts, feeling, emotions and many ideas to relate themselves with other people. Communication needs language and language plays important role in everybody's life for perception.

At present many languages are spoken in the world by the people But we know English language is an international language. Although English is third most spoken language in the world it is used in many fields more than other languages. We can express and share the ideas with the people wherever we go in the world.

When we grow up we imitate the the people round us and learn the language what we listen. At present we are living in the age of modern science where we use mobile, internet mails, laptop and many other advanced technologies and there is no better medium than English to understand and operate them. Unless we know this particular language most of the time it creates confusion to understand these technology properly.

This language has an important role among the students some of them feel it easy and other feel it difficult to understand. How it matters to them but most of the higher education books are printed in English. They should learn this language so that there may not be any difficult related to this language. I think this language is not a part of personality development it's a part of knowing the advancement of technology at present scenario

हिन्दी दिवस में कविता

पाल सिंह सिन्हा, अतिथि व्याख्याता (रसाय

अंग्रेजी में नंबर थोड़े कम आते है,
अंग्रेजी बोलने से भी घबराते है,
पर स्टाइल के लिए पूरी जान लगाते है,
क्योंकि हम हिन्दी बोलने से शर्माते है।

मां की आवाज में भी सुबह का उजाला था,
उस मां को हम मॉम बुलाते है,
क्योंकि हम हिन्दी बोलने से शर्माते है।

देश आगे बढ़ गया पर हिन्दी पीछे रह गई,
इस भाषा से अब हम नजर चुराते है,
क्योंकि हम हिन्दी बोलने से शर्माते है।

माना अंग्रेजी पूरी दुनिया को चलाती है,
पर हिन्दी भी तो हमारी पहचान दुनिया में कराती है,
क्यों न अपनी मातृभाषा को फिर से आँखों में बिठाएं,
आओ हम सब मिलकर हिन्दी दिवस मनाएं।

मानव सेवा का दूसरा नाम– रेडक्रास

श्री विनोद कुमार कोमा, रेडक्रास प्रभारी

हेनरी ड्यूनेट ने 9 फरवरी 1863 में रेडक्रास की स्थापना स्वीटजरलैंड के शहर जिनेवा में पांच लोगों की कमेटी बनाकर की थी। 1863 में जिनेवा में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें 18 देशों ने भाग लिया और यहीं रेडक्रास सोसायटी को कानूनी रुप प्रदान किया गया। सफेद पट्टी पर लाल रंग का क्रास चिन्ह इस संस्था का प्रतीक है। इस संस्था ने पहला ब्लड बैंक 1937 में अमेरिका में खोला। वर्तमान में कुल 210 देश रेडक्रास सोसायटी से जुड़े हुए हैं।

थैलेसीमिया, कैंसर, एनीमिया, एड्स जैसी घातक बिमारियों के रोगियों की यह संस्था मदद करती है। रेडक्रास सोसायटी का प्रमुख सिद्धांत मानवता की सेवा करना, निष्पक्ष रुप से पीड़ितों की मदद करना, तटस्थ रहना एवं स्वतंत्र रहकर समाज की सेवा करना है। इसका प्रमुख उद्देश्य युद्ध के दौरान घायल सैनिको की मदद और चिकित्सा करना है एवं रेडक्रास आंदोलन को अधिक से अधिक देशों में फैलाना है। शांति व युद्ध के समय यह विभिन्न देशों की सरकार के बीच समन्वय का कार्य करना। महामारी, बिमारी जैसी प्राकृतिक आपदा में पीड़ितों की सहायता करना। मानव सेवा के प्रति लगाव व निःस्वार्थ भाव से सेवा करने के कारण ही 1917, 1944 व 1963 में तीन बार नोबेल का शांति पुरस्कार मिल चुका है। यहां तक की इस संस्था के संस्थापक हेनरी ड्यूनेट को भी 1904 में उनके उल्लेखनीय कार्य के लिए नोबेल का शांति पुरस्कार दिया गया है।

भारत में रेडक्रास सोसायटी की स्थापना 1920 में पार्लियामेंट्री एक्ट के तहत किया गया और उसके नौ साल बाद इसकी गतिविधियों को ध्यान में रखकर अंतर्राष्ट्रीय रेडक्रास आंदोलन ने इसे अपनी मान्यता दी। आज भारतीय रेडक्रास सोसायटी की 750 से अधिक शाखाएं पूरे देश में विभिन्न स्थानों पर सुचारु रुप से कार्य कर रही है। भारतीय रेडक्रास सोसायटी के महानिदेशक डॉ. एस. पी. अग्रवाल के अनुसार दुनिया भर में शांति और सौहार्द के प्रतीक के रुप में जानी जाने वाली इस संस्था ने अपने कर्मठ, समर्पित और कर्तव्यनिष्ठ स्वयं सेवकों के माध्यम से अपनी अलग पहचान और छबि बना ली है।

यह संस्था देश में रक्त एकत्र करने और उसको जरुरतमंद लोगों तक समय पर पहुंचाने में जिस प्रकार कार्य कर रही है, किसी से छिपा नही है। यह लोगों को रक्तदान की प्रेरणा देती है, ताकि लोग अधिक से अधिक संख्या में रक्तदान करें। रेडक्रास प्रभारी होने के नाते मैंने भी सत्र 2019–20 में महाविद्यालय में तीन महत्वपूर्ण कार्य स्वयं सेवकों के साथ मिलकर करवाये हैं।

पहला कार्य राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर के दौरान शिविर स्थल पर स्वास्थ्य शिविर का आयोजन करवाया, जिसमे शिविर के 30 छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण एवं लगभग 25 ग्रामवासियों का स्वास्थ्य परीक्षण सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र डौण्डी के डॉक्टरों की टीम के द्वारा किया गया।

इसके बाद रेडक्रास के माध्यम से छात्र–छात्राएं तनाव से केसे बचे इस पर महाविद्यालय में एक दिवसीय काउन्सलिंग का आयोजन किया गया, जिसमें शहीद अस्पताल दल्ली राजहरा के डॉ. साईबाल जेना एवं डॉ. अमृत रंजन बासु द्वारा छात्र–छात्राओं से प्रत्यक्ष संपर्क कर तनाव दूर करने के तरीके बताये एवं स्वस्थ जीवन कैसे जीये इस पर भी अपना विचार रखे।

तीसरा कार्य महाविद्यालय में प्राचार्य डॉ. यू. के. मिश्र के मार्गदर्शन में रेडक्रास के संबंध में जानकारी देने के लिए एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्या वक्ता श्री आर. के. पवार जी जिला नोडल प्रभारी रेडक्रास रहे। पवार जी ने अपने उदबोधन में रेडक्रास के सिद्धांत, महत्व एवं कार्य के दौरान आने वाले चुनौतियों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दिये। उन्होने अपने उदबोधन में कहा कि मानव सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है।

"महिलाओं को आर्थिक सशक्त बनाती केन्द्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाएँ"

कु. प्रीति लारिया, पूर्व उपाध्यक्ष, बी.एस–सी. अंतिम वर्ष

महिलाओं को आर्थिक सशक्त बनाती केन्द्र सरकार की जन कल्याणकारी योजनाऐं मूल रुप से आज "महिला सशक्तिकरण" को मूर्त रुप दे रही है। निःसंदेह सहजता से हर एक दिन भिन्न–भिन्न भूमिकाऐं जीते हुए महिलायें किसी भी समाज की स्तम्भ है। नारियों को उचित व सम्मानजनक स्थिति पर पहुंचाने के लिए "आर्ट ऑफ लिविंग " ने महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम आरम्भ किये जो महिलाओं को आत्म सम्मान, आंतरिक शक्ति और रचनात्मकता को पोषण करने के लिए ठोस आधार प्रदान करते है।

इस तरह कहा गया है कि नारी माता के रुप में प्रथम गुरु है। जब हम एक महिला को साक्षर करते है तो पूरा परिवार को साक्षर करते है। उपयुक्त तथ्य भी महिलाओं को शिक्षित, समाज के प्रति जागरुक, स्वावलंबी एवं सशक्त बनाने का संदेश देती है। इन योजनाओं का प्रमुख कार्य एवं सिद्धांत महिलाओं को समाज में आगे लाना तथा महिला सशक्तिकरण कर सामाजिक बुराईयों का अन्त करना है।

आजादी के बाद सोचा गया था कि सामाजिक कुरीतियां समाप्त हो गई है परन्तु वह उल्टा ही हो गया स्वतंत्रता के बाद कानूनी स्तर पर बदलाव आना चाहिए था, जो कि नही बदला। जिसका मुख्य कारण पुरुष प्रधान समाज की प्रधानता है। इन्हीं समस्याओं को देखते – देखते केन्द्र सरकार द्वारा महिलाओं को आर्थिक रुप से सशक्त बनाने हेतु प्रमुख रूप से तीन योजनाऐं – बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं, सुकन्या समृद्धि योजना मुद्रा योजना लागू की गई है।

केन्द्र सरकार की योजनाएं जैसे –

1) बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओं :–इस योजना का शुभारंभ केन्द्र के वर्तमान सरकार द्वारा लिंग के अनुपात में समानता लाने की दिशा में उठाया गया सराहनीय कदम है। भारत में सन् 2001 की जनगणना में 0–6 वर्ष के बच्चों का लिंग अनुपात का आंकड़ा 1000 लड़को के अनुपात में लड़कियों की संख्या 927 थी, जो कि वर्ष 2011 के जनगणना में घटकर 1000 लड़को में लड़कियो की संख्या 918 हो गई। लिंग अनुपात में असमानता मानव के अस्तित्व के समाप्ति का संकेत है। अतः इस गंभीर समस्या पर काबू पाने के लिए प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 22 जनवरी 2015 को बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओं योजना को हरियाणा के पानीपत जिले में लागु करने की घोषणा की, क्योंकि देश की हरियाणा राज्य में लिंग अनुपात में असमानता का दर सबसे ज्यादा था। इस योजना का प्रमुख उद्देश्य देश में लिंग अनुपात में समानता लाने, बेटियों की सुरक्षा एवं कन्या भ्रूण हत्या को रोकने ताकि लड़कियों का जन्म, पोषण और शिक्षा बिना किसी भेदभाव के हो और समान अधिकारों के साथ देश की सशक्त नागरिक बनें।

2) सुकन्या समृद्धि योजना :–बेटी बचाओं और बेटी बढ़ाओं योजना के अन्तर्गत, सुकन्या समृद्धि योजना एक छोटी बचत योजना है जिससे बालिकाओं को आर्थिक मदद मिलेगी। इस योजना के अन्तर्गत 10 वर्ष की आयु की सभी भारतीय नागरिकता प्राप्त बालिकाऐं देश की किसी भी बैंक अथवा पोस्ट आफिस में खाता खुलवाकर योजना का लाभ ले सकती है। यह खाता 250/– रुपये में खुलेगा और यह राशि खाते में जमा हो जायेगा। इस खाते में एक वित्तीय वर्ष में 250/–रुपये जमा अनिवार्य है तथा 1.50 लाख से अधिक राशि जमा नहीं की जा सकती है। खाते में जमा राशि को 18 वर्ष की आयु में 50 प्रतिशत राशि बढ़ाने हेतु तथा 21 वर्ष की आयु में शादी के लिए पूरी राशि निकाली जा सकती है।

3) मुद्रा योजना :– बेहद छोटे व अपने बूते पर स्वःरोजगार में लगे उद्यमियों को वित्तीय मदद उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री जी ने 8 अप्रेल 2015 को माइक्रो यूनिट् डेवलपमेन्ट रीफरनेस (मुद्रा कोष) की विधिवत् शुरुआत की। केन्द्र सरकार द्वारा प्रारम्भ मुद्रा योजना उन महिलाओं को व्यक्तिगत स्तर पर मदद प्रदान करती है। जो छोटी व्यवसाय जैसे ब्यूटी पार्लर, टेलरिंग इकाई, ट्यूशन सेंटर इत्यादि चलाना चाहती है। इस योजना के तहत तीन प्रकार की ऋण मिलती है – शिशु, किशोर व तरुण।

इस प्रकार उपरोक्त योजनाओं से यह निष्कर्ष सामने निकलकर सामने आता है कि ये तीनो योजनाएं जो केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही है वह निश्चित रुप से महिलाओं को आर्थिक एवं सामाजिक रुप से सशक्त, स्वावलंबी अर्थात आत्मनिर्भर बना रही है।

कोविड – 19 तालाबंदी के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में प्रभाव

आर. देशमुख, सहा. प्राध्या. प्राणीशास्त्र

जीवन के स्तंभ रोटी, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य और शिक्षा, इस कोविड 19 तालाबंदी के दौरान पूरी तरह चरमरा कर रह गया है। आज समूचा विश्व करोना वायरस की चपेट में है, सरकार जीवन के अस्तित्व के लिए संघर्षरत है साथ ही साथ शिक्षा के स्तर को बनाए रखने अनेक मंच उपलब्ध कराए हैं। शिक्षा ही वह माध्यम है जो संपूर्ण चुनौतियों को अवसर में बदलने की प्रेरणा देता है।

कोरोना वायरस के प्रसार को धीमा करने में मदद करने के लिए भारत सहित दुनिया के विभिन्न हिस्सों में छात्र घरों में कैद है। एक प्रमुख कारक है, जिससे छात्र जीवन को परिभाषित किया जाता है वह है स्कूल, होमवर्क, कोचिंग या ट्यूशन क्लासेस, पाठ्यक्रम गतिविधियों से युक्त एक नियमित दिनचर्या और इसमें मनोरंजन के साथ अधिक अध्ययन भी शामिल है, इस तालाबंदी में पूरी तरह बाधित है, बच्चे पूरे दिन घरों में कैद है।

कोरोना वायरस महामारी ने हमारी दुनिया को उलझा कर रख दिया है, पूरी दुनिया में एकेडमिक कैलेंडर गड़बड़ा गया है। कोरोना संकट के चलते देशभर के शैक्षणिक संस्थान अनिश्चितकाल के लिए बंद है, स्कूल स्तर पर जनरल प्रमोशन कर दिया गया है, कोरोना ने बिना परीक्षा पास कराया, पर नया सत्र फँसाया है। प्रतियोगी परीक्षाएं टली हुई हैं।

इस महामारी से आंगनबाड़ी के बच्चों में शैक्षणिक कार्यकम के साथ पोषण और देखभाल में भी झटका लगा है, वही उच्च शिक्षा का ढांचा भी चरमरा कर रख दिया है, दुनिया भर के छात्रों को अपना बहुमूल्य समय गंवाना पड रहा है, कोई आश्चर्य नहीं बच्चों के साथ–साथ माता–पिता भी इस मोड़ पर भावात्मक और मनोवैज्ञानिक रूप से तनाव महसूस कर रहे हैं।

निजी कोचिंग संस्थान भी बंद हो गये हैं, जिसके कारण अर्थव्यवस्था भी प्रभावित है। छत्तीसगढ़ शासन के शासकीय व्यय में मितव्ययता एवं वित्तिय अनुशासन के चलते विभागों का आयोजन न्यूनतम किया गया है, कॉन्फ्रेंस, सेमीनार तथा शासकीय समारोह के आयोजन में मितव्यता बरती जाएगी। अति आवश्यक बैठक कार्यकम का आयोजन महंगे होटलों के स्थान पर शासकीय भवनों में किया जाएगा। यथासंभव बैठकें, विडियों कॉन्फ्रेंस एवं वेबीनार के माध्यम से आयोजित की जाए।

विदेश में आयोजित प्रशिक्षण वर्कशॉप एवं सेमीनार जिसमें व्यय का भार शासन का निहित हो, में भाग लेना प्रतिबंधित होगा, ऐसे में ऑनलाईन माध्यम ही एक विकल्प है। इस वैश्विक महामारी में मजबूत

इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्प से निपटना होगा। मौजूदा स्थिति में ऑनलाईन शिक्षा पारंपरिक तरीकों का विकल्प बन रही है।

केन्द्रिय मानव संसाधन विकास मंत्रालय के ऑनलाईन शिक्षण प्लेटफार्म को कोरोना वायरस के कारण 5 गुना अधिक एक्सेस किया गया है। एचआरडी की ओर से कहा गया कि जब तक देश में कोविड 19 लॉकडाउन के प्रभाव को कम करने का प्रयास किया जा रहा है छात्रों को सीखने के लए निरंतर पहुँच प्रदान करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

लॉकडाउन अवधि के दौरान राष्ट्रीय ऑनलाईन शिक्षा मंच स्वयं को लगभग 25 लाख बार एक्सेस किया गया है, इसी तरह 60000 लोग हर दिन स्वयंप्रभा डीटीएच टीवी चैनलों के वीडियों देख रहे हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अनुसार नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी को केवल 1 दिन में 1,60,804 बार एक्सेस किया गया है, और राज्य शासन के पोर्टल पढ़ाई तुहर द्वार निःशुल्क शिक्षण गतिविधियों के अलावा एनसीईआरटी के शिक्षा पोर्टल जैसे दिशा, ई पाठशाला, यात्रा विद्वान, स्वयं मॉक वर्चुअल लैब है, जिनके माध्यम से शिक्षा को नए आयाम मिल रहे हैं।

शैक्षणिक संस्थानों में स्काइप, जूम, गूगल, क्लासरूम जैसे विभिन्न प्लेटफार्म के माध्यम से ऑनलाईन कक्षा के विभिन्न तरीके शुरू किये हैं। छात्र अपने नियमित शैक्षणिक दिनचर्या का पालन करने में असमर्थ रहते हैं, इस आपात स्थिति के मद्देनजर और छात्रों की सुरक्षा और उनका अकादमिक चिंतन को ध्यान में रखते हुए अधिकतर संस्थानों ने दूरसंचार, स्काइप कॉल, जूम और अन्य वर्चुअल विकल्प को सुलभ कराने की पहल की है, ताकि शिक्षा के अंतर को पाटा जा सके।

इस बीच इंटरनेट बफरिंग के कारण ऑनलाईन प्लेटफॉर्म को बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ा। इस समस्या को कुछ हद तक दूर करने के लिए रिकॉर्ड किये हुए व्याख्यान और हाथ से लिखे हुए नोट्स भी शिक्षक साझा कर रहे हैं। जिन छात्रों के पास इंटरनेट कनेक्शन नहीं हैं उन्हें टेलीविजन के माध्यम से सीखने को बढ़ावा दिया जा रहा है, स्वयं प्रभा शैक्षणिक कार्यक्रम को प्रसारण करने के लिए समर्पित है।

सरकार द्वारा प्रदत्त इन निःशुल्क कक्षा, विभिन्न गतिविधियों एवं ऑनलाईन प्लेटफॉर्म को बच्चे बिना किसी झिझक और आत्मविश्वास के साथ आत्मसात कर रहे हैं, जिससे निश्चित रूप से इस कोविड 19 तालाबंदी के दौरान शिक्षा के नए आयाम विकसित हो सकेंगे। कोविड 19 महामारी ने दुनियाभर में लाखों लोगों के शिक्षित होने के तरीके में भी परिवर्तन कर दिया है।

इन परिवर्तनों से निश्चित रूप से असुविधा हुई है, लेकिन शैक्षिक नवाचार ने नए उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। कहीं भी, कभी भी, किसी भी समय सीखने, की डिजिटल शिक्षा की अवधारणा को शिक्षार्थी और समाधान प्रदाता एक नई दिशा दे रहें हैं। शिक्षण एक ऐसी आदत बन जाएगी, जिससे रोजमर्रा की दिनचर्या सही जीवन शैली के साथ समायोजित हो जाएगी। आने वाले समय में जब तक करोना वायरस खत्म नहीं होगा तब तक दुनिया की सूरत हमेशा के लिए बदल जाएगी।

संदर्भ सूची :- https://wwwbhaskar.com
https://weeksgram.com

राष्ट्रीय युवा दिवस

नीतेश कुमार, बी.एस–सी. प्रथम वर्ष

युवा शब्द से ही उत्साह स्फूर्ति सक्रियता आदि गुणों का बोध होता है। युवा शब्द वास्तव में आयु रुप अर्थ प्रदान करने से परे सकारात्मक गुण एव सक्रिय व्यक्तित्व का बोध अधिक करवाता हैं। स्वामी विवेकानन्द जी ने युवा शक्ति का केन्द्र शारीरिक बल को नहीं वरन मानसिक शक्तियो को माना। युवा होने की परिपूर्णता उसमें है जिसमें अविराम संघर्ष करने का जज्बा हो, जिसमें हर पल जीवन में कुछ नवीन करने की उमंग हो, जिसमें असफलताओं की ज्वाला में सफलता के प्रकाश को जन्म देने का भाव हो। ऐसे युवाओं के आदर्श के रुप में स्वामी विवेकानन्द के संदेश आज भी उतने प्रासंगिक है जितने शताब्दि पहले थे।

स्वामी विवेकानन्द के वचन आज भी युवा पीढ के लिए प्रेरक व मार्ग दर्शक हैं। उन्होंने कहा था "मेरा विश्वास युवा पीढ़ी में है नई पीढ़ी में हैं", भारतीय युवा शेरो की भांति सभी समस्याओं का हल निकालग। उन्ही के प्रयत्न व पुरुषार्थ से भारत देश गौरवान्वित होगा। उन्होंनें कहा था कि इक्कीसवीं सदी भारत की होगी।

इस सन्दर्भ में भारत सरकार का विचार था कि – ऐसा अनुभव हुआ कि स्वामी जी का दर्शन एव स्वामी जी के जीवन तथा कार्य के पश्चात् निहित उनका आदर्श, यही भारतीय युवको के लिए प्रेरणा का बहुत बड़ा स्त्रोत हो सकता हैं।

इस दिन देश भर के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में तरह–तरह के कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। रैलिया निकाली जाती हैं व्याख्यान होते हैं, विवेकानन्द साहित्य की प्रदर्शनी लगती है।

भारत के युवाओं को प्रेरित करने और बढावा देने के लिए हर वर्ष राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया जाता हैं। स्वामी जी का मानना था कि युवा देश के महत्वपूर्ण अंग ही नहीं बल्कि देश के आधार भी है, जो देश की भावी नीति निर्माण और देश को परिपक्व बनाता हैं। अतः वे युवाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत है उनके कहे कई शब्द आज भी युवाओं में जोश भरते हैं।

उनके कहे वचन – "उठो जागो और तक तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो।" स्वामी विवेकानन्द के विचार, दर्शन, सिद्धांत और आदर्श अध्यापन भारत की महान सांस्कृतिक और पारम्परिक सम्पत्ति हैं। राष्ट्रीय युवा दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य युवाओं के बीच स्वामी जी के आदर्शो विचारों के महत्व के प्रति जागरुकता को फैलाना है।

बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ

कु. गुणिका श्रीवास, छात्रसंघ सचिव, बी.एस–सी अंतिम वर्ष

बेटी बचाओ बेटी पढाओ, बेटी आन बान और शान है।
दुर्गा, काली और सरस्वती बनकर, ज्ञान का दीप जलाती है।
दुःख सहकर सुख बिखेरती, भूखी रहकर भी स्तनपान कराती है।

बेटी बचाओ बेटी पढाओ, बेटी आन बान और शान है।
मॉ, बहन, सास, बहू बनकर, एक नहीं दो–दो घर सजाती है।
गांव जिला और प्रदेश ही नही, वह तो सारे देश को चलाती है।
बेटी बचाओ बेटी पढाओ, बेटी आन बान और शान है।

नदी अभियान (नदी संरक्षण की एक अनूठी पहल)

योगेश्वर साहू, सहा. प्राध्या. राजनीति विज्ञान

नदियां भारतीय सभ्यता का मूल हैं। आज हम जो भी हैं, उसकी मुख्य वजह हमारी नदियां हैं। भारत मुख्य रूप से अपनी प्रमुख नदियों के तट पर विकसित हुआ है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसी प्राचीन सभ्यताएं नदियों के तटों पर ही जन्मी और जब नदियों ने अपना रास्ता बदल लिया, तो ये सभ्यताएं भी नष्ट हो गईं।

सिंधु, सतलुज और प्राचीन सरस्वती नदी के किनारे ही ये सभ्यता विकसित हुई और दक्षिण में ये सभ्यता, कृष्णा, कावेरी, और गोदावरी के आस पास विकसित हुई। इन नदियों और भूमि ने सदियों से हमारा पालन.पोषण किया है। लेकिन पिछली दो पीढ़ियों से हम इसे रेगिस्तान में तब्दील कर रहे हैं। अगर हम भारत के ऊपर से हवाई यात्रा करते हैं, तो हमें कम हरियाली दिखाई देगी, ज्यादातर सूखी ज़मीन ही दिखेगी। पिछले कुछ दशकों में हमारी नदियों के जल.स्तर में तेजी से गिरावट आई है। आज सिंधु और गंगा की गिनती धरती की उन दस नदियों में हो रही है जो सबसे ज्यादा खतरे में हैं। कावेरी जैसी थी, वह भी अब सिर्फ चालीस फीसदी ही बची है। उज्जैन में पिछले कुम्भ मेले के लिए उन्हें नर्मदा नदी से पानी को पम्प करके एक कृत्रिम नदी बनानी पड़ी, क्योंकि क्षिप्रा नदी में पानी ही नहीं था। नदियां और झरने सूख गए हैं। पिछले कुछ सालों में भूमिगत जल का स्तर जबरदस्त तेज़ी से नीचे गिरा है। कई जगहों में पीने के पानी की कमी हो गयी है। आज हमारी नदियां इस दर से घट रही हैं कि 20 सालों में वे मौसमी हो जाएंगी। आज दक्षिणी भारत की सबसे महत्वपूर्ण नदियों कावेरी, कृष्णा और गोदावरी का जल साल में सिर्फ कुछ महीने ही समुद्र की ओर बहता है।

1. नदी अभियान

नदी अभियान, सद्गुरु जग्गी वासुदेवए ईशा फाउंडेशन, कोयम्बटूर, तमिलनाडु द्वारा संचालित नदी संरक्षण हेतु जागरूकता फैलाने और इस हेतु केंद्र व राज्य सरकारों को नीति बनाने के लिये प्रेरित करने का अभियान है।

नदियों को बचाने को लेकर लोगों ने के कई तरह के उपाय किये हैं। एक तो यह है कि रोधक बाँध बनाना, जिसे कई राज्यों ने अपनाया है। बहुत बार इससे नदी, तालाबों के समूह में बदल जाती है। दूसरा यह है कि नदियों में गड्ढे खोद कर उनमें कंकड़ भर दिए जाएं, जिससे कि पानी जमीन के भीतर रिस सके और आस.पास के कुओं तक पहुँच सके। यह उपाय नदी की मृत्यु पूरी तरह से सुनिश्चित कर देता है। इस तरह के उपायों से नदियों का शोषण होता हैए उनका बचाव नहीं होता।

1.1 मूल अवधारणा

हमारे देश में मूल रूप से दो तरह की नदियाँ हैं बर्फिली नदियाँ और जंगली नदियाँ। बर्फिली नदियों में पानी पहाड़ पर जमे बर्फ के पिघलने से आता है, जो पूरी तरह हमारे काबू में नहीं है क्योंकि तापमान का बढ़ना एक वैश्विक घटना है। भारतीय हिमालय में जो पर्वत शिखर पूरे साल बर्फ से ढँके रहते थे, अब वहाँ बस चट्टानें दिखती हैं। भागीरथी और गंगा के जल का स्रोत गोमुख हिमनदी, पिछले तीन दशकों में करीब एक किलोमीटर पीछे की ओर चली गई है। हिमनदी का पिघलना और बर्फ की कमी हिमालय में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। पूरे भारतीय उपमहाद्वीप के जलाशयों में पानी की कमी होती जा रही है। हमें इसी समय जरुरी कदम उठाने होंगे, ताकि उस त्रासदी को रोका जा सके, जो हमारी कल्पनाओं से भी परे है।

1.2 वृक्ष लगना एक व्यापक समाधान

नदी समस्या का एक व्यापक समाधान जरूरी है, जिसकी शुरुआत लोगों में यह जागरुकता पैदा करने से होनी चाहिए, कि हम अपनी नदियों के साथ क्या कर रहे हैं और क्या करना चाहिए। इस हेतु सिर्फ लोगों को कुछ करने के लिए प्रेरित करना काफी नहीं है। अगर हम लोगों को लाभदायक हल सुझाएंगे, तभी हम उन्हें अपनी नदियों को बचाने के लिए तैयार कर पाएंगे। हम 1,00,000 लोगों को अगले दस सालों के लिए पेड़ लगाने और उन्हें बड़ा करने का काम सौंप सकते हैं। इस तरह हम जमीन के एक बड़े हिस्से को हरित पट्टी में ला सकते हैं। इससे मानसून अधिक नियमित होंगे और हमारी मिट्टी का क्षरण रुकेगा। यह एक व्यापक समाधान है और इसमें नदियों को जोड़ने से होने वाले खर्च के 10 फीसदी से ज्यादा लागत नहीं आएगी।

2. नदी बचाव रैली

सर्वप्रथम, हमें अपनी सोच को नदियों के दोहन से बदलकर उन्हें जीवंत बनाने में लगाना होगा। साथ ही देश में सभी को इस बारे में जागरुक करना होगा कि नदियों को बचाने की जबरदस्त जरुरत है।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये सितम्बर 2018 में, सद्गुरु ने एक ऐतिहासिक मिशन की शुरुआत की। एक महीने तक नदी अभियान3 की जागरुकता फ़ैलाने के लिए कोयम्बटूर से रैली शुरू हुई और दिल्ली में समाप्त हुई, जिसमे सद्गुरु ने स्वयं गाड़ी चला कर 16 राज्यों की यात्रा कीए इस बीच 23 शहरों में बड़े समारोह आयोजित हुए। यह अभियान आम जनता का समर्थन पाने के लिए था, ताकि भारत की नदियों को बचाने के बेहद गंभीर विषय पर सरकार एक नीति बनाए। यह अभियान इसलिए कामयाब रहा क्योंकि इसे 16.2 करोड़ लोगों का समर्थन मिला जिसमे हर समुदाय के लोग, कई राज्यों के मुख्य मंत्री ,राजनैतिक जुड़ाव से परे हटकर, मीडिया और अभिनेता शामिल हुए। यह रैली सोलह राज्यों से गुज़री और योजना के अनुसार यह रैली तमिलनाडु के कन्याकुमारी से शुरू होकर, उत्तराखंड तक गयी और फिर दिल्ली में आकर ख़त्म हुई। जिन सोलह राज्यों की राजधानियों से रैली गुज़री, उन जगहों पर बड़े समारोह आयोजित किये गये, जिससे बड़े स्तर पर नदियों को बचाने के बारे में जागरुकता पैदा की जा सके।

3. नदी अभियान का क्रियान्वयन

ईशा फ़ाउंडेशन के द्वारा प्रोजेक्ट ग्रीन हैंड्स के तहत बड़े पैमाने पर पेड़ लगाने का जो काम हुआ, उससे अब तक पूरे तमिलनाडू में 3 करोड़ से ज्यादा पौधे लगाए जा चुके हैं। अलग.अलग लोगों द्वारा भी पेड़ लगाने की कोशिशों से स्थिति बेहतर होती है। लेकिन अगर हम सही मायने में समाधान चाहते हैं, तो सरकारी स्तर पर नीतियों में बदलाव होना चाहिए। राजस्थान सरकार ने जलाशयों के आस.पास पेड़ लगाने का शानदार काम किया है और इसका असर भूमिगत जल के बढ़ते स्तरों के रूप में अभी से देखा जा सकता है। मध्य प्रदेश सरकार ने हाल ही में नर्मदा के आस.पास पेड़ो की फसल उगाने वाले किसानों को आर्थिक सहायता देनी शुरू की है। कुछ दिनों पहले, उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने गंगा को एक जीवंत अस्तित्व के रूप में पहचान देते हुए उसे कानूनी अधिकार दिए हैं, और सरकार को उसकी सफाइ और देख.रेख के लिए एक बोर्ड बनाने के निर्देश दिए हैं। यह सही दिशा में उठाये गए शुरुआती कदम हैं।

3.1 भारत सरकार की पहल

नवम्बर 2017 में, प्रधानमंत्री कार्यालय ,भारत सरकार ने नदी अभियान द्वारा बनाई गई नीति सिफारिशों का अध्ययन करने के लिए नीति आयोग के सी.ई.ओ. ;मुख्य अधिकारी, श्री अमिताभ कांत अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समूह का गठन किया। छह महीने बाद, इस समिति ने भारत की नदियों पुनर्जीवित करने के लिए राष्ट्रव्यापी नीति बनाई और प्रोग्राम फॉर एक्शन के माध्यम से सभी राज्यों इसे लागू करने की सलाह भेजी। यह कार्यक्रम ग्रामीण विकास कार्यालय *(DoRD)* द्वारा तैयार कि गया।

प्रोग्राम फॉर एक्शन में नीति को लागू करने के लिए सभी शामिल हित धारकों की विशि भूमिका की पूरी जानकारी दी गई है। यह परिचालन संरचना और विभिन्न योजनाओं को भी रेखांकि करता है जिसके माध्यम से नदी पुनरुद्धार का मिशन जिला, राज्य और केंद्रीय स्तर पर कार्यान्वि किया जा सकता है।

3.2 महाराष्ट्र

महाराष्ट्र कैबिनेट ने 5 मार्च को यवतमाल की वाघाडी नदी के पुनरुद्धार के लिए पायलट प्रोजेक्ट को मंजूरी दी। कृषि विभाग ने परियोजना के कार्यान्वयन के लिए 415 करोड़ रुपए की राशि निर्धारित है। कैबिनेट की मंजूरी में इस परियोजना के लिए एक विशेष प्रयोजन समिति का गठन भी शामिल जिसमें नदी अभियान के प्रतिनिधि और अन्य तकनीकी विशेषज्ञ शामिल होंगे।

सद्गुरु ने भारत की सूखती नदियों को पुनर्जीवित करने के लिए युवाओं से इस अभियान भाग लेने का आह्वान किया था।

3.3 अन्य राज्य

नदी अभियान रैली के दौरान व इसके बाद, ईशा फ़ाउंडेशन ने भारत की 6 राज्य सरका महाराष्ट्र, कर्नाटक, पंजाब, गुजरात, असम व छत्तीसगढ़ के साथ एमओयूज़ ;समझौता ज्ञापन, हस्ताक्षर किए। कर्नाटक सरकार ने अपने राज्य में 25 करोड़ पेड़ लगाने का वादा किया है, जिसमें न तटों के क्षेत्रों पर विशेष फोकस रहेगा। इसके बाद, बाकी चार राज्यों में नदियों के पुररुद्धार कार्यक्रम ईशा का रोल टेक्निकल पार्टनर के तौर पर रहेगा।

यह नदी अभियान सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में अपने आप में अतुलनीय है, क्यों दुनिया में कभी भी कहीं भी इतना विशाल पर्यावरण सम्बन्धी आन्दोलन नहीं देखा गया। आमतौर प केवल कुछ छोटे,मोटे समूह पर्यावरणीय सरोकारों लिए संघर्ष करते रहते हैं। चूंकि, यह नदी अभियान ए सकारात्मक और सही उद्देश्य के साथ शुरू किया गया और यह एक धरना नहीं है, यह विरोध प्रदर्शन नहीं है, यह किसी के खिलाफ नहीं किया जा रहा, ऐसे में पूरे भारत ने इसे अपना समर्थन दिया मीडि ने शानदार तरीके से अपना सहयोग दिया।आज़ाद भारत के इतिहास में कभी किसी आयोजन को देश में इतनी मीडिया कवरेज नहीं मिली होगी, जितनी नदी अभियान को मिली है।

संदर्भ सूची :-

1. https://isha.sadhguru.org›blog› article › nadi-abhiyan-ke-baad
2. https://www.ishaoutreach.org › cauvery-call...
3. https://www.bhaskar.com›Union Territory › New Delhi › News
4. https://www.facebook.com › ... › नदी अभियान, भारत का कल्याण
5. https://hindi.webdunia.com›national-hindi-news›river-campaign-isha-fo...

मन की आवाज

मीनाक्षी कुम्भकार, बी.एस–सी. अंतिम वर्ष

हमें नारी के महत्व पर विचार करना आवश्यक है पहले लोगो की सोच को कितनी छोटी मानी जाती थी क्योंकि पहले के लोग मॉ की कोख में ही बच्चों को मार देते थे। उनका कसूर बस इतना होता था कि वह बच्ची एक लड़की होती थी, इस बच्चे को न रखने के लिए तरह–तरह के उपाय करते थे। लिंग परीक्षण करवाते थे कि लड़की हुई तो नहीं रखेंगें। भ्रूण हत्या लिंग परीक्षण को कानूनन अपराध माना जाता है। इस तरह हर क्षेत्र में अब लडकियों को महत्ता को समझा जा रहा है। लड़किया आज डॉक्टर, इंजीनियर, बैंकिग एवं अन्य पदों पर पदस्थ होकर सब जगह आगे आ रही है। पर थोड़ा सा सुधरते देख फिर न जाने किसकी नजर लग गई है। लडकियों को गंदी नजरों से देखा जा रहा है।

लड़कियों को अकेले देखते ही परेशान करना, छेड़ना उनका शारीरिक शोषण करना एक आम बात हो गई है जिससे सारी नारी जाति डर गई है और वह छुपकर रह जाती है। ऐसे शर्मनाक घटनाओं से हमारा दिल कांप उठता है और ये समाज के लोग बस देखते ही रह जाते है। लड़कियों को फिर सिर छुपाना या आत्म हत्या बस दिखता है। आखिर इनके परेशानियों का कोई हल नहीं क्या ? आये दिन ऐसी कुछ न कुछ घटना सुनने देखने को मिलती है पर रोक नहीं लग पा रही है। इस तरह तो कभी विकसित देश बन ही नही पायेगा और ये सिर्फ स्वप्न ही रह जायेगा। कल जो भ्रुण में मार दिये जाते थे आज वहीं कुछ महिनों सालो बाद यौण शोषण द्वारा मर या मार दिये जाते है। आखिर कल और आज में फर्क ही क्या बचा है । पैदा होने से पहले और पैदा होने के बाद भी लड़कियों को ही मारा जा रहा है।

जब बच्चे छोटे होते है तो पुलिस, फौज, डॉक्टर बनने का सोचते है देश की सेवा करना चाहते है और बड़े होते ही सारे नियम कानूनों का उलंघन करते है। देश सेवा तो कर लेते है पर नारी सुरक्षा व सेवा नही कर पाते और तकलीफो को दूर करने में असफल हो जाते है। मैं नही कहती कि गलती सिर्फ लड़को की होती है कही न कही लड़किया भी इसकी जिम्मेदार होती है । पर उनकी गलती सिर्फ इतनी होती है कि वो कपड़े अच्छे पहनते है सुन्दर दिखने के लिये, तरह – तरह के उपाय करते है क्या यही गलती है। परवरिश ही हमारा सबसे बड़ा हथियार है अच्छी परवरिश ही दुनिया को बदल सकती है आज कि दुनिया में बच्चों को छूट दी जा रही है कही यही बुरे विचार की शुरुआत तो नहीं है।

लड़की एंव लड़के के बीच आर्कषण का होना स्वभाविक क्रिया है। ये हार्मोन्स के कारण होते है पर इसका मतलब ये नही कि आकर्षण है तो सिर्फ यौनत्र शोषण हो। कभी–कभी ऐसा होता है कि हम कब क्या सोच रहे है हमें कुछ पता ही नहीं होता इस आधार को सिर्फ अच्छे परवरिश से ही सुधारा जा सकता है न कि कोई कचहरी से। बच्चों को बचपन से ही संभालना व अच्छे बुरे का मतलब समझाना चाहिए।

हम सोच बदलें और कुछ करके दिखायें।

जय भारत !

"धैर्य और शांति" दो शक्तिशाली ऊर्जा है .....

धैर्य – हमें मानसिक रुप से मजबूत बनाता है .....

शांति – हमें स्वाभाविक रुप से शक्तिशाली बनाती है .....

छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक स्थलों का एक अध्ययन

श्री दीपक मेश्राम, सहायक प्राध्यापक इतिहास

छ.ग. में अनेक ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थल हैं, जो कि छ.ग. के गौरवशाली इतिहास को बया करते है। भारत के हद्य स्थल पर स्थित छ.ग. प्राचीन कला, सभ्यता, संस्कृति, इतिहास और पुरातत्व की दृष्टि से अत्यन्त सम्पन्न हैं। छ.ग. के ऐतिहासिक, पुरातात्विक स्थल इतने मनोरम है कि पर्यटकों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

सिरपुर :–सिरपुर छ.ग. के महासमुन्द जिले में स्थित है। सिरपुर का प्राचीन नाम श्रीपुर है जिसका अर्थ समृद्धि की नगरी। महाभारत काल में सिरपुर अर्जुन के पुत्र भब्रवाहन की राजधानी थी। बौद्धग्रंथ के अनुसार गौतम बुद्ध यहॉ आये थे। सम्राट अशोक द्वारा यहॉ स्तूप भी बनवाया गया था। सिरपुर प्राचीन समय में दक्षिण कौशल की राजधानी रही हैं। यह पाण्डुवंशी, सोमवंशी तथा शरभ वंशीय सम्राटों की राजधानी रही हैं। यहॉ लाल ईटो से निर्मित लक्ष्मण मंदिर है, जिसे पांडूवंश की महारानी वासटा ने अपने पति हर्षगुप्त की याद में बनवाया था। यहॉ गंधेश्वर मंदिर, राममंदिर, बौद्धविहार, आनंद प्रभु कुटी तथा स्वास्तिक विहार आदि विशेष आकर्षण है। चीनी यात्री ह्वेनसांग की यात्रा का मार्ग छ.ग. से होकर गुजरा था, उन्होंने सिरपुर को देखा था इसका उल्लेख उन्होंने अपनी "यात्रा विवरण" में किया था।

भोरमदेव :–छ.ग. का खजुराहो कहा जाने वाला भोरमदेव मंदिर कबीरधाम जिले में स्थित हैं। भोरमदेव गोंड राजाओं के देवता थे। भोरमदेव शिवजी के उपासक थे। भोरमदेव मंदिर का निर्माण 11 वी. शताब्दी में फणि नागवंशी राजा गोपाल देव ने कराया था। इस मंदिर की वास्तुकला नागर शैली में है। इस मंदिर का शिखर ओडिशा वास्तुशैली को दर्शाता है। साथ ही साथ नक्काशी और मूर्तिकला खजुराहो मंदिर के समान है।

मल्हार :–मल्हार बिलासपुर जिले में स्थित ऐतिहासिक महल का एक ग्राम है। यहा पर ताम्रकाल से लेकर मध्यकाल तक का क्रमबद्ध इतिहास प्राप्त होता है। खुदाई से मौर्यकालीन ईटों की दीवारें प्राप्त हुई हैं, साथ ही यहॉ रोमन सिक्के प्राप्त हुए हैं, जिससें पता चलता है कि इस क्षेत्र में विदेशी व्यापार होता था। यहॉ प्रमुख रुप से ऐतिहासिक महत्व के पालेश्वर मंदिर, दडेरी मंदिर एवं डिंडेश्वरी मंदिर आदि है। यहॉ सर्वाधिक प्राचीन चतुर्भुज विष्णु प्रतिमा हैं, जिसमें मौर्यकालीन ब्राम्ही लेख अंकित हैं।

रतनपुर :–रतनपुर की स्थापना कलचुरि शासक रत्नदेव प्रथम ने की थी। कलचुरि शासक रत्नदेव प्रथम पृथ्वीदेव प्रथम आदि ने यहॉ कई मंदिरो, तालाबों का निर्माण कराया। यहॉ महामाया मंदिर, कंठीदेवल मंदिर बुद्धेश्वर महादेव, भैरव मंदिर, हनुमान मंदिर सभी कल्चुरी कालीन हैं। प्रथम मराठा शासक बिम्बाजी भोंसले ने राम टेकरी पहाड़ी पर भगवान राम चन्द्र का मंदिर बनवाया हैं। गोपाल मिश्र, बाबू रेवाराम, माखन मिश्र यहॉ के पुराने साहित्यकार थे।

शिवरीनारायण :–जांजगीर चांपा जिले में स्थित शिवरीनारायण में महानदी, शिवनाथ एंव जोंक नदी का त्रिवेणी संगम हैं। दंत कथाओं के अनुसार राम ने शबरी के जुठे बेर इसी स्थान पर खाए थे। यहॉ के दर्शनीय शिवरीनारायण मंदिर में प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि पर मेला लगता हैं। शिवरीनारायण से 3 कि.मी. दूर खरौद नामक स्थान पर शिव मंदिर लक्ष्मणेश्वर दर्शनीय हैं।

कुदूरमाल :–कोरबा जिला में स्थित कुदूरमाल कबीर पंथियों का तीर्थ स्थल हैं यहॉ कबीर पंथ के प्रथम महंत धरमदास के पुत्र चूड़ामन की समाधि हैं। यहॉ प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा के समय कबीर पंथियों का मेला लगता है।

राजिम :–राजिम को छ.ग. का प्रयाग कहा जाता हैं। महानदी, पैरी व सोंढूर नदियों के संगम पर बसा राजिम गरियाबंद जिले में स्थित हैं। यहॉ पर कुलेश्वर महादेव मंदिर, राजेश्वर मंदिर तथा राजीव लोचन मंदिर हैं। प्रसिद्ध राजीव लोचन मंदिर का निर्माण 5 वी. सदी में हुआ था। नलवंशीय शासक विलासतुंग एवं कलचुरि शासक जाजल्यदेव प्रथम ने राजीव लोचन मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था। राजिम छ.ग. का पवित्र स्थल है, यहॉ पर प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा को वृहद मेला लगता हैं। राजिम से 9 कि.मी. की दूरी पर चम्पारण्य वल्लभ सम्प्रदाय के प्रणेता वल्लभाचार्य का धाम हैं।

बारसूर :– छिंदक नागवंशी राजाओं की राजधानी रही बारसूर दंतेवाड़ा जिला में स्थित है। छिंदक नागवंशी राजाओं ने 10 वी. शताब्दी से लेकर 14 वी. शताब्दी तक बस्तर में शासन किया था। यहॉ गणेश जी की विशालकाय प्रतिमा अपनी विशालता के लिए प्रसिद्ध हैं। बारसूर में शिवजी को समर्पित मामा–भाजा मंदिर है इस मंदिर के शिल्पकार मामा और भांजा थे इसलिए इस मंदिर का नाम मामा–भांजा मंदिर हैं। बारसूर में प्रसिद्ध बत्तीसा मंदिर है इस मंदिर में बत्तीस स्तम्भ हैं।

गिरौधपुरी :– बलौदाबाजार जिले में स्थित गिरोधपुरी सतनामी समाज का प्रमुख तीर्थ स्थल हैं। यहॉ गुरुघासीदास का निवास स्थान, चरणकुण्ड, अमृतकुण्ड, छाता पहाड़ आदि दर्शनीय स्थल हैं। यहॉ प्रतिवर्ष 18 दिसम्बर को भव्य मेला का आयोजन होता हैं। गिरौधपुरी में स्थित जैतखाम कुतुबमीनार से भी ऊँचा हैं।

जांजगीर :– वर्तमान में जांजगीर, जांजगीर–चांपा जिला का मुख्यालय हैं। जांजगीर की स्थापना कलचुरी शासक जाजल्यदेव ने की थी। जांजगीर जिले के विष्णु मंदिर इस जिले के सुनहरे अतीत को दर्शाता हैं।

रामगढ़ :– अम्बिकापुर के पास स्थित रामगढ़ पहाड़ी पर स्थित मंदिर, गुफाएं एवं भित्तिचित्र ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक दृष्टि से बड़ा ही महत्वपूर्ण हैं। कहा जाता है कि भगवान राम, माता सीता तथा लक्ष्मण जी ने वनवास काल का कुछ समय इसी स्थल पर बिताए थे, इस कारण ही यह स्थल रामगढ़ कहलाता हैं। पहाड़ी के शिखर पर मौर्य कालीन गुफाऍं हैं इनमें सीता बेंगरा, लक्ष्मण बेंगरा प्रमुख है। सीता बेंगरा में भारत वर्ष का सबसे प्राचीन नाट्यशाला हैं।

डोंगरगढ़ :– छत्तीसगढ़ राज्य के महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में शुमार डोंगरगढ़ राजनांदगॉव जिले के करीब 35 किमी की दूरी पर स्थित है। ना केवल एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल बल्कि एक पर्यटन स्थल के रूप में भी यह जगह इतनी हलचल भरी और प्रसिद्ध है कि लगभग सालभर ही श्रद्धालुओं का ताता सा लगा रहता है। खूबसूरत पहाड़ियों से घिरा यह पूरा इलाका कई मायनों में खुद को एक यादगार भ्रमण स्थली के रूप में साबित करता है। यहां कई छोटे–बड़े तालाब हैं और चारों ओर फैली हरियालियां यहां की प्राकृतिक सुन्दरता में चार चांद लगाने का काम करती है। ना केवल प्राकृतिक नजारों बल्कि यहां के माहौल में फैली शांति और सर्व धर्म सद्भाव की भावना भी आपको यहां बहुत कुछ खोजने पर मजबूर कर देगी। दरअसल प्रकृति धर्म और आस्था का यह विविधता भरा संगम ही है जो डोंगरगढ़ को एक शानदार पर्यटन स्थल के रूप में प्रस्तुत करता है।

इस स्थान के शाब्दिक अर्थ की तह में जाएं तो पता चलता है कि डोंगरगढ़ का अर्थ पहाड़ जिसमें गढ़ का मतलब किले को दर्शाता है। इसके अलावा यह स्थान मॉ बमलेश्वरी देवी के मंदिर के लिए बहुत प्रसिद्ध है जो कि 1600 मीटर की एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। इस मंदिर के साथ कई किंवदंतियां जुड़ी है जिसकी वजह से इस सुंदर तीर्थ स्थल का आध्यात्मिक महत्व और ज्यादा बढ़ जाता है। नवरात्र के दिनों में यहां भव्य स्तर पर मेले का आयोजन किया जाता है जिसमे भाग लेने के लिये भारी संख्या में श्रद्धालु देश के अलग–अलग हिस्सों से हर साल यहां देवी मां का आर्शीवाद पाने के लिये आते है।

प्रज्ञागिरी :– अगर आप छत्तीगढ़ की यात्रा पर है तो इस स्थान पर जरूर जाएं। राज्य का यह पहाड़ी स्थल जाना जाता है। भगवान बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा के लिए यहां तक पहुँचना किसी रोमांच से कम नहीं है। बुद्ध की प्रतिमा और पहाड़ों के सुन्दर नजारों का आनंद लेने के लिए आपको 225 सीढ़ीयां चढ़नी होगी जो किसी पहाड़ को चढ़ने जैसा ही है। बताया जाता है कि इस सुंदर स्थल का निर्माण सन् 1998 के आस–पास करवाया गया था।

बमलेश्वरी मंदिर :– भारत में आपको ऐसे अनेकों मंदिर देखने को मिलेंगे जो किसी 1697 ऊंचे पहाड़ की चोटी पर बने हैं। करीब 1600 फीट की ऊंचाई पर स्थित बमलेश्वरी देवी का यह मंदिर भी एक ऊंची पहाड़ी पर बना है। इसके पास ही एक अन्य मंदिर भी है जिसे छोटी बमलेश्वरी के नाम से जाना जाता है। दोनों मंदिरों के बीच की दूरी महज आधा किमी ही है। नवरात्र के दिनों में यहां भव्य मेले का आयोजन किया जाता है जिसमें भाग लेने के लिए दूर–दूर से भारी संख्या में श्रद्धालु आते हैं।

जैन मंदिर :– राज्य में बेहद खूबसूरत नजारों के लिए प्रसिद्ध, डोंगरगढ़ के चंद्रागिरी पहाड़ियों की गोद में बसा यह जैन मंदिर असल में प्रसिद्ध तीर्थंकर चंद्रप्रभुजी की विशाल प्रतिमा के दर्शन के सामने यहां इस मंदिर में भारी संख्या में श्रद्धालु उनका दिव्य आर्शीवाद प्राप्त करने के लिए श्रद्धाभाव के साथ आते हैं।

वनस्पति विज्ञान एवं भौतिक विज्ञान : प्रायोगिक कार्य

राहुल देवॉगन, प्रयोगशाला परिचा
(वनस्पति विज्ञान एवं भौतिक विज्ञा

शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी जिला बालोद (छ.ग.) की स्थापना जुलाई 2006 में हुई। आरम्भ में इस महाविद्यालय में कला, वाणिज्य एवं विज्ञान बायो समूह का अध्यापन होता रहा। परन्तु प्राचार्य प्रो. (डॉ.) यू.के मिश्र के आगमन बाद, प्रयास करने पर वर्ष 2017–18 से स्नातक स्तर पर गणित समूह की मान्यता मि गई और छात्र–छात्रा बायो के अतिरिक्त गणित एवं भौतिक विज्ञान के अध्ययन क लाभ ले रहे है।

भौतिक विज्ञान और वनस्पति विज्ञान के प्रायोगिक कार्य में छात्र–छात्रा को सहयोग करने अवसर मुझे मिला है। दोनो विषयों में स्थायी सहायक प्राध्यापक नही होने के कारण अतिथि व्याख्याता चारुलता फिलिप (वनस्पति विज्ञान) एवं सुश्री गीता देवॉगन (भौतिक विज्ञान) के द्वारा छात्र–छात्राओं का यापन एवं मार्गदर्शन करते है। इन दोनो विषयों के छात्र–छात्राओं के लिए कुछ महत्वपूर्ण सावधानियों बताना चाहता हूँ।

विज्ञान के छात्रों को प्रयोगात्मक कार्य करना आवश्यक है क्योकि इसी कार्य के द्वारा उन्हें वास्तवि ज्ञान की प्राप्ति होती है और विषय को समझने में आसानी होती है तथा साथ–साथ विषय के प्रति जिज्ञा एवं रुचि उत्पन्न होती है। वनस्पति विज्ञान प्रयोगशाला में विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के पौधे तथा उन जुड़ी हुई विभिन्न क्रियाओं का अध्ययन करना पड़ता है जिसके लिए आवश्यक उपकरण, सामग्री आ उपलब्ध है। प्रयोगशाला में विद्यार्थियों को सावधानीपूर्वक कार्य करना होता है और कुछ आवश्यक नि का परिपालन भी करना होता है।

आधारभूत नियम तथा उनके प्रयोग का प्रयोगात्मक ज्ञान, विज्ञान की जानकारी के लिए महत्व स्थान रखता हैं। प्रयोगात्मक कार्य के द्वारा ही विज्ञान के कल्पनात्मक अध्ययन की सही जानकारी प्राप्त हो है। प्रयोगात्मक कार्य की सहायता से ही बहुत सी जैव रासायनिक क्रियाओं को संक्षिप्त में समझा जा सक है। प्रयोगात्मक अध्ययन के द्वारा पौधों के आन्तरिक तथा बाह्य अंगो तथा उनके अंदर होने वाली विभि जैविक क्रियाओं को आसानी से समझा जा सकता है। इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी के लिए प्रयोगात्मक अध्य बहुत जरुरी है। प्रत्येक विद्यार्थी को प्रयोगात्मक कक्ष में जाने से पहले अच्छी प्रकार से प्रयोग करने के लि तैयार रहना चाहिए तथा बताई गई सभी सावधानियों का ध्यान रखना चाहिए तथा विभिन्न जरुरी उपक का सही प्रयोग करना जानना चाहिए। विद्यार्थी को वनस्पति विज्ञान के प्रायोगिक कार्य के लिए ब आवश्यक उपकरण जैसे – पुस्तक, कापी, चिमटी, निडिल, रेजर, ब्लेड, ब्रश, पेन्सिल, रबड़, पेन्सिल क ड्रापर, साफ रुमाल, पैमाना, कैंची आदि।

पौधों के विभिन्न भाग जिनका प्रयोगात्मक अध्ययन किया जाता है मेटेरियल कहलाता है। वनस्प विज्ञान के विद्यार्थी आस–पास के स्थानों से विभिन्न प्रकार के मेटीरियल इकट्ठे करते है तथा इन मेटीरि को सकारिकीय (Morphology) तथा इनके ऊतकों का अध्ययन किया जाता है। एकत्रित मेटेरियल सुरक्षित करके (Preserved) रखते है तथा विभिन्न विलयनों में संचय (स्टोर) करते है। इस विधि प्रिजर्वेशन कहते है। विभिन्न पदार्थो को अलग–अलग विधि से प्रिजर्व करते है। प्रिजवेटिव पदार्थ रसाय (Osmosis) विधि से ऊतको के अंदर पहुंचकर उन्हें दृढ़ता प्रदान करता है तथा इससे निर्जीव होने बाद भी उनकी रचना में कोई अंतर नहीं आता है।

सूक्ष्मदर्शी (माइक्रोस्कोप) प्रयोगात्मक वनस्पति विज्ञान के लिए अत्यन्त उपकरण है। बिना इस सहायता के सभी अध्ययन अधूरे है। मनुष्य की ऑख भी देखने का यन्त्र है लेकिन इसकी सहायता से 01 से 0.025 मि.मी. छोटी वस्तुएं ही देखी जा सकती है। कुछ मुख्य सूक्ष्मदर्शी जो कि अधिकतर प्रयोगशा

में प्रयोग किये जाते है जैसे – डिसैक्टिंग माइक्रोस्कोप, बाइनोकुलर माइक्रोस्कोप, स्टीरियोस्कोपिक बाइनोकुलर माइक्रोस्कोप, कम्पाउण्ड माइक्रोस्कोप, फेस कन्ट्रास्ट माइक्रोस्कोप, इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोप। मुख्य दो प्रकार के माइक्रोस्कोप जो कि अधिकतर भारत के महाविद्यालयों में अध्ययन के लिए प्रयोग किये जाते है जैसे – डिसैक्टिंग माइक्रोस्कोप तथा कम्पाउण्ड माइक्रोस्कोप।

विज्ञान का विकास हमारे दैनिक जीवन में होने वाली घटनाओं के सूक्ष्म निरीक्षण पर निर्भर करता है। इसलिए भौतिक विज्ञान के ज्ञान के लिए व्यवस्थित प्रयोगात्मक कार्य आवश्यक है। प्रयोग करने से पूर्व विद्यार्थी को यह ज्ञात होना चाहिए कि उसे प्रयोग द्वारा किस भौतिक राशि का मान ज्ञात करना है अथवा किस नियम या किस सूत्र का सत्यापन करना है। इसके अतिरिक्त, उस प्रयोग को करने के लिए किस यन्त्र को उपयोग में लाना है उस उपकरण से किस प्रकार माप की जाती है आदि।

विज्ञान एवं विशेष रुप से भौतिकी में हम यथा सम्भव शुद्ध मापन का प्रयास करते है। विज्ञान के इतिहास में शुद्ध मापन से अनेक नये आविस्कार और महत्वपूर्ण विकास हुए है। स्पष्टतया, प्रत्येक मापन के उपयुक्त मात्रक होते है। भौतिकी का कार्य परिसर बहुत विस्तृत है। अत्यन्त विविधतापूर्ण प्राकृतिक परिघटनाएं इसके अध्ययन क्षेत्र में आती है जैसे– यान्त्रिकी, ऊष्मा एवं ऊष्मागतिकी, प्रकाशिकी, तरंगे एवं दोलन, विद्युत एवं चुम्बकत्व, परमाण्विक एवं नाभिकीय भौतिकी, इलेक्ट्रानिकी एवं कम्प्यूटर आदि।

प्रौद्योगिकी, भौतिकी के नियमों का अनुप्रयोग होती है, जिसके द्वारा हमारे भौतिक जीवन स्तर की गुणवत्ता में सुधार के लिए मशीनों, युक्तियों आदि का निर्माण किया जाता है या इनमें सुधार लाया जाता है। प्रत्येक नई खोज समाज की संरचना और इसके लोगों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाती है। भौतिकी के नियमों की दूरी, चाल, समय, बल, क्षेत्रफल, आयतन, विद्युत धारा आदि भौतिक राशियों के पदों में व्यक्त करते है। मापन के लिये प्रत्येक भौतिक राशि का एक मात्रक नियत किया जाता है।

आदिवासी क्षेत्र में स्थित इस महाविद्यालय में अधिकांश छात्र–छात्रा, मध्यम श्रेणी एवं सामान्य श्रेणी के अध्ययन करते है। परन्तु उनकी प्रतिभा और परिश्रमशीलता अत्यन्त सराहनीय है।

सफलता की कुंजी – आत्मविश्वास

(इंटरनेट से साभार गृहीत) प्रस्तोता – खुमेश्वर सिंह साहू, प्रयोगशाला तकनीशियन

हमारे जीवन में शुरू से ही दो बातों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है और ये दो बातें सफलता और असफलता है। सफलता हमें खुशी देती है और जीने की आस बढ़ाती है जबकि दूसरी ओर असफलता हमें गम की गहराई में ढकेल देती है और अवसाद में चले जाते है जो नकारात्मकता को जन्म देती है। सफलता और असफलता के बीच में होता है "आत्मविश्वास"। आत्मविश्वास एक ऐसी कुंजी है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने गुणों तथा शक्तियों को नियंत्रित करके सफलता प्राप्त कर सकता है। आत्मविश्वास का अर्थ है अपने अंदर के डर एवं झिझक को दूर करना। जब तक मनुष्य के अंदर आत्मविश्वास है तब तक वह बड़े से बड़े कार्य को आसानी से कर सकता है। इसी प्रकार असफलता को दूर करना है या अवसाद से बाहर निकलना है तो हमें अपने अंदर आत्मविश्वास को जगाना होगा। कहा जाता है कि डूबते हुए को तिनके का सहारा। अर्थात् एक छोटी सी आत्मविश्वास या दुसरे शब्दों में कहें तो एक छोटी सी उम्मीद या आशा की किरण पूरे जग को उजाला कर देता है। और हम अवसाद से बाहर आ जाते है। कहने का आशय यह है कि असफलता में आत्मविश्वास पैदा कर सफलता प्राप्त किया जा सकत है। एक छोटा सा बच्चा जब प्रारंभ में चलना सीखता है तो वह कई बार गिरता, उठता और अंत में सम्हा कर चलना सीख जाता है। उसी प्रकार व्यक्ति हो या छात्र–छात्राएं से मै यही कहना चाहूंगा कि जीवन आगे बढ़ना या सफलता प्राप्त करना है तो हमें हर डर का डट कर सामना करना होगा। हमें अपने अं निराशा को दूर कर आत्म विश्वास पैदा करना होगा। इसीलिए कहा गया है कि सफलता की कु आत्मविश्वास में छिपी हुई हैं ।

स्वच्छ भारत मिशन में युवाओं की भूमिका एवं एन.एस.एस. का अनुभ

कु. हेमा धनकर, छात्रसंघ अध्यक्ष, बी.एस–सी. अंतिम व

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा प्रारम्भ किया गया यह राष्ट्रीय स्तर का अभि है। हमारे राष्ट्रपिता "महात्मा गांधी" ने देश को गुलामी से मुक्त कराया परन्तु "स्वच्छ भारत" उनका सपना पूरा नहीं हुआ। महात्मा गांधी ने अपने आसपास के लोगो को स्वच्छता बनाए र संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया, इन्ही संदेशों को ध्यान में रखते स्वच्छ भारत मिशन कार्यक्रम को भारत के 15 वे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा नई दि के वाल्मीकि बस्ती से शुरुआत की गई। स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने के लिए भा सरकार ने बहुत से कदम उठाये। जैसे – प्रतियोगिताएं, घर–घर कचरा पात्र रखवाना, शौचालय निर्माण के लिए ग देना, स्वच्छ भारत मिशन का उद्देश्य भारत को 2019 तक स्वच्छ बनाना, क्लस्टर और सामुदायिक शौचालय के नि के माध्यम से खुले में शौच की समस्या को कम करना या समाप्त करना। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगो के जी की गुणवत्ता में सुधार करना इस अभियान की सफलता के लिए कुछ कानून भी बनाए गए और अस्वच्छता फैलाने व को जुर्माना भी लगाया गया है। इस प्रकार के स्वच्छ समाज से ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण की कल्पना की जा सक है।

स्वच्छता हमारे घर, सड़क तक के लिए ही जरुरी नहीं होती है। यह देश और राष्ट्र की आवश्यकता होती इससे ना केवल हमारा घर ऑगन की स्वच्छ रहेगा, बल्कि पूरा देश स्वच्छ रहेगा, इसी को मद्देनजर रखते हुए भा सरकार द्वारा चलायी जा रही स्वच्छ भारत मिशन में हमारे देश की कर्णधार युवाओं की योगदान अहम् और सराहनी हैं (क्योंकि हमारे युवा वर्ग इस स्थिति से उभरकर उज्जवल ले गए है उसमें विश्व की कायापलट करने की क्षमता समाहि है स्वच्छता हमारे जीवन का अमूल्य धरोहर हैं।)

स्वच्छ भारत मिशन का तात्पर्य है कि हम जिस परिवेश में रहते है कोई भी प्रकार की गंदगी न हो। भारत व को स्वच्छ करने के लिए युवाओं को गांवो, शहरो के लोगों को स्वच्छता के प्रति शिक्षित करना आवश्यक हैं। इस अभिय की शुरुआत स्वयं से करनी होगी। अगर गांव, शहर स्वच्छ होगा तो देश अपने आप स्वच्छ होगा।

आज युवा वर्ग तकनीकी क्षेत्र में बहुत आगे निकल गए है इस मिशन को पूरा करने में युवाओं को महत्वपूर्ण भूमि अदा करनी है इस लक्ष्य को साकार केवल युवा वर्ग ही कर सकते हैं। स्वच्छ भारत मिशन में युवा वर्ग हमेशा स रहते हैं। गंदगी से किसी भी प्राणी को लाभ नहीं मिल सकता इस गंदगी को अपनी ओर आने ही नहीं देना चाहि

मेरी कल्पना के अनुसार अगर हमें स्वच्छता का संदेश देना है तो सर्वप्रथम हमें युवा वर्ग को प्रेरित कर नए नु निर्माण करना चाहिए। समाचार पत्र, टेलीविजन द्वारा लोगों को स्वच्छता का महत्व बताना चाहिए। नुक्कड नाटक एवं अ गतिविधियों के द्वारा उन्हे समझाना चाहिए। अस्वच्छता से हमें बहुत गंभीर परिस्थितियों का समाना करना पड़ता हैं। इन स विस्तार से समझाना होगा तब लोग समझ सकेंगें और तभी वे अपने आस–पास एवं घरो कि सफाई कर अपने साथ अ परिवार को बीमारियों से बचा सकते हैं।

मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि हमारे महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई है और मैं भी उस इकाई सदस्य हूँ। इस राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी श्री व्ही. के. कोमा सर जी है तथा हमारे महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. यू.के.मिश्र सर जी है जो कि पूर्व जिला संगठक अधिकारी रह चुके है दोनो सर जी द्वारा हमें राष्ट्रीय स योजना के प्रत्येक कार्य पर पूर्ण योगदान मिलता है।

मैं राष्ट्रीय सेवा योजना में प्रथम वर्ष में प्रवेश ली, तब तक मुझे राष्ट्रीय सेवा योजना की नियमित गतिविधियों ज्ञान नहीं था, प्रत्येक सप्ताह होने वाली नियमित गतिविधियों मे मैं शामिल हुई मुझे बहुत कुछ सीखने का मौका मि इस प्रकार द्वितीय वर्ष भी मैनें राष्ट्रीय सेवा योजना में "बी" प्रमाण पत्र के लिए पंजीकृत हुई और मेरे लिए सौभाग्य बात यह रही कि मुझे तृतीय वर्ष भी इस राष्ट्रीय सेवा योजना में रहकर "सी" प्रमाण पत्र के लिए कार्य करने का सु अवसर प्राप्त हुआ। इसके लिए मैं श्री विनोद कुमार कोमा सर जी का सद्धय धन्यवाद करती हूँ। राष्ट्रीय सेवा यो में रहकर हमें बहुत कुछ सिखने का अवसर मिलता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना में एक दिवसीय शिविर व सात दिवसीय शिविर का आयोजन होता है। कुछ सीखनें का मौ तो हमें इसी शिविरों के माध्यम से मिलता है जहॉ आपसी प्रेम, समाज सेवा, अनुशासन, समय का सदुपयोग आदि

है। हमारे राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रतीक पुरुष स्वामी विवेकानन्द जी है जो युवाओं पर बल देते है युवाओं को देश का कर्णधार मानते है जो देश को प्रगति की ओर ले जा सकते है।

वास्तव में राष्ट्रीय सेवा योजना एक अपनी अलग पहचान रखता है। प्रत्येक वर्ष "सी" प्रमाण पत्र में पंजीकृत छात्र–छात्राओं को एक परियोजना प्रतिवेदन तैयार करना होता है इस परियोजना प्रतिवेदन में मेरा विषय "स्वच्छ भारत मिशन में युवाओं की भूमिका" है।

IMPORTANCE OF FORESTS TO TRIBAL COMMUNITIES

(Dr. Charulata Philip)

Tribal people live in close harmony with the forests. The distribution of forests, since ancient times has played a significant role in the economy as well as culture and religious aspects. Forest has played an important part in history of civilization as forests and their products have affected the distribution of mankind over the earth surface. They have influenced the religious life of primitive people.

With the development of civilizations, the Indigenous people are known as Tribal people who still follow their old customs. They are large and diverse tribal population scattered across several states in our country . Tribal communities in this region like are distinct in cultures, traditions, languages and customs but have an intimate attachment with forest for their basic needs such as food, fruits, edible roots, leaves, medicinally important plants etc. Tribal people and medical practices are corelated with forest ecology. Their primary health care system is depending on traditional knowledge of medical practices and medicinal herbs. The research and utilization of the traditional medicinal system has become an essential part of the contemporary health care planning.

As India is rich in its tribal population from the immemorial time with their traditional knowledge system which deals with the many significant aspects and the health issues of tribal communities. The tribal people get their cure with the help of their traditional knowledge & understanding of nature. The use of herbal medicines by tribal communities is inclined by distinct socio-cultural practices, religious, beliefs, support of traditional ability and services of traditional medicine men. These people have close relationship with their ambient environment and ecology and basically depend on it for primary health care system, because of they live in remote areas as compared to modern facilities. The records of traditional knowledge on medicinal plants have been considered to support the discoveries of new drugs for the advantage of mankind. Medicinal plants are the base of many societies, for their primary health care system. In primary health care, about 80% of traditional medicines are used which derived from plants. Health and nutrition, particularly in the tribal societies, is intimately connected with forest, but due to deforestation as most of the roots and tubers are not available in many areas, the health and nutrition have been affected. Again, in many cases, it has been noted that certain diseases may be common in certain areas, but remained controlled due to certain food habits based on vegetation available locally.

Tribal people are collectors, head loaders, users and sellers of forest produce. They collect fuelwood for cooking and wage earning purposes, as they do not have any other alternative sources of employment. Women have the capability of picking flowers, oil seeds, medicinally important plant parts, separating fibres, tapping gums and resins, making leaf plates, dyeing, tanning and many other jobs, forming a long list. These jobs form a source of income to them. Forest helps to maintain a balanced ecosystem in nature and supplied sufficient food to the people who depend on it. So, any type of degradation in the forest environment is likely to affect the balance thereby adversely affecting the concerned population.

सांसो का आना जाना

सुरेश कुमार, बी.ए. अंतिम वर्ष

सांसो का आना जाना, जिन्दगी हो जाए, तो अच्छा है
फरिश्तों की बात ही क्या आदमी–आदमी हो जाए, तो अच्छा है।
दुनियां बना बैठी है, बारुद का ढेर
जलने से पहले, गरीब के घर रौशनी हो जाए, तो अच्छा है।
फरिश्तों की बात की क्या, आदमी–आदमी हो जाए, तो अच्छा है।
कोशिशे बहुत कर ली, दुर्गा लक्ष्मी सरस्वती बनाने की,
अब लडकियां मानवीय हो जाए, तो अच्छा है।
सांसों का आना जाना, जिन्दगी हो जाए, तो अच्छा है।

मानव की सबसे बड़ी पूंजी उसका चरित्र

(इंटरनेट से साभार गृहीत) प्रस्तोता – जितेन्द्र ध्रुव, भू

मानव की सबसे बड़ा पूंजी उसका चरित्र होता है और हमे इसकी रक्षा करनी चाहिए क्योंकि यह बिगड़ गया तो शेष कुछ भी न रह पाएगा जीवन में। धन यदि लु भी जाए तो परिश्रम द्वारा पुनः पाया जा सकता है। संसार में जितने भी बड़े काम हु है वे सब योग्य और चरित्रवान व्यक्तियों द्वारा ही संभव हुए है। चरित्रवान का जीव तप, सद्भाव और उसका सदाचार जन जीवन को बड़ी गहराई तक प्रभावित करता है। उसके प्रति लोगों में आस्था व समर्पण का भाव जागृत होता है और उसके सदाचा की सुगंध चारों ओर फैलती है वह अपने चरित्र बल से लोगों को प्रेरित करने में सफल होता है। चरित्र निर्मा के आधारभूत तत्व सत्य एवं ईमानदारी, विनम्रता व सज्जनता, आत्मविश्वास व आत्मनिर्भरता तथा निर्भय और निर्भिकता है। मानव का चरित्र मानव के हाथ में होता है वह चाहे तो एक चरित्रवान बन कर समा में अपना अच्छा प्रभाव छोड़ता है या अवगुणों को अपना कर समाज में अपने प्रति घृणा उत्पन्न करता है मानव जीवन तभी सार्थक हो सकता जब वह समाज में अपनी पहचान एक प्रभावशाली और गुणवान क कर रहे। और यह सिर्फ चरित्रवान बनकर ही संभव है।

धान का कटोरा– छत्तीसगढ़

(इंटरनेट से साभार गृहीत) प्रस्तोता – श्री बंसत कुमार, भू

'धान का कटोरा' कहा जाने वाला छत्तीसगढ़ अंचल मध्यप्रदेश पुनर्गठन अधिनिय 2000 के द्वारा भारत के हृदय प्रदेश 'मध्यप्रदेश' से पृथक होकर 01 नवम्बर, 2000 क भारतीय संघ का 26वां राज्य बन गया, नवनिर्मित राज्य का मानचित्र ध्यान से देखने प समुद्री घोड़े के समान दिखाई पड़ता है, राज्य की राजधानी रायपुर है, आरम्भ से ह छत्तीसगढ़ की अपनी अलग संस्कृति रही है, यद्यपि इस भू–भाग में ऐतिहासिक का में अनेक उथल–पुथल हुए, किन्तु आज भी इसकी भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विशिष्ट जीवन्त रुप में विद्यमान है और यही इसके पृथक् राज्य बनने का आधार है।

प्राचीन समय में यह प्रांत 'दक्षिण कोसल' के नाम से जाना जाता था, स्वतंत्रता के पश्चात् देश क विभिन्न रियासतों के साथ इस प्रांत की कुल 14 रियासतो का 01 जनवरी, 1948 को भारतीय संघ में विल हुआ। मुगल, मराठा काल में यह क्षेत्र छत्तीसगढ़ इसलिए कहा जाने लगा, क्योंकि इस क्षेत्र में कल्चुरि रा की रतनपुर शाखा के विभिन्न राजाओं व जमीदारों के 36 किले थे, छत्तीसगढ़ 1861 में मध्यप्रांत के गव पर उसमें सम्मिलित किया गया, जिसका मुख्यालय नागपुर था एवं 01 नवम्बर, 1956 में पुनर्गठित मध्य प्र अर्थात् मध्यप्रदेश का पूर्वाचल बना और ठीक 44 वर्षो के पश्चात् पृथक् राज्य बना।

इस राज्य की भौगोलिक सीमाएँ 17°46′ से 24°5′ उत्तर अक्षांश तक तथा 80°15′ से 84°20′ पू देशांतर के मध्य विस्तृत है, इस प्रदेश के उत्तर एवं दक्षिणतम बिन्दुओं के बीच की दूरी 360 किमी. एवं पू से पश्चिमतम् बिन्दुओं के बीच की दूरी लगभग 140 किमी है, इसका कुल क्षेत्रफल 1,37,898 वर्ग किलोमीट है (छत्तीसगढ़ आर्थिक समीक्षा 2010–2011 के अनुसार) जो मध्यप्रदेश राज्य का 30–48 प्रतिशत एवं भा का 4.10 प्रतिशत है, छत्तीसगढ़ राज्य मध्यप्रदेश के दक्षिण पूर्व में स्थित है, यही कारण है कि यह मध्यप्रदे का पूर्वाचल कहा जाता था, प्रदेश की सीमा भारत के 06 राज्यों की सीमाओं से घिरी हुई है।

कोरोना वायरस से विश्व अर्थव्यवस्था मंदी की ओर अग्रसर हो रहा है

सुश्री रेणुका भोयर, जनभागीदारी
अतिथि व्याख्याता, वाणिज्य

कोरोना वायरस अर्थात COVID-19 आज एक वैश्विक महामारी के रुप में हमारे बीच उपस्थित है। इस महामारी से न केवल मानव जीवन अस्त–व्यस्त हआ है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था को भी पूरी तरह से झकझाोर कर रख दिया है। चीन के वुहान शहर से शुरु हुआ यह वाइरस आज विश्व के 195 देशों को अपने शिकंजे में ले चुका है। इस वायरस ने शुरुआत में सबसे ज्यादा कोहराम यूरोप महाद्वीप के देशों खासकर इटली, स्पेन, फ्रांस, इंग्लैंड, जर्मनी आदि में मचाया है, इससे सबसे ज्यादा प्रभावित देशों में इटली का नाम सबसे ऊपर है, जहां लगभग 16000 से अधिक मौतें एवं सवा लाख से अधिक लोग संक्रमित हो चुके है और दूसरा स्थान स्पेन एवं तीसरा स्थान अमेरिका का रहा है।

लेकिन समय के साथ आकड़ों में परिवर्तन हुआ और दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश कहे जाने वाला अमेरिका कोरोना वायरस के संक्रमण से इतना लाचार एवं बेबस हो गया है कि आज संक्रमित व्यक्तियों एवं मौत के आकड़ों के आधार पर विश्व में प्रथम स्थान पर आ गया है। इस वैश्विक महामारी से भारत भी अछूता नही है और हमारे देश में भी इसे राष्ट्रीय आपदा घोषित किया जा गया है। 31 मई 2020 की स्थिति में देखें तो भारत में लगभग 6000 मौते एवं लगभग 1,50,000 लोग संक्रमित हो चुके है। विश्व के लगभग अधिकांश देशों में लॉकडाउन चल रहा है अर्थात लोगों को घर से बाहर निकलने नही दिया जा रहा हैं, ऐसी स्थिति में भारत सहित विश्व के विभिन्न देशों में अधिकांश उद्योग धंधें बंद हो गये है और विश्व में कहीं भी कोई वस्तु का आयात–निर्यात नहीं हो पा रहा है, सिर्फ मेडिकल व्यवस्था को छोड़कर ।

आज विश्व की अर्थव्यवस्था मंदी की ओर अग्रसर न हो इसीलिए भारत सहित विश्व के सभी देश की सरकार अपने–अपने देशों में लोगों को सहायता देने के लिए राहत पैकेज की लगातार घोषणा कर रहे हैं। भारत सरकार ने भी अब तक तीन बार राहत पैकेज की घोषणा कर चुका है। सरकार ने अपने तीसरी घोषणा में देशवासियों के लिए लगभग 20 लाख करोड़ रुपये की आर्थिक पैकेज दिया है। इस राहत पैकेज से न केवल दिहाड़ी मजदूरी करने वाले लोगों को लाभ मिलेगा बल्कि गावों के निर्धन परिवारों एवं छोटे, लघु एवं मझोले उद्योग चलाने वाले व्यवसायियों को भी फायदा होगा।

अब तक की स्थिति मंदी की ओर इशारा तो नहीं कर रहा है, लेकिन समय रहते इस वाइरस से छुटकारा नही पाया तो निश्चित ही पूरा विश्व एक बार पुनः विश्वव्यापी महामंदी की ओर अग्रसर होगा और लोगों के सामने एक साथ दो–दो चुनौतियां होगी, पहली चुनौती कोरोना वाइरस से लड़ना और दूसरी चुनौती बेरोजगारी एवं भुखमरी से लड़ना।

यह स्थिति बनती है तो निश्चित ही हर देश की सरकार के लिए चिंता का विषय बन जायेगा। क्रेडिट रेटिंग एजेंसी " फिंच " ने भारत के वृद्धि दर को घटाकर 2 प्रतिशत कर दिया है, जो कि पिछले 30 साल का न्यूनतम स्तर हैं। एडीबी ने भी एशिया के विकास दर को 2.2 प्रतिशत कर दिया है और वर्तमान हालात को देखते हुए इस वाइरस से वैश्विक अर्थव्यवस्था को लगभग 300 लाख करोड़ रुपए (4 लाख करोड़ डालर) के नुकसान होने का अनुमान लगाया गया है।

"Good nature will always supply the absence of beauty but beauty cannot long supply the absence of good nature."

वक्त– जब जागो तभी सबेरा

(इंटरनेट से साभार गृहीत) प्रस्तोता – श्री एस.एल.ध्रुव, सहायक ग्रेड –

जीवन लम्बा हैं या छोटा पर जीवन के इन पलों को हमने जीया कैसे है ? य
माधने रखता है। अर्थपूर्ण ढ़ंग से समय का सही उपयोग करके जीना ही जीवन
सार्थक करता हैं जिसने भी समय के महत्व को समझा उसका सदुपयोग किया, आ
बढता गया, समय का सदुपयोग ही सफलता की कुंजी है मनुष्य इच्छाओं का दास होत
है परन्तु इन इच्छाओं की पूर्ति हेतु समय का बहुत अधिक महत्व है समय पर कार्य कर
समय को व्यर्थ ना गवांकर कर्मठ होकर आगे बढ़ते रहने वालों की इच्छाएं अवश्य पू
होती है यदि कुछ भूल हो भी जाए तो अनुभव और सीख से समय पर समय के महत्
को समझना बुद्धिमानी है "जब जागों तभी सवेरा" आलस्य को छोड़कर समय संग कर्म करते हुए आगे बढ़
यही उचित है आलस्य मनुष्यता के लिए किसी रोग से कम नहीं ! उसके साथ जीवन में आगे नहीं बढ़ा
सकता।

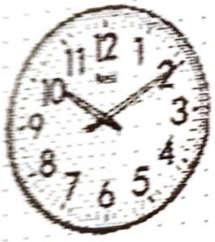

विद्यार्थी जीवन में समय का अधिकाधिक महत्व है जो विद्यार्थ
प्रतिदिन पढ़ाई नहीं करते वो परीक्षा के समय घबरा जाते है मानसिक
परेशानियों भी उन्हे झेलनी पड़ती है नकारात्मक विचार भी निराशा जनक
स्थिति उत्पन्न करने लगते है ! समय का सही उपयोग करने वाले विद्यार्थ
सफलता की ओर अग्रसर रहते है। ईश्वर एक बार में एक ही पल देते है दूस
पल पहले वाला पल छिन जाता है जीवन में सफलता पाने वह हासिल कर
की जिसकी मन में प्रबल इच्छा है एक ही शर्त है समय गवांए बिना हम पू
तन्मयता से उस कार्य में जुट जाएं जिसे हम करना चाहते हैं समर्पण भाव
खुद को झोंक दे ! खुद को आलस्य के अधीन होने से बचाए केवल इच्छा करने से ही कोई वस्तु प्राप्त नह
होती हैं इच्छा और कर्म ही किसी वस्तु को उपलब्ध कराते हैं।

हमें मालूम होना चाहिए कि ईश्वर अपनी संतोनों में भेदभाव नहीं करता जो व्यक्ति कर्म करता
मेहनत करता है ईश्वर कर्मानुसार उन्हें फल देते हैं अपने जीवन में किसी भी उद्देश्य की प्राप्त करने के लि
हमें चाहिए हम अपने समस्त विचारों और कार्य शक्ति को अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए समर्पित करें समय
व्यर्थ ना गवाएं। आज का काम कल पर टालने की आदत भयंकर शत्रु की तरह है। "वह व्यक्ति सफलत
की आशा भला कैसे कर सकता है जो अपने भावी कल पर आज का भी बोझ लादता है"। जो काम आ
करना चाहिए वह कल पर छोड़ दिया जाए तो इस प्रकार आने वाले कल को आज के बाद से बोझिल बन
दिया जाता है।

हरियाली

पेड़ो से आती थी हरियाली, घर के ऑगन अभय खाली।
पेड़ो को मत काटो मेरे भाई, प्रकषति की यही करते भरपाई।
पेड़ लगाओं जीवन बचाओं, इस धरती को स्वर्ग बनाओं।
नहीं मिलेगा जीवन दोबारा, प्रदुषण मुक्त हो पर्यावरण हमारा।
विकास और विज्ञान की कैसी हवा आई, खुद के हाथों से हमनें खुद की चिंता बढ़ाई।

ग्रंथालय का महत्व

श्रीमती पूर्णिमा रावटे, ग्रंथालय सहायक

शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी जो कि डौण्डी – दल्ली के मध्य ग्राम पंचायत कामता में स्थित है जो आदिवासी क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। इस महाविद्यालय में वर्तमान में लगभ 616 छात्र है जो कि इस महाविद्यालय के ग्रंथालय में उपलब्ध पुस्तकों का लाभ लेते है। इस ग्रंथालय में पाठ्य पुस्तकों का लगभग 7500 एवं 500 अन्य पुस्तकें जैसे – पी.एम.टी, साहित्यिक, विभिन्न लेखकों की रचनाएं, पी. एस.सी., प्रतियोगी परिक्षाओं से संबंधित अनेक पुस्तकें है। वर्तमान में महाविद्यालय के ग्रंथालय प्रभारी श्रीमती राधेश्वरी देशमुख सहायक प्राध्यापक जन्तुविज्ञान एवं सहयोगी श्री के. एस.साहू, प्रयोगशाला तकनीशियन के दिशा निर्देशानुसार ही कार्य किया जाता है। इस महाविद्यालय के छात्र–छात्राऐं काफी दूर–दूर से ग्रामीण क्षेत्र से लगभग 10–40 कि.मी. की दूरी से आते है। जिनकी आर्थिक स्थिति कमजोर भी रहती है। जिनके पास पुस्तके लेने तक के पैसे नहीं होते वे छात्र–छात्राएं यहा इस ग्रंथालय से पुस्तकों का लाभ के साथ–साथ अपने कैरियर गाइड लाइन या प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधी अन्य पुस्तकों का ज्ञान प्राप्त करके लाभ लेते है।

इस महाविद्यालय के छात्र पाठ्यपुस्तकों का लाभ तो लेते ही है पर साथ ही साथ मासिक पत्रिका, जनरल बुक, विज्ञान प्रगति, समसामयिकी, युवा कैरियर गाइड लाइन, समाचार पत्र, रोजगार नियोजन इत्यादि पुस्तकों का भी लाभ लेते है। जो ग्रंथालय द्वारा उपलब्ध कराई जाती है। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. यू.के.मिश्र सर द्वारा ग्रंथालय में छात्र–छात्राओं के हित को देखते हुए महात्मा गांधी वाचनालय बनाया गया है। जिसमें सभी कक्षाओं के लिए समय एवं दिन निर्धारित है उसी निर्धारित तिथि पर छात्राऐं महात्मा गांधी वाचनालय में बैठकर अपने कैरियर से संबंधित अध्ययन कर ज्ञान का लाभ लेते है।

ग्रंथालय से कई छात्रों को लाभ मिल चुका है शासकीय नौकरी एवं प्राईवेट नौकरी भी मिल चुकी है जैसे – डोमेन्द्र कुमार बी.एस–सी. अंतिम वर्ष, लक्ष्मण ठाकुर बी.ए. अंतिम वर्ष, धनश्याम जैसे कई छात्रों को लाभ मिल चुका है। इसके अलावा समय–समय पर यहा के प्राचार्य एवं सभी प्राध्यापक द्वारा कैरियर गाईड लाइन भी दिया जाता है जिससे छात्र–छात्राओं को कैरियर से संबंधी काफी मदद मिलती है।

प्रारम्भ में इस महाविद्यालय में लगभग 53 छात्र–छात्राएं थी जो बढ़कर वर्तमान में 600 छात्र–छात्राऐं हो गई हैं। पहले परीक्षा परिणाम 50 प्रतिशत था अब ग्रंथालय के लाभ के कारण परीक्षा परिणाम 90 प्रतिशत हो गया है। चूंकि ग्रंथालय में समस्त प्रकार की पुस्तकें होने से छात्र–छात्राओं की नोट बुक संबंधी एवं कैरियर संबंधी पुस्तकें का आसानी से लाभ मिल जाता है। इसी तरह समस्त महाविद्यालयनीन कर्मचारी एवं अधिकारी का महाविद्यालय परिवार छात्रों की चहोमुखी विकास के लिए तत्पर रहता है और हमेशा रहेगा।

"एक समझदार आदमी को सारस की तरह होश से काम लेना चाहिए और जगह, वक्त और अपनी योग्यता को समझते हुए अपने कार्य को सिद्ध करना चाहिए।"

चाणक्य

चुनाव में बढ़ता धनबल प्रयोग
(चुनौतियां एवं समाधान)

कु. प्रीति ठाकुर, बी.ए. द्वितीय व

भारत एक लोकतांत्रिक राष्ट्र है एक लोकतांत्रिक राष्ट्र में चुनाव का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि चुनाव लोकतांत्रिक शासन का आधार है। स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव व्यवस्था लोकतंत्र को स्थापित प्रदान करती है लोकतंत्र में जनता ही सत्ताधारी होती है, उसकी अनुमति से ही शासन होता है। लोकतंत्र में जनता का जनता के लिए, जनता द्वारा शासन व्यवस्था को प्रमाणिक माना जाता है।

चुनावों में धनबल का प्रयोग कुछ दशकों में बढ़ा है। देश में बदहाली का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है जो लोग चुनाव जीतने के लिए इतना अधिक खर्च कर सकते है तो वे जितने के बाद क्या करेंगे ? पहले अपनी जेब भरेंगे और मुख्य बात तो यह है कि यह पैसा आता कहॉ से है ? कौन देता है इतने रुपये ? कई कम्पनियां है जो इन सभी चुनावी दलो को पैसा देती है। चंदे के रुप में। चन्दा के नाम पर यदि किसी बड़ी कम्पनी ने दी है तो वह नीतियों में हेर फेर करवा लेती है। लगभग सभी चुनावी दल है जो चंदा के नाम पर भारी भरकम रकम कम्पनियों से लेती है एवं उन पैसों से जनता एवं अपने चुनाव के प्रचार प्रसार में खर्च करती है।

वर्तमान की राजनीति में धन बल का प्रयोग चुनाव में बड़ी चुनौती है। सभी इसे पैसों के दम पर चुनाव जीतना चाहते है, कोई भी ईमानदारी और सेवाभाव के साथ चुनाव नही लड़ना चाहते है। राजनीति के खिलाड़ी सत्ता के दौड़ में इतने व्यस्त है कि उनके लिए विकास, जनसेवा, राष्ट्र निर्माण की बात करना व्यर्थ हो गया है। सभी पार्टियां जनता को गुमराह करती नजर आती है। सभी पार्टिया नोट के बदले वोट चाहती है। राजनीति अब एक व्यवसाय बन गया है। सभी जीवन मूल्य बिखर गए है धन तथा व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए सत्ता का अर्जन सर्वोच्च लक्ष्य बन गया है।

एक प्रत्याशी का चुनाव में हुए खर्चो को जब देखते है तो बड़ा चौकाने वाला होता है। चुनावों में पार्टिया करोड़ो रुपये खर्च करती है लेकिन उसका हिसाब किताब नहीं होता हैं। जाहिर सी बात है जो करोड़ रुपये खर्च करेगा वह चुनाव जीतने के बाद उसकी भरपाई तो वह शासन के पैसों से ही करेगा। अब सवाल यह है कि समस्या गम्भीर है तो इसका समाधान ढूढ़ने की कोशिश क्यों नहीं किया जा रहा है। क्योंकि उनका इसमें अपनी ही हानि दिखाई देती है।

राजनीति में बढ़ रहे धन बल के प्रयोग से गरीबो के लिए चुनाव प्रक्रिया में भाग लेने के अवसर छूट रहे है। चुनाव में बढ़ते धन के इस्तेमाल का जन प्रतिनिधित्व पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ रहा है। इससे निपटने के लिए चुनाव व्यवस्था में सुधार अति आवश्यक हो गया है।

इस प्रकार चुनाव प्रक्रिया में हो रहें धन बल प्रयोग को रोकना अति आवश्यक हो गया है। इसमें फिजूल खर्ची तो रुकेगी ही, साथ – साथ ईमानदार, गरीब, स्वाभिमानी, सेवाभाव वाले लोग भी चुनाव में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेंगें। इससे राष्ट्र को लाभ होगा, चुनाव में हो रहे फिजूल खर्ची को रोकने हेतु अब तक कम करने हेतु बहुत से सुधार किये गये है लेकिन उसमें और भी सुधार की आवश्यकता है।

ये चीजें हमें नष्ट कर देगी

सिद्धांतहीन	–	राजनीति	मानवता बिना	–	विज्ञान
नैतिकता विहीन	–	व्यापार	त्याग बिना	–	पूजा महात्मा गांधी

व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. की भूमिका

(इंटरनेट से साभार गृहीत) प्रस्तोता – राहुल देवॉगन (एन.एस.एस. सहायक)

भारत सरकार युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय विभाग द्वारा 24 सितम्बर 1969 को देश के 37 विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का प्रारंभ किया, जिनमें तत्कालीन मध्यप्रदेश के दो विश्वविद्यालय जिसमें से एक पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर भी है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य उच्च शिक्षा से जुड़े छात्र–छात्राओं में समाज सेवा एवं अनुशासन के माध्यम से व्यक्तित्व विकास करना है। "मुझको नहीं तुझको" के सिद्धांत पर आधारित राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से स्वयं सेवक अपने खाली समय एवं अवकाश का सदुपयोग कर समाज निर्माण के साथ–साथ अपनी शिक्षा प्राप्ति के उद्देश्य को भी पूर्ण करते है। इसकी महत्ता इतनी बढ़ गयी है कि आज यह विश्वविद्यालय तक सीमित न रहकर महाविद्यालय एवं स्कूल स्तर पर भी संचालन हो रहा है।

राष्ट्रीय सेवा योजना एक ऐसा मंच है जिससे जुड़कर छात्र–छात्राएं अपना परिवर्तन स्वतः ही महसूस करता है कि वह क्या थे और क्या हो गये। छात्रों के व्यक्तित्व विकास करने के लिये राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा नियमित गतिविधियों के माध्यम से प्रति सप्ताह संस्था पर साफ–सफाई, बौद्धिक परिचर्चा, खेलकूद, वाद–विवाद, प्रश्नमंच, रंगोली आदि कार्यक्रम करवाया जाता है जिससे छात्रों का बौद्धिक विकास हो वही वृक्षारोपण कार्यक्रम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति छात्र–छात्राओं को जागृत किया जाता है साथ ही दूसरी ओर स्वच्छता जागरूकता, मतदाता जागरूकता, नशा उन्मुलन, स्वास्थ्य जागरूकता जैसी रैली निकालकर समाज में जागरूकता का संदेश देते है।

शहर एवं गांव की दूरियों को कम करने हेतु स्वयं सेवकों के लिये एक दिवसीय शिविर, सात दिवसीय शिविर का आयोजन गांवों में किया जाता है। जहां ग्रामीणों के साथ मिल कर स्वयं सेवकों द्वारा परियोजना कार्य के अंतर्गत गांव के गलियों, सड़कों, नालियों की साफ–सफाई, सोख्ता गड्डे का निर्माण, सड़कों, चबुतरों का निर्माझा आदि सश्रम कार्य करते है। वही जन संपर्क के माध्यम से गांव के लोगो से रूबरू होकर ग्रामीण परिवेश को जानने का मौका मिलता है। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से अपने भीतर छीपे कला व योग्यताओं को जन मानस तक लाने का मौका मिलता है जिससे व्यक्तित्व निर्माण में सहायता मिलता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयं सेवकों के चहुंमुखी विकास के लिये राज्य शिविर का आयोजन किया जाता है, जिसमें मुख्यतः उन छात्रों का चयन किया जाता है जो संस्था स्तर पर होने वाले विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते है ताकि उनके नेतृत्व क्षमता का विकास हो। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय शिविर भी आयोजित किया जाता है, जिसके अंतर्गत राष्ट्रीय विशाल शिविर, राजीव गांधी साहसिक योग्यता शिविर, गणतंत्र दिवस परेड, पूर्व गणतंत्र दिवस परेड रासेयो प्रशिक्षण कार्यक्रम इत्यादि शामिल है जो सभी छात्रों के व्यक्तित्व विकास एवं उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का कार्य करती है अर्थात् छात्रों में एक अलग सोच पैदा करती है।

अंत में इतना ही कहना ही चाहूंगा कि युवाओं के विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना का एक महत्वपूर्ण भूमिका है। अपनी शब्दों को मैं स्वामी जी के उन विचार के माध्यम से समाप्त करता हूं कि "आप जैसे विचार करेंगे, वैसे आप हो जायेगें अगर अपने आपको निर्बल मानेंगे तो आप निर्बल बन जायेगें और यदि जो आप अपने आपको समर्थ मानेंगे तो, आप समर्थ बन जायेगे।"

पानी की कहानी

कु तुलसी निषाद, बी.एस–सी. द्वितीय व

अमृत की एक बूंद जैसा पानी,
धरती से कही गायब न हो जाये यह निशानी।
हर काम में आती है उपयोग,
सबको करना चाहिए इसका सदुपयोग।
प्यासे को देता जैसे जीवन–दान है,
गंगा–यमुना की धारा जैसे महान है।

विकास का दर जैसे जैसे जाता,
पानी का स्तर उतना ही घटते जाता।
गॉव–गली शहर औद्योगिक कारखाना,
पानी सबसे चाहता है दूर जाना।
सुन्दर साफ पावन पानी,
गुम न हो जाए कही इसकी कहानी।

बहता रहता बिना काम के यहॉ–वहॉ,
साफ पानी हो जाता गंदा जहॉ–तहॉ।
गंदे पानी का बढ़ता स्तर, होती बीमारी अनेक,
जाता अस्पताल दवाई लाता एक से बढ़कर एक।
आज इन्सान जान के भी अनजान है,
साफ–पानी खो रहा अपनी पहचान है।

अब तो धरती से दूर चला जा रहा पानी,
पानी बचाकर करो प्रायश्चित समझो अपनी नादानी।
एक कदम स्वच्छता की ओर चलकर,
आगे आकर सब पहल करो पानी बचाकर।
जल ही जीवन का लगाओ पानी नारा,
जन–जन को जागरुक करना यही कर्तव्य हमारा।

आशाओं के दीपक

संकलनकर्ता – आर.पी.निषाद (सहा.प्राध्याप

आशाओं के दीपक, तुम भी जला के देखों।
खुले है प्रगति के द्वार, खुद को चला के देखो।।
जब भी करोगे कोशिश, मुश्किलें मिलेगी राह में।
हिम्मत से काम लेकर, रास्ता बना के देखो।।
कीचड़ खिले कमल को, करते प्रभु को अर्पण।
तुम भी हो योग्य पूजने, मन को जगा के देख
जग में वही अमर है, जिसने दिलों को जीता।
मृग–तृष्णा में न जीकर, खुशियॉ लुटा के देखो।।
नभ का वो ध्रुव तारा, करता यही इशारा।
एक लक्ष्य रख लो अपना, दुनिया भुला के देखो।।
धाम चारों धुमने से, स्वर्ग की करो न चाहत।
श्रम अपने कार्यो में कर, दो बूंद गिरा के देख
आशाओं के दीपक तुम भी जला के देखो।

"आदिवासी क्रांतिवीर कंगला मांझी"

कु. हेमा क्षत्री, बी.ए. द्वितीय वर्ष

कंगला मांझी छत्तीसगढ़ के आदिवासी नेतृत्व के उदीयमान नक्षत्र थे। उनका नाम छत्तीसगढ़ के सम्माननीय स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के रुप में लिया जाता है। कंगला मांझी एक मात्र ऐसे नेता थे जो तत्कालीन सी.पी.एण्ड बरार (मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ व महाराष्ट्र) से अंग्रेजो के विरुद्ध लड़ाई में समाज के असंगठित आदिवासियों को अपने अद्‌भूत संगठन क्षमता से संगठित कर उनके मन में देश प्रेम का जजबा दिया। बस्तर व अन्य स्थानीय राजगद्‌दों, रियासतों के गोड़ राजाओं को अंग्रेजो के विरुद्ध खड़ा किया। कंगला मांझी का असली नाम हीरासिंह देव मांझी था। छत्तीसगढ़ और आदिवासी समाज की अत्यन्त कंगाली भरा जीवन देखकर हीरासिंह देव मांझी ने खुद को कंगला घोषित कर दिया। इसलिए वे छत्तीसगढ़ की आशाओं के केन्द्र में आ गये और न केवल आदिवासी समाज उनसे आशा करता था बल्कि पूरा छत्तीसगढ़ उनकी चमत्कारिक छवि से सम्मोहित था। कंगला मांझी विलक्षण नेता थे।

कंगला मांझी अपने जवानी के शुरुआती दिनों में सन् 1913 से भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़े एवं एक वर्ष में ही जंगलो से अंग्रेजो द्वारा हो रहे दोहन के विरुद्ध आदिवासियों को खड़ा कर दिया। सन् 1914 में बस्तर के अंग्रेज विरोधी गतिविधियों से चिंतित हो अंग्रेज सरकार ने आदिवासियों के आंदोलन को दबाने का प्रयास किया पर कंगला मांझी के अनुरोध पर कांकेर रियासत की तत्कालीन राजमाता ने आदिवासियों का साथ दिया, अंग्रेजो को पीछे हटना पड़ा। कंगला मांझी लगातार जंगलों व बीहड़ो में अपने लोगों के बीच आदिवासियों को संगठित करने में लगे रहे।

सन् 1914 में उन्हें अंग्रेजो के द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। कंगला मांझी के लिए यह गिरफ्तारी वरदान साबित हुइ। इस अवधि में उनकी मुलाकात गांधी जी से हुई और वे गांधी जी के अंहिसा नीति के भक्त हो गये। सन् 1920 में जेल में गांधी जी से उनकी मुलाकार पुनः हुई और इसी समय बस्तर की रणनीति तय की गई। महात्मा गांधी से प्रेरणा लेकर कंगला मांझी ने अपने शांति सेना के दम पर आन्दोलन चलाया और बस्तर के जंगलों में अंग्रेजो को पाव धरने नहीं दिया वे मानते थे कि देश के असल शासक गोड़ है। वे बलिदानी परम्परा के जीवित नक्षत्र बनकार वनवासियों को राह दिखाते रहें।

कंगला मांझी ने आदिवासियों को नयी पहचान देने के लिए सन् 1951 से आजाद हिन्द फौज के सिपाहियों की वर्दी और सज्जा को अपने व अपने संगठन के लिए अपना लिया। सुनने में आश्चर्य होता है पर आंकड़े बताते है कि सिपाहियों की वर्दी से गर्व महसूस करने वाले कंगला मांझी के दो लाख वर्दीधारी सैनिक थे, वर्दी विहिन सैनिक भी लगभग इतनी ही संख्या में थे।

कंगला मांझी आदिवासियों के आदि देव बूढ़ादेव के अनुयायी को अपना सैनिक बनाते थे जबकि लगभग समस्त आदिवासी समुदाय बूढ़ादेव के अनुयायी है इस कारण उनके सैनिकों की संख्या बढ़ती ही गई। छत्तीसगढ़ के अतिरिक्त मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड तक उनके सदस्य फैले हुए है। कंगला मांझी ने समय–समय पर आदिवासियों को संगठित करने व अनुशासित रखने के उद्‌देश्य से पर्चे छपवा कर आदिवासियो में बटवाया करते थे ।

यह दर्द और घनीभूत हो जाता है जब स्थिति इसे वर्षो बाद भी जस की तस दिखती है। आदिवासियों ने कभी दूसरों का अधिकार नहीं छीना, अगर आदिवासियों पर लगातार चतुर चालाक समाज हमला करता रहा। संस्कृति, जमीन और परम्परा पर हुए हमलों से आहत आदिवासी तनकर खड़े भी हुए। लेकिन नेतृत्व के अभाव में बहुत देर तक लड़ाई नही लड़ सकें। प्रतिरोध शक्तियॉ साधन सम्पन्न थी, आदिवासी समाज सीधा, सरल और साधनहीन था।

आज आदिवासी समाज निरंतर आगे बढ़ रहा है इस विकास के पीछे कंगला मांझी का संघर्ष है। उन्होंने अपने लम्बे जीवन को इस समाज के उत्थान के लिए झोक दिया। आज जबकि आदिवासी हितों की

रक्षा के सवाल पर गौर करना अधिक जरुरी है। नकली लड़ाईयों में आदिवासी समाज को उलझा दिया
है। छत्तीसगढ़ का आदिवासी हीरा कंगला मांझी जब तक इनके बीच रहा तब तक नक्सली समस्या छत्तीस
में नही आई। कितने दुर्भाग्य की बात है कि उनके अवसान के बाद उनकी परम्परा का सही ढंग से निर्व
नही किया गया और धीरे–धीरे नक्सली गतिविधियां पूरे प्रान्त में छा गई। समय अब भी है आज आदिवासि
को उचित महत्व देकर पुनः वह दौर लौटाया जा सकता है और कंगला मांझी के स्वप्नों को साकार कि
जा सकता है। बस्तर बाट जोह रहा है अपने सपूत कंगला मांझी का।

प्रतिवर्ष 05 दिसम्बर को डौण्डी लोहारा तहसील के गांव बाघमार में कंगला मांझी सरकार की स्मृति को
करने आदिवासी समाज के अतिरिक्त छत्तीसगढ़ के स्वाभिमान के लिए चितिंत जन एकत्र होते है।
राजमाता फुलवादेवी एवं जीवंत आदिवासी सैनिकों को देखकर मन कंगला मांझी के प्रति कृतज्ञता से
जाता है।

" धन्य हे मोर छत्तीसगढ़ के सपूत "

विश्व एड्स दिवस

बृजेश कुमार, बी.ए. अंतिम

विश्व एड्स दिवस पूरी दुनिया में हर साल 01 दिसम्बर को लोगों को एड्स (एक्वायर्ड इम्यू
डेफिशियेंसी सिंड्राम) के बारे में जागरुक करने के लिए मनाया जाता है। एड्स ह्यूमन इम्यूनों डेफिशि
(एच.आई.वी.) वायरस के संक्रमण के कारण होने वाला महामारी का रोग है। यह दिन सरकारी संगठनों
सरकारी संगठनों, नागरिक समाज और अन्य स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा एड्स से संबंधित भाषण
सार्वजनिक बैठकों में चर्चा का आयोजन करके मनाया जाता है। विश्व एड्स दिवस समारोह अन्तर्राष्ट्रीय
पर सबसे ज्यादा मान्यता प्राप्त स्वास्थ्य दिन समारोह बन गया है। विश्व एड्स दिवस स्वास्थ्य संगठनों
लिए लोगों के बीच जागरुकता बढ़ाने, इलाजो के लिए सम्भव पहुंच के साथ – साथ रोकथाम के उप
पर चर्चा करने के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है।

विश्व एड्स दिवस की पहली बार कल्पना सन् 1987 में अगस्त के महीनें में थॉमस नेहर और
डब्ल्यू बन्न द्वारा की गई थी, थॉमस नेहर और जेम्स डब्ल्यू बन्न दोनों डब्ल्यू.एच.ओ. (विश्व स्वास्थ्य संग
जिनेवा स्विटजरलैंड के एड्स ग्लोबल कार्यक्रम के लिए सार्वजनिक सूचना अधिकारी थे। उन्होंने एड्स दि
का अपना विचार डॉ. जॉन नाथन मन्न (एड्स ग्लोबल कार्यक्रम के निर्देशक) के साथ साझा किया, जि
इस विचार को स्वीकृति दे दी और वर्ष 1998 में 01 दिसम्बर को विश्व एड्स दिवस के रुप में मनाना
कर दिया। हर साल 01 दिसम्बर को सही रुप में विश्व एड्स दिवस के रुप में मनाने का निर्णय लिया
है। विश्व एड्स दिवस के विषय को यू.एन एड्स ने बीमारी के बारे में बेहतर वैश्विक जागरुकता बढ़ा
लिये विशेष वार्षिक विषयों के साथ इसका आयोजन किया।

विश्व एड्स दिवस पर लोग लाल रिबन पहनकर एड्स से पीड़ित व्यक्तियों के प्रति
भावनात्मकता व्यक्त करते है। ऐसे लोगों में इस मुद्दे के प्रति जागरुकता बढ़ाने के लिए किया जात
इसके साथ ही इस रोग से लड़ रहे लोगों के लिए सहायता राशि जुटाने के लिए भी लोग इस लाल
को बेचते भी है। इसी तरह यह इस बीमारी से लड़ते हुए अपनी जान गवानें लोगों के प्रति श्रद्धांजली
करने का भी एक जरिया है। जैसा कि यू.एन. एड्स के द्वारा बताया गया है कि यह लाल रिबन एड
वी. से ग्रस्त व्यक्तियों तथा उनके देखभाल करने वाले लोगों के प्रति सदभावना प्रकट करने का एक
है विश्व एड्स दिवस के मौके पर लाल रिबन पहनना लोगों के भीतर इस मुद्दे पर जागरुकता लाने
इस बीमारी के पीड़ितों से होने वाले भेदभाव को रोकने का एक अच्छा तरीका है। यह लाल रिबन
जागरुकता लाने के लिए पूरे विश्व भर में कही भी उपयोग किया जा सकता है।

वर्तमान में गांधी जी की विचारों की प्रांसगिकता

कु. यमुना कोमा, बी.ए. द्वितीय वर्ष

गांधी जी अंहिसा के पुजारी होने के नाते भली–भांति समझ चुके थे कि हिंसा की बात चाहे किसी भी स्तर पर क्यों न की जाए, परन्तु वास्तविक यही है कि हिंसा किसी भी समस्या का सम्पूर्ण एवं स्थायी समाधान कतई नहीं है। जिस प्रकार आज के दौर में आतंकवाद व हिंसा विश्व स्तर पर अपने चरम पर दिखाई दे रही है तथा चारों ओर गांधी के आदर्शो की प्रांसगिकता की चर्चा छिड़ी हुई है, ठीक उसी प्रकार गांधी जी अंहिसा की बात उस समय करते थे जबकि हिंसा अपने चरम पर होती थी। उदाहरण के तौर पर सन 1914 से लेकर 1918 तक प्रथम विश्व युद्ध के दौरान गांधी जी ने अंहिसा की आवाज बुलन्द की।

इसी प्रकार सन् 1939 से 1945 तक चलने वाले द्वितीय विश्व युद्ध की भीषण हिंसा के समय भी गांधी जी अंहिसा परमो धर्मः जैसे शांति सूत्र का प्रचार व प्रसार करते दिखाई दिए। गांधी जी हथियारों के विरुद्ध हथियार प्रयोग करने के बजाए हथियार के विरुद्ध विचारों का प्रयोग करने की बात कहते थे। उन्होनें अन्याय व असमानता के विरुद्ध युद्ध करने का एक इन्सानी तरीका समाज को दिया था।

वर्तमान में गांधी के विचारों की प्रांसगिकता पर विचार करने के पूर्व यह जानना आवश्यक है कि गांधी के व्यक्तित्व एवं विचार दर्शन का मूल आधार क्या है ? व्यक्तित्व की दृष्टि से विचार करें तो गांधी जी राजनीतिक है दार्शनिक है समाज सुधारक है आचार शास्त्री है अर्थशास्त्री है, क्रान्तिकारी है समग्र दृष्टि से गांधी के व्यक्तित्व में इन सबका सम्मिश्रण है। मगर इस व्यक्तित्व का मूल आधार धार्मिकता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सत्य और अंहिसा का उद्घोष कर आन्दोलन की धार को और पैनी करने वाले महात्मा गांधी किसी परिचय के मातहत नहीं है। उन्होंने स्वतन्त्र भारत के पुनःनिर्माण के लिए रामराज्य का स्वप्न देखा था। वे कहा करते थे कि "नैतिक और सामाजिक उत्थान को ही हमने अहिंसा का नाम दिया है।" स्वराज्य में हमारी शासन प्रमाली हमारी अपनी प्रतिभा के अनुसार होगी। सत्य यानि कि केवल प्रासंगिकता, ईमानदारी नहीं बल्कि वह परम सत्य जो सर्वव्यापक है और उत्पत्ति व लय से परे है।

वह स्वराज्य प्राप्त करने का निश्चित रास्ता है। इसको समझाने के लिए वे कहते थे कि घ्येयवादी जीवन के चार तत्व होते है – साधक साधन साधना और साध्य। साध्य का अर्थ लक्ष्य या घ्येय से है। यदि किसी समय हमारा लक्ष्य धन कमाना है तो धन कमाने के भी कई तरीके हो सकते है। यह धन चोरी करके भी प्राप्त किया जा सकता है और पुरुषार्थ व पराक्रम से भी लेकिन पुरुषार्थ व पराक्रम के प्राप्त धन "पवित्र धन" कहा जायेगा और चोरी से प्राप्त धन "चोरी का धन"। इसलिए साध्य की पवित्रता के लिए यह आवश्यक है कि साधन साधक व साध्य तीनो पवित्र हो। किसी एक के पवित्र होने से काम नहीं चलेगा। "गांधी जी के विचार और वर्तमान के संबंध में चिंतन करने पर लगता है कि आज की स्थिति परिस्थिति और लोगों की मनःस्थिति में बहुत अंतर है।"

गांधी के विचारों की प्रांसगिकता का सवाल उनकी जन्म और पुण्यतिथि पर हमेशा उठता है, लेकिन गांधी तो आजादी मिलने के बाद से ही अलग–अलग पड़ गये थे। गांधी के सपनों को गांधी के सच्चे सपूंतो ने ही तार–तार करके रख दिया है।

गांधी जी का भारत के सन्दर्भ में तात्कालिक उद्देश्य था– भारत की स्वाधीनता। भारत को सामान्य जनता में स्वाभिमान को जगाने, स्वाधीनता प्राप्ति के लिए, सामूहिक चेतना का निर्माण करने, भारतीय राष्ट्रीयता के नव उत्थान का शंखनाद करने तथा दासता की श्रृखलाओं को चूर–चूर करने का काम जिन लोगों ने किया उनको प्रेरणा देने का सबसे अधिक काम राष्ट्रपिता ने किया।

चल पड़े जिधर दो डग मग में, चल पड़े कोटि पग उसी ओर।।

गांधी का इस दृष्टि से देश भक्तों की पंक्ति में सबसे ऊंचा स्थान है। इतना होते हुए भी गांधी को देश भक्ति मंजिल नहीं अनन्त शक्ति तथा जीव मात्र के प्रति प्रेमभव की मंजिल तक पहुंचने के लिए यात्रा का एक पड़ाव मात्र है। सर्वोच्च शासन व्यवस्था लोकतन्त्र, पूंजीवादी तन्त्र में परिवर्तित हो गई है। भारत का निर्माण करने वालों ने आधुनिक शिक्षा बनाने की दिशा में गांधी के विचारों को दर किनार कर दिया। जिससे एक गरीब बालक के लिए वांछित शिक्षा प्राप्त करना दुष्कर हो गया है। तेजी से बदल रहे परिवेश के कारण गांधी के विचारों की प्रासंगिकता आज महती आवश्यकता के रुप में अनुभव की जा रही है।

माँ

कु. छबीला यादव, बी.एस–सी. द्वितीय

माँ रखती है अपने बच्चों को फुलवारी की तरह,
फूलों के लिए होती है खुशबू जैसे नूरानी की तरह।
फिकर की रात में माँ को गोद में,
सुकून की नींद होती है।
पतझड़ के मौसम मे माँ ही तो,
बारिश की पहली बूंद होती है।

कहते है माँ करुणा की मूर्ति,
ममता का सागर है।
गुरु से पहले माँ ही तो,
ज्ञान का सागर है।
माँ सुनाती है लोरी, किस्से और कहानी,
जिससे हमारा जीवन हो जाए आसमानी।

बिना कहे पहचान जाती है माँ,
अपने बच्चों की परेशानी।
ताकि हमारे जीवन से दूर हो सके,
दुःख की निःशानी।
हम पतंग माँ हमारी डोर है,
डोर के बिना पतंग का नहीं मोल है।

उसी तरह माँ के बिना,
हमारा जीवन भी नहीं अनमोल हैं।
माँ ही तो हमारे जीवन के,
हर उलझन का तोड़ है।
माँ को हम कभी करे न निराश,
क्योंकि इनसे दूर हो जायेगा ज्ञान का प्रकाश।

माँ सिखाती है मन के कोने में,
उम्मीद की आस।
सबको अपनी माँ पर होना चाहिए,
गर्व और विश्वास।
भगवान से यही दुआ है,
किसी को माँ से दूर होना न पड़े।

जीवन के अंतिम क्षणों में,
माँ को बेसहारा छोड़ना न पड़े।
माँ ने अपने बच्चों के,
हर दर्द को आत्म सात किया है।
शायद तभी संसार में धरती पर,
माँ को ईश्वर का दर्जा दिया है।

जल संरक्षण एवं संर्वधन

ईशु मानकर, बी.ए. अंतिम

जल, जीवन के लिये सबसे अहम प्राकृतिक संसाधन है। आगामी दशकों में यह विश्व के कई क्षेत्रो में एक गंभीर अभाव की स्थिति में चला जायेगा। यद्यपि जल पृथ्वी में सबसे प्रचुर मात्रा में पाया जाने वाला पदार्थ है फिर भी यह समान रुप से वितरित नहीं है। अक्षांश में परिवर्तन, वर्षा के तरीके (पैटर्न), स्थलाकृति इत्यादि इसकी उपलब्धता को प्रभावित करते है।

जल एक ऐसी सम्पदा है जिसका किसी तकनीकी प्रक्रिया के माध्यम से, जब जी चाहे, तब उत्पादन या संचयन नहीं हो सकता। मूल रुप से, पृथ्वी पर कुल मिलाकर, अलवण जल और समुद्री जल की मात्रा स्थायी रुप से तय है।

जो अलवण जल हमारे जीवन के लिए इतना जरुरी है, उसकी मात्रा पृथ्वी पर पाए जाने वाले पानी की कुल मात्रा की केवल 2.7 प्रतिशत है। इस 2 प्रतिशत का लगभग सारा भाग बर्फ की टोपियों, हिमनदियों (ग्लेशियरों) और बादलों के रुप में पाया जाता है। अलवण जल का शेष बचा हुआ थोड़ा सा भाग झीलो और भूमिगत स्रोतो में सदियो से एकत्रित है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि समुद्रों में पाया जाने वाला खारा पानी, जो कि इस पृथ्वी पर अलवण जल का परम स्रोत है। वर्षा का लगभग 85 प्रतिशत जल प्रत्यक्ष रुप से समुद्र में गिरता है और भूमि में कभी नहीं पहुंच पाता है। वर्षा का जो शेष भाग भूमि पर गिरता है, वह झीलों और कुओं को भर देता है और नदियों के प्रवाह को बढ़ाता रहता है। समुद्री जल के प्रत्येक 50,000 ग्राम के सामने सिर्फ एक ग्राम अलवण जल मानव जाति को उपलब्ध है इस कारण जल एक दुर्लभ और अनमोल संसाधन के रुप में सामने आता है।

प्राचीन काल में, जल को एक अनमोल सम्पदा के रुप में देखा और समझा जाता था। वास्तव में हर प्राचीन संस्कृति पानी को पवित्र संसाधन के रुप में देखती थी। परन्तु बीसवीं सदी में औद्योगिक क्रांति के उदय और उसके फल स्वरुप पश्चिमी भौतिकवाद के आगमन ने प्राकृतिक साधनों को देखने का दृष्टिकोण ही गैर पारम्परिक बना दिया है।

ठीक उसी प्रकार जैसे बीसवी सदी तेल के चारों ओर घूमती थी, वैसी ही इक्कीसवीं सदी स्वच्छ और पेयजल के मुद्दों के ऊपर फोकस करेगी। पानी और पर्यावरणीय संरक्षण से संबंधित मुद्दों का हल ढूंढने की दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कदम लोगों के दृष्टिकोण और आदतों में परिवर्तन लाना होगा। यदि दुनिया भर के लोग ही पानी को एक ऐसे सस्ते साधन के रुप में देखेंगें जिसको जितना ज्यादा बर्बाद किया जा सकता है तब उस स्थिति में, संसार की बेहतरीन नीतियां और तकनीकें भी पानी के अभाव को कम नहीं कर सकती।

भारत की बढ़ती जनसंख्या की वर्तमान दर को देखते हुए और उपलब्ध जल सम्पदा की बढ़ती मांग की पूर्ति के प्रयास में भारत, आगामी पच्चीस वर्षो में सबसे अधिक प्यासे लोगो की जनसंख्या के रुप में एक नकारात्मक छवि बनाने में सफल हो जाएगा। ऐसी स्थिति को रोका नहीं जा सकता। यदि उपलब्ध संसाधनों का ध्यान पूर्वक, बुद्धिमता के साथ प्रयोग नहीं होता है। शहरीकरण, तेज गति से होता औद्योगीकरण और एक लगातार बढ़ती जनसंख्या ने अधिकतर सतही जलाशयों को प्रदूषित करके उनको मानवीय प्रयोग के लिये अनुपयुक्त बना दिया है। बढ़ती हुई जरुरतों के साथ–साथ इनकी भूमिगत जल पर निर्भरता बढ़ गई है। असंख्य बोर छिद्रो द्वारा भूमिगत जल के अत्यधिक दोहन जल तालिका में गिरावट कर दी है। ऐसा अनुमान है कि सन् 2050 तक भारत की आधी जनसंख्या शहरी होगी और यह पानी के गंभीर अभाव को समस्या को झेलेगी। अतः जरुरत है अभी से हम सभी जल संरक्षण एवं संर्वधन के तरीके को अपनायें जिससे जल क्षमता में वृद्धि हो, साथ ही साथ इसका व्यापक प्रचार प्रसार कर लोगों को जल संकट के प्रति सचेत करने की है।

पितृ–तर्पण का महत्व

डॉ. उमाकान्त मिश्र, प्रभारी प्राचा
शास. कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी, जिला–बालोद (छ.ग

प्रत्येक वर्ष के आश्विन मास कृष्ण पक्ष में अपने पूर्वजों के प्रति अपार श्रद्धा अर्पि करने का सुअवसर आता है। तर्पण को पितृयज्ञ के रुप में जाना जाता है। गृहस्थ मान को तर्पण कर पुण्य का भागी अवश्य बनना चाहिए। श्रद्धा के साथ तर्पण करने से जन्म से लेकर वर्तमान त के ज्ञात–अज्ञात सभी प्रकार के पापों से मुक्ति मिलती है। गृहस्थ धर्म का जो व्यक्ति पितृपक्ष मे तर्पण न करता है उसके शरीर का पाप से रक्त–शोषण होता है। तर्पण करने के लिए सोना, चांदी, तांबा, कांसा पात्र उत्तम माना गया है। मिट्टी तथा लोहे का पात्र वर्जित है।

तर्पण करने के लिए कुश की अंगूठी, चावल, जव, तिल, सुपारी और जल की आवश्यकता होती कुश के अग्रभाग से अक्षत (चावल) के साथ देवताओं का, मध्य भाग से जव के साथ दिव्य मनुष्य सन सननन्दन, सनातन, कपिल आदि का तथा मूल भाग से तिल के साथ जल देकर पितरों का तर्पण किया जा है।

तर्पण कर्म वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। विश्व में हुए सर्वेक्षण में पाया गया है कि आधुनिक युवा पीढ़ी पुस्तकीय ज्ञान तो प्राप्त कर रहा है परन्तु उसमें भावनात्मक भावों निरंतर कमी आ रही है। भारत में तर्पण के माध्यम से पूर्वजो से भावनात्मक रुप से जुड़कर भावनात्मक को जाग्रत रखा जाता है तथा समाज और राष्ट्र के प्रति आत्मानुशासित रहकर सेवा का संकल्प लिया जा है। तर्पण में पिता पितामह (दादा), प्रपितामह (परदादा), माता, मातामही (दादी), प्रमातामही (परदादी), माता (नाना), प्रमातामह(परनाना), वृद्धप्रमातामह (वृद्धपरनाना), मातामही (नानी), प्रमातामही(परनानी), वृद्ध प्रमाता (वृद्धपरनानी) का विशेष रुप से तर्पण किया जाता है,परन्तु अन्य जनों के लिए भी तर्पण का विधान कि गया है शास्त्र में कहा गया है –

"नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः । तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया।।

ये ऽबान्धवा बान्धोवश्च ये ऽजन्मनि बान्धवाः। ते तृपिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तो ऽभिवाच्छति।।

तात्पर्य यह है कि नरक आदि की पीड़ा यातना भोगने वाले प्राणी को उबारने के लिए जो ह इस जन्म में या पूर्व जन्म में बंधु रहे है, जो बंधु नहीं भी रहे हैं – उन सभी को तृप्त होने के लिए जल अ है। अतीत कुल कोटि में, सप्तद्वीपों में किसी भी प्रकार से हमारे जो पूर्वज निवास कर रहे है, उन सबकी तृ के लिए जल अर्पित है। हमारे कुल में जिनकों पुत्र नहीं भी हुआ है अर्थात् अपुत्र मृत्यु हुई है पिण्डदान नहीं भी हुआ है तो उनकी तृप्ति के लिए भी वस्त्र में थोड़ा तिल लेकर जल से निचोड़ कर उन्हें जल अ किया जाता है। ऐसे तो पिता की पुण्य तिथि पर सभी पितर विराजमान हो जाते है तथा उस तिथि पर ब्राह्म भोजन तथा गरीब भोजन, दान–दक्षिणा का महत्व है परन्तु तिथि ज्ञात नहीं रहने पर माता के लिए मातृन तथा पिता एवं अन्य के लिए पितृमोक्ष (अमावस्या) को दान, भोजन, दक्षिणा, अन्य–वस्त्र दान का महत्व

तर्पण में पितामह भीष्म को विशेष रुप से सभी लोग जल अर्पित करते है तथा अंत में भगवान को अर्घ्यदान किया जाता है। तर्पण पूर्ण करने के अंत में श्रद्धा के साथ यथा शक्ति किये गये देवता, मनु पितरों के लिए किये गये तर्पण को पितृ स्वरुप भगवान विष्णु को प्रसन्न करते हुए ब्रहमार्पण कर दिया ज है। इससे पापों से मुक्ति मिलती है तथा न्यून (थोड़ा) किया हुआ कार्य भी पूर्णता (अधिकता) का रुप ले ले है। अंत में तीन बार "ऊँ विष्णवें नमः" का उच्चारण कर तर्पण विधि की समाप्ति का विधान बतलाया गया

इस काल में पितरों से भावनात्मक रुप में जुड़कर केन्द्रित रहने के लिए अन्य शुभ कार्य का निषेध बतलाया गया है। तर्क–वितर्क, बुद्धि लगाकर अथवा श्रद्धा के बिना भार समझकर तर्पण करने से आकांक्षा फलीभूत नहीं होती। गया (बिहार) पितृमोक्ष के लिए सर्वथा उपयुक्त स्थान माना गया है। बहुत से लोग प्रचलित मान्यता के अनुसार गया में श्राद्ध करने के बाद पितृ तर्पण करना बंद कर देते हैं – यह उचित नहीं है। तर्पण तो वंशजो के लिए पूर्वजो की पुण्य तिथि मनाने का, उनसे भावना के साथ जुड़कर स्मरण करने का तथा उनसे सदा फूलते–फलते रहने का आशीर्वाद लेने का अवसर होता है। इसलिए तर्पण प्रत्येक वर्ष करना चाहिए।

राज्य स्तरीय शिविर का अनुभव

कु. कामिनी यादव, बी.ए. द्वितीय वर्ष

शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का सदस्य मैं बी. ए. प्रथम वर्ष में बनी जब कार्यक्रम अधिकारी वही. के. कोमा सर के द्वारा कक्षा में आकर एन. एस. एस. के सिद्धांत, उद्उेश्य एवं महत्व को बताये और एन. एस.एस. में रहकर कैसे समाज एवं देश की सेवा किया जा सकता है। शुरु से ही यह सब कार्य मुझे अच्छे लगते थे।

स्वयं सेवक बनते ही मैं एन. एस.एस. की हर गतिविधि में नियमित रुप से भाग लेती रही चाहे वह साफ–सफाई हो, बौद्धिक परिचर्चा, रैली हो या फिर सांस्कृतिक कार्यक्रम हो। यह सभी कार्य हमें निश्चित रुप से कोई न कोई सीख जरुर दे जाती है । इस कार्य से न केवल हम समाज के विचारधारा से जुड़ते हैं, बल्कि हमारा बौद्धिक विकास भी होता है। एन. एस.एस. हमें एकता एवं अनुशासन में रहना सिखाता है और मैं गर्व के साथ कह सकती हूं कि आज जो कुछ मैने सीखी है, वह सब एन. एस.एस. की देन है।

इस वर्ष मुझे ग्राम खैरवाही में आयोजित सात दिवसीय विशेष शिविर में अपने ग्रुप का दलनायक बनने का सौभाग्य मिला। मेरे ग्रुप में कुल नौ सदस्य थे, जिसमें मै लीडर थी। सात दिनों तक लीडरशीप करने से मुझमें नेतृत्व क्षमता का विकास हो गया। इसके बाद इसी वर्ष मेरा चयन राज्य स्तरीय सात दिवसीय शिविर के लिए हो गया। इस शिविर में राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालय के स्वयं सेवक एकत्रित हुए। यह शिविर रायगढ़ जिला के सरिया ग्राम में दिनांक 8/02/2020 से 14/02/2020 तक आयोजित हुआ।

इस शिविर का थीम " नरवा, गरवा, घुरुवा एवं बारी था और इसी थीम को ध्यान में रखकर हम सभी पूरे सात दिनों तक कार्य किये। अलग–अलग जिलों से आये स्वयं सेवकों से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। यह सात दिन हमें हमारे महाविद्यालय के सात दिवसीय शिविर की याद दिला दिये। वही सुबह 5 बजे उठना, योगा करना, नाश्ता करके परियोजना कार्य में जाना, आकर खाना खाना फिर बौद्धिक परिचर्चा में विभिन्न अधिकारियों का आकर शिक्षाप्रद बातें बताना और रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करना, एक साथ मिलकर अनुशासन में रहना। इस शिविर से मुझे बहुत कुछ सीख मिली।

मै स्वयं सेवकों से अनुरोध करुंगी कि भविष्य में आपको ऐसा अवसर मिले तो उसका पूरा फायदा उठाना। अंत में मै एन. एस.एस. एवं कार्यक्रम अधिकारी को धन्यवाद देना चाहूंगी कि उन्होने मुझे यह अवसर प्रदान कियें जय हिन्द, जय एन. एस.एस।

उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जायें।
विश्व एक विशाल व्यायाम शाला है, जहॉ हम खुद को मजबूत बनान के लिए आते है।
स्वामी विवेकानन्द

छत्तीसगढ़ का बस्तर क्षेत्र

(इंटरनेट से साभार गृहीत) प्रस्तोता – श्री शंभू सिंह भैसवारे, (जे.बी.सी.चौकी

छत्तीसगढ़ का बस्तर क्षेत्र अपनी कला विरासत के लिए प्रसिद्ध है। य
आदिवासी एवं गैर आदिवासी संस्कृति का मिला जुला अद्भुत आंचलिक स्व
देखने को मिलता है। संस्कृति के इस आंचलिक स्वरूप के दर्शन यहां
आदिवासी लोक–कलाओं में स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। यहां की कला परम्प
आदिवासी तथा लोक नृत्य इतने घुल–मिल गये हैं कि उन्हें पृथक देख प
संभव प्रतीत नहीं होता। यहां के गोंड़ आदिवासी चित्रकार शिव–पार्वती के चित्र बना रहे हैं
वैष्णव चित्रकार गोंडिन देवी के।

अपने परम्परागत स्वरूप में आदिवासी कला, क्षेत्र विशेष के किसी आदिवासी समुदाय द्
किया गया कलाकर्म है जो अवसर विशेष से जुड़े अनुष्ठान एवं आवश्यकताओं को सम्पन्न क
हेतु किया जाता है। बस्तर के यदि कुछ विशेष अनुष्ठानिक कलारूपों को छोड़ दे तो अधि
आदिवासी कला समुदायगत होकर भी क्षेत्रीय अथवा आंचलिक प्रतीत होती है।

बस्तर के आदिवासियों में अनुष्ठानिक चित्रों की कोई परम्परा भी नहीं, मुरिया घोटुल
भी चित्र बनाये जाने का उल्लेख है पर अब घोटुल व्यवस्था समाप्त हो चुकी है। गैर आदिवासि
में जगार अनुष्ठानिक लोक चित्र बनाने का प्रचलन था जो अब अवसान पर है। इस बीच सन 1
के आस–पास माड़िया मृतक स्तम्भों पर चित्रकारी की नई पहल आरंभ हुई है। यहां यह त
महत्वपूर्ण है कि माड़िया जनजाति द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाले इन अनुष्ठानिक मृतक स्तम्भों
लोहार, बढ़ई या अन्य गैर आदिवासी समुदाय के लोग चित्रकारी कर रहे हैं। इसके साथ ही अ
मुरिया युवकों ने अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा और पारम्परिक सौंदर्य बोध के बल पर चित्रकारी
बस्तर शैली के विकास के प्रयास किये हैं।

> जैसे एक बछड़ा हजारो गायों की झूंड में अपनी मॉ के पीछे चलता है, उसी प्रक
> आदमी के अच्छे और बुरे कर्म उसके पीछे चलते है।
>
> चाणक

गुरु/शिष्य पर कविता

कु. सावित्री, बी.एस–सी. द्वितीय वर्ष

बंजर में भी फसलें उग जाएँ,
रेगिस्तान में भी फूल खिल जाएँ।
आंधियों में भी रास्ते निकल आए,
जिनकी हर बात सीख बन जाए।
ज्ञान के वो स्त्रोत गुरु कहलाएं,
गवाह रहा है इतिहास सदा।
गुरु के मार्ग दर्शन पर जो शिष्य चला,
उसे कभी कोई बाधा ना रोक सकी।
ना कोई परेशानी हो सकी,
प्रगति पथ पर अग्रसर।
उसने स्वयं अपना इतिहास रचा,
हुआ जब भी नवयुग का निर्माण।
उसकी नीव था गुरु का ज्ञान,
राम को विश्वामित्र थे मिले।
अर्जुन को मिले थे केशव,
चन्द्रगुप्त को चाणक्य मिले।
समय चक्र से परे जिनके ज्ञान की ज्योति में
हर युग में अंधकार रहे।
बने थे शिष्य उनके समाज के पालन हार,
निःस्वार्थ भाव से दी थी उन्होने शिक्षा।
केवल थी एक मंशा ज्ञान के दीप,
जले हर घर हो जगत का उद्धार।
सभी के जीवन में होते है राह दिखाने वाले,
पर गुरु कहलाते है वो जो राह के मायने समझा दे।
तराश कर साधारण से पत्थर को आकर्षक मूरत बना दे,
गुरु कहलाते है वो जो स्वयं से स्वयं का परिचय करवा दे।
आत्मसंयमी, आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी, आत्मरक्षक बना दे,
गुरु एक वरदान है वाणी जिनकी अमृत समान है।
जिसने भी पान किया जीवन सही मायने में उसी ने जिया,
हर नाते–रिश्ते से बड़ा होता है गुरु का ओहदा।
क्या कर सकेगा कोई तुलना उनकी,
क्या दे सकेगा उन्हें कोई दक्षिणा उनकी।
सबके जीवन में है जिनकी खास जगह,
गुरु है वो जिनके समक्ष है नतमस्तक खुद वो खुदा ।।

सरदार पटेल के विचार एवं राष्ट्रीय एकता

कु. मीना, बी.ए. द्वितीय

सरदार पटेल एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा आजाद भारत के पहले गृहमंत्री थे। स्वतंत्रता
लड़ाई में उनका महत्वपूर्ण योगदान था जिसके कारण उन्हें भारत का लौह पुरुष भी कहा जाता है। ल
पुरुष के नाम से मशहूर देश के पहले गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्मदिन 31 अक्टूबर को "राष्ट्री
एकता दिवस" के रुप में मनाया जाता है। सरदार पटेल की ये परिकल्पना थी कि देश एक राष्ट्रभक्ति
तक नहीं बन सकता जब तक उस सामूहिकता का सही संचालन न किया जाए। वर्ष 2014 में प्रधानम
नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इस दिन को "राष्ट्रीय एकता दिवस" घोषित किया गया था।

31 अक्टूबर 1875 गुजरात के नाडियाद में सरदार पटेल का जन्म एक किसान परिवार में हुआ थ
उनके पिता का नाम झेवरभाई और माता का नाम हाडवा देवी था। सरदार पटेल अपने तीन भाई बहनों
सबसे छोटे और चौथे नम्बर पर थे।

सरदार वल्लभ भाई पटेल की शिक्षा का प्रमुख स्त्रोत स्वाध्याय था। उन्होंने लंदन से बैरिस्टर
पढ़ाई की और उसके बाद पुनः भारत आकर अहमदाबाद में वकालत शुरु की।

सरदार पटेल ने महात्मा गांधी से प्रेरित होकर स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया था। सरदार पट
द्वारा इस लड़ाई में अपना पहला योगदान खेड़ा संघर्ष में दिया गया। जब खेड़ा क्षेत्र सूखे की चपेट में
और वहां के किसानों ने अंग्रेज सरकार से कर में छूट देने की मांग की, तब अंग्रेज सरकार ने इस मांग
स्वीकार नहीं किया, तो सरदार पटेल महात्मा गांधी और अन्य लोगों ने किसानों का नेतृत्व किया और
कर न देने के लिये प्रेरित किया। अंत में सरकार को सुनना पड़ा और किसानों को कर में राहत दे दी ग

सरदार पटेल को सरदार नाम बारडोली सत्याग्रह के बाद मिला, जब बारडोली कस्बें में सशा
सत्याग्रह करने के लिये उन्हें पहले बारडोली का सरदार कहा गया। बाद में सरदार उनके नाम के साथ
जुड़ गया।

आजादी के बाद ज्यादातर प्रांतीय समितियां सरदार पटेल के पक्ष में थी। गांधी जी की इच्छा
इसलिये सरदार पटेल ने खुद को प्रधानमंत्री पद की दौड़ से दूर रखा और जवाहरलाल नेहरु को समर्थ
दिया। बाद में उन्हें उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री का पद सौपा गया, जिसके बाद उनकी पहली प्राथमिक
देसी रियासतों ने भारत में शामिल करना था। इस कार्य को उन्होंने बगैर किसी बड़े लडाई झगड़े के बस
किया परन्तु हैदराबाद के ऑपरेशन पोतो के लिये सेना भेजनी पड़ी।

चूंकि भारत के एकीकरण में सरदार पटेल का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण था, इसलिये उन्हें भा
का लौह पुरुष कहा गया, 15 दिसम्बर 1950 को उनकी मृत्यु हो गई और यह लौह पुरुष दुनिया को अलवि
कह गये। सरदार वल्लभ भाई पटेल का देश को आजादी दिलाने में खास योगदान रहा था। आजादी
पहले हमारा देश छोटे–छोटे 562 देशी रियासती में बटा था, सरदार पटेल ने इन सभी छोटे–छोटे टुकड़ो
मिलाकर एक भारत बनाया।

एकता के बिना जनशक्ति, शक्ति नहीं है जब तक इसे ठीक ढ़ंग से सामंजस्य में ना लाया जाए अ
एकजुट ना किया जाए और तब यह आध्यात्मिक शक्ति बन जाती है। मेरी एक ही इच्छा है कि भारत
अच्छा उत्पादक हो और इस देश में कोई अन्त के लिए आसू बहाता हुआ भूखा ना रहे।

प्रेरणा गीत

कु. सुनिता निषाद, बी.ए. अंतिम वर्ष

जीवन में कुछ करना है तो,
जीवन में कुछ पाना है तो,
मन को मार मत बैठो,
आगे–आगे बढना है, तो हिम्मत हारे मत बैठो 2
चलने वाला मंजिल पाता है,
बैठा पीछे रह जाता है,
गहरा पानी सड़ने लगता है,
घर का पानी निर्मल होता है,
पॉव मिले चलने के खातिर,
पॉव पसारे मत बैठे,
आगे–आगे बढना है, तो हिम्मत हारे मत बैठो 2

तेज दौड़ने चलने के खातिर,
दो पग चढ़कर हार गया,
धीरे–धीरे चलकर कछुआ,
देखो बाजी मार गया,
चलो कदम से कदम मिलाकर
दुर किनारे मत बैठो,
आगे–आगे बढना है, तो हिम्मत हारे मत बैठो 2
धरती चलती तारे सर से चॉद
रातभर चलता है,
किरणों का उपहास बाटते,
सूरज रोज निकलता है,
हवा चलें तो महक बिखेरे,
तुम भी प्यारें मत बैठो,
आगे–आगे बढना है, तो हिम्मत हारे मत बैठो 2

गीत

(इंटरनेट से साभार गृहीत) प्रस्तोता – भूपेन्द्र कुमार गायकवाड़, प्रयोगशाला परिचारक

गिरकर उठना उठ कर चलना यह क्रम है संसार का
कर्मवीर को फर्क ना पड़ता किसी जीत या हार का।।
जो भी होता है घटना क्रम रचता स्वयं विधाता है
आज लगे जो दंड वही कल पुरस्कार बन जाता है
निश्चित होगा प्रबल समर्थन अपने सत्य विचार का।।
कर्मो का रोना रोने से कभी ना कोई जीता है
जो विषधारण कर सकता है वह अमृत को पी जाता है
संबल और विश्वास हमें है अपने दृढ़ आधार का।।
त्रुटियों से कुछ सीख मिले तों त्रुटियॉ हो जाती वरदान
मानव सदा अपूर्ण रहा है पूर्ण रुप होते भगवान
चिंतन मंथन से पथ मिलता त्रुटियों के परिहार का।।

युवाओं के प्रति : योग का महत्व

सदाबुददीन, बी.ए. अंतिम

वस्तुतः योग एक विज्ञान है और यह स्वास्थ्य जीवन जीने का माध्यम है। जो सकारात्मक व्यक्तित्व हासिल करने में सहायक है। वर्तमान में वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं में आधुनिक चिकित्सा पद्धति का वर्चस्व है। दवाओं की कीमत गरीब और मध्यम वर्ग की पहुच से बाहर जा रही है। दूसरी तरफ समुदायों को प्रभावकारी सस्ती व असानी से उपलब्ध होने वाले स्वास्थ्य सेवाओं की जरुरत है। योग और अन्य स्वास्थ्य प्रणाली में मौजुद ज्ञान आवश्यक जानकारी अनुभव और क्षमता मुहैया कराते है जो इस तरह के लिए जरुरी है।

"शरीरं ही सत्वमनुविधियते सत्वं च शरीरमं"।

योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की 'युज' धातु से हुई है जिसका मसतत्व है जुड़ना या यूग्म बनना या संयूक्त होना। यह जुडाव व्यक्ति की चेतना के उचित तरीके से निष्पादन से होता है। योग मन शरीर और आत्मा के बीच तालमेल संयम होने और अत्याधिक अनुशासन से उनके एकाकार होने की मनौरौहिक क्रिया है। प्राचीन ग्रंथो में मानसिक स्वास्थ्य के लिए इसके महत्व का उल्लेख किया गया है। योग सूत्र में पंतजली ने लिखा है – 'योगः वित्रवृत्ति निरोधः।' यानी योग का मूल उद्देश्य मन की अस्थिरता को दूर करना है। भगवत गीता में भी कहा गया है कि "समत्वय योगमुच्यते" यानी मन की समत्व की स्थिति में पहुँचना ही योग है।

जीवन का मकसद प्रसन्नता के साथ जिन्दगी जीना है योग खुशहाल जीवन शैली को बढ़ावा देता है अच्छी सेहत बनाए रखना खुशहाल जीवन का बुनियादी सूत्र है। शारीरिक क्रियाशीलता न रखना धुम्रपान शराब, तनाव और गैर सेहतमन्द भोजन जीवन शैली से जुड़ी तमाम समस्याओं की प्रमुख कारण है। योग खुद को विकसीत करने का विमान है यह अन्दर की ऊर्जा को सक्रिय करने का विज्ञान है इंसान की समभावनाओं को पूरी तरह निकालना योग है। बौद्धिकता का संतुलन योग है मुक्त में स्वास्थ्य बीमा है योग स्वास्थ्य सुरक्षा की गारंटी है। योग की प्रकृति धर्म निरपेक्ष और वैज्ञानिक है योग सम्पूर्ण कल्याण के लिए अन्तरिक विकास से जुड़ा विज्ञान है।

गणतंत्र दिवस पूर्व परेड में सम्मिलित होने का अवसर

नीलकमल, बी.एस–सी. प्रथम वर्ष

मैं नीलकमल बी.एस. सी भाग एक का छात्र हूं। महाविद्यालय में प्रवेश लेने के बाद मैने एन.एस.एस. ज्वाइन किया और इसके लिए मुझे महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. यू. के. मिश्र ने मुझे प्रेरित किये। वैसे मेरे लिए एन.एस.एस. कोई नई बाते नही था, क्योंकि मै स्कूल स्तर में एन.एस.एस. से दो साल जुड़ा रहा हूं। मेरा एन.एस.एस. में जुड़ने का मुख्य उद्देश्य था कि वहां प्रति सप्ताह नियमित गतिविधि के बाद नाश्ता का मिलना है।

महाविद्यालय में एन.एस.एस. से भी जुड़ने का यही उद्देश्य था, लेकिन मै जब कार्यकम अधिकारी व्ही. के. कोमा सर से मिला तो मेरा सोच एवं विचारधारा दोनो बदल गये, उन्होने मुझे न केवल एन.एस.एस. का सही मतलब बताया बल्कि समाज सेवा के माध्यम से जीवन में आगे बढ़ने की सीख भी दी।

अब मै स्कूल वाला नीलकमल नही रहा आज मै निर्भीक एवं आत्मविश्वास से परिपूर्ण युवा बन चुका हूं। मैं एन.एस.एस. के हर गतिविधि में भाग लेता हु और अन्य स्वयं सेवकों को गतिविधि में भाग लेने के लिए प्रेरित करता हूं। आज मेरा चयन महाविद्यालय में गणतंत्र दिवस पूर्व परेड दिल्ली में सम्मिलित होने के लिए हुआ।

इसके बाद मैं जिला स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लिया और वहां से भी मेरा चयन हो गया अब मैं विश्वविद्यालय स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लिया और मेरा लगन एवं परिश्रम ने बार पुनः मेरा साथ दिया और अब मै विभिन्न राज्यों के बीच होने वाले चयन प्रकिया में भाग लेने के लिए ग्वालियर (म.प्र) के लिए प्रस्थान किया, जो दिनांक 28/09/2019 से 04/10/2019 तक सात दिनों के लिए आयोजित हुआ।

इन सात दिनों में मुझे स्कूल स्तर में आयोजत सात दिवसीय विशेष शिविर की यादें ताजा हो गई। वही सुबह 5 बजे उठना योग एवं व्यायाम करना फिर नियमित गतिविधि के अन्तर्गत मार्च पोस्ट एवं ड्रील करना, खाना बनाना और बांटना शाम को परिचर्चा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यकम देना बहुत अच्छा लगता था और वह भी विभिन्न राज्यों के स्वयं सेवकों के साथ मिलकर अपने–अपने राज्य की कला संस्कृति को प्रस्तुत करना एक स्वर्णीम यादगार मेरे लिये रहा है।

चूंकि मुझे दुःख हुआ की मेरा चयन दिल्ली में आयोजित गणतंत्र दिवस पूर्व परेड के लिए नही हो सका। जब मै कार्यकम अधिकारी के पास गया तो उन्होने मुझे बड़े प्यार से समझाये कि एक असफलता से जिंदगी नही रुकती, महान वही व्यकित है जो असफलता को हरा कर सफलता प्राप्त करे। "जय हिन्द"

रेडक्रॉस सोसायटी

भुवन साहू, बी.ए. अंतिम वर्ष

पीड़ित मानव की सेवा बिना भेद भाव के करते रहने का विचार देने वाले तथा रेडक्रॉस अभियान को जन्म देने वाले महान मानवता प्रेमी जीन हेनरी ड्यूनेन्ट का जन्म 08 मई 1828 को हुआ था। उनके जन्म दिवस पर 8 मई को रेडक्रॉस के दिवस में पूरे विश्व में मनाया जाता है। उन्होनें समाज सेवा के रुप में उल्लेखनीय कार्य किये और पूरे विश्व को मानवतावादी सेवक के रुप में स्थापित करने के लिए प्रेरित किये। सेवा कार्य के लिए उनके द्वारा गठित सोसायटी को रेडक्रॉस सोसायटी का नाम दिया गया। वर्तमान में 186 देशों में रेडक्रॉस सोसायटी काम कर रही है। सन् 1901 में हेनरी ड्यूनेन्ट को उनके मानव सेवा के कार्यो के लिये उन्हे नोबेल शांति पुरुस्कार मिला। युद्ध में घायल सैनिक की स्थिति से विचलित हैनरी ड्यूनेन्ट 9 फरवी 1863 को जेनेवा में पॉच लोगों की एक कमेटी बनाई। हेनरी की इस परिकल्पना का नाम था इंटरनेशनल कमेटी फर रिलीफ टू द इन्डेड। उसी समय जेनेवा में एक अर्न्तराष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। इसमें 18 विभिन्न देश के प्रतिनिधि शामिल हुए। उसी समय रेडक्रास को कानूनी रुप प्रदान किया गया।

इस संस्था के पहचान के लिये सफेद पट्टी पर लाल रंग के क्रॉस चिन्ह को मान्यता दी गई। आज यह चिन्ह पूरे विश्व को पीड़ित मानवता की सेवा का प्रतीक बन गया है। उसके साथ यह भी महत्वपूर्ण है कि रेडक्रॉस के पहल पर विश्व का पहला ब्लड बैंक अमेरिका में सन् 1937 में खुला। रेडक्रॉस द्वारा चलाये गये रक्तदान जागरुकता अभियान के कारण ही आज थैलेसिमिया कैंसर, एनीमिया जैसी बीमारी से हजारों लोगों की जान बच रही है। इस संस्था का गठन का उद्देश्य युद्ध व प्राकृतिक आपदा जैसी परिस्थितियों में पीड़ितो को मदद करना है। इस संस्था ने प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान घायल हुए सैनिको के उपचार तथा उनके पुर्नवास में बेहद अहम भूमिका निभाई। तब से लेकर आज तक यह संस्था मानव सेवा मे अत्यन्त योगदान दे रही है।

इस महाविद्यालय में सन् 2018 से रेडक्रॉस का आरम्भ हुआ। जिसके प्रभारी श्री योगेश्वर साहू सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान रहे। बाद में इसका प्रभार श्री एन.के.साकरे सहायक प्राध्यापक भूगोल को दिया गया। वर्तमान में राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रभारी श्री व्ही के कोमा सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र ही इसके प्रभारी है। रेडक्रॉस के प्रति महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं में गहरी रुचि है। समय–समय पर उन्मुखीकरण, एड्स दिवस, मानसिक तनाव दूर करने के उपाय आदि विषयों पर महाविद्यालय से प्रेरणास्पद आयोजन होता रहा।

"हमारा महाविद्यालय कंगला मांझी है महान, जिसकी बालोद जिला में है विशेष पहचान"

सुरेश कुमार, बी.ए. अंतिम

हमारा महाविद्यालय कंगला मांझी, जहॉ होती प्राध्यापको की टोली।
जहॉ विशेष विषयों की बातो की होती रंगोली।

जहॉ संकायों में होती भिन्नता, हमारी जिसे मिलकर बनाने में होती है सहभागिता और खुशहाली हमारी
जहॉ राष्ट्रीय सेवा योजना और रेडक्रास की होती है भागीदारी ।

सभी कार्यक्रम में होती है जग–मगाहट सारी, ऐसा है हमारा महाविद्यालय कंगला मांझी।
जहॉ छात्र–छात्राओं में होती है दोस्ती की भावना।

मिलते ही खिल उठते है फूल की तरह इनकी भावना।
ऐसा है हमारा महाविद्यालय कंगला मांझी ।

ग्रंथालय की भूमिका है महान, जहॉ मिलती साप्ताहिक मासिक प्रतियोगिताओं का विशेष ज्ञान।
यहॉ पर दोपहर को होती है केटिंग की टोली जहॉ होती है।

मॉ की याद थके खानों की रंग रंगोली।
गोधुली बेला के होते ही विशेष कक्षा की तैयारी।

ऐसा है हमारे महाविद्यालय कंगला मांझी की सैनिको की तैयारी।
1.7 हेक्टेयर में फैला ये, जिसमें आम, जाम, काजू पपीता की लताओं का घेरा।

जिसके बीच बसा हमारा कंगला मांझी का डेरा।
इन तीन सालो में होती है कुछ अच्छी मुलाकातें।

आ जाती है जिदंगी सवारने, बिछडने की भावुक बाते।
जैसा है हमारे महाविद्यालय कंगला मांझी की कुछ यादें।

सफलता ही परम् सौन्दर्य है .....
क्षमा ही परम् बल है .....
विनम्रता सबसे अच्छा तर्क है .....
और अपनापन .....
सबसे अच्छा संबंध है।

सूचना क्रांति एवं युवा

रवि कुमार, बी.ए. द्वितीय वर्ष

सूचना क्रांति एक ऐसा माध्यम को कहते है जिसमें किसी जानकारी को एक स्थान से दूसरे स्थानों में प्रेषित करते है। इस विकास या बदलाव को सूचना क्रांति कहा जाता है। सूचना के साधनों के अन्तर्गत विभिन्न साधनों सम्मिलित है। जैसे – डॉक, तार, टेलीविजन, फोन, मोबाईल आदि इन सभी साधनों के माध्यमों से लोग एक–दूसरे के पास अपनी सूचनाओं का आदान प्रदान करते है। सूचना क्रांति भारत सरकार द्वारा आरम्भ किया हुआ एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। जिसका मूल उद्देश्य देश के हर विभागों के रिकार्डो को एक ही कड़ी से जोडना है और वही कही है सूचना क्रांति आर्थात इलेक्ट्रानिक डाटा सिस्टमें की कड़ी जो कि गति को बढ़ाने में मददगार है।

सूचना क्रांति वह है जो देश को एक सशक्ति सोसायटी में बदल सके और भारत को एक नया विकसित रुप दे सके। इस मिशन के अन्तर्गत ऐसे आई.टी प्रोग्राम को शामिल किया गया है। जिनकों देश के कोने–कोने में रहने वाले लोगों तक पहुंचाया जा सके जैसा कि देश के विद्यालयों में उपलब्ध पुस्तकालय को जोड़ना ताकि वहा ई लर्निंग मटेरियल को उपलब्ध कराया जा सकें इस प्रकार के क्षेत्रों से देश के किसानों को बीज फसल, खाद एवं अन्य जानकारियॉ उन तक पहुंचानें में सरल हो गया है।

भारत एक ऐसा देश है जहॉ अधिक युवा वर्ग है और देश के विकास में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है और भारत को पूर्ण रुप से विकसित भारत युवा वर्ग ही बना सकता है क्योकि युवा वर्ग कुशल कौशल एवं ऊर्जा वान होते है। सूचना क्रांति योजना एक ऐसा मिशन है जिसमें नये–नये सोच को बढ़ावा देता है और इस सोच को युवा पीढ़ी को सौपा जाये जो देश का विकसित भारत का स्वप्न सच हो सकता है क्योकि सूचना क्रांति योजना एक नये उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ रहा है और इस उद्देश्य को पूरा करने में युवाओं का योगदान होना बहुत जारी है।

उपर्युक्त बातों से यही स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में सूचना क्रांति युवाओं के लिए मार्गदर्शक का कार्य कर रही है। वर्तमान समय में हर छोटी बड़ी बातों की जानकारी हमें सूचना क्रांति अर्थात इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त होती है। सूचना क्रांति के कारण विश्व एक गांव बन कर रह गया है। क्योंकि एक स्थान पर बैठे–बैठे हम इंटरनेट के माध्यम से पूरे विश्व की जानकारी प्राप्त कर लेते है। संक्षिप्त में कहूं वो आज युवा सूचना क्रांति के बिना अपने आप को असहाय मानता है।

स्वामी विवेकानन्द

कु. भुनेश्वरी एवं कु. रुखमणी, बी.ए. द्वितीय वर्ष

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता में हुआ था, उसके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त और माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। स्वामी विवेकानन्द का बचपन का नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था, नरेन्द्र ने कोलकत्ता विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की, और कानुन की परीक्षा की तैयारी करने लगे।

विवेकानन्द जी का परिवार कुलीन एवं धनी और उदारता व विद्वता के लिए विख्यात था। विश्वनाथ दत्त कोलकत्ता उच्च न्यायालय में अंटानी एल ला थे व कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकालत करते थे वे एक विचारक अति उदार व गरीबो के प्रति सहानुभूति रखने वाले धार्मिक व सामाजिक विषयों में व्यवहारिक और रचनात्मक दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्ति थे। भुवनेश्वरी देवी सरल व अत्यन्त धार्मिक महिला थी। स्वामी विवेकानन्द की मृत्यु 04 जुलाई 1902 को बेलूर में हुई।

स्वामी विवेकानन्द की बुद्धि बचपन से तीव्र थी और परमात्मा में व अध्यात्म में ध्यान था नरेन्द्र
दत्त पहले ब्रम्ह समाज में गये किन्तु वहाँ आपके चित्त संतुष्ट न हुआ इसी समय में आप अपने लोगो से
लेकिन कही भी आशंकाओं का समाधान न मिला। नरेन्द्र नाथ दत्त ने शिकागों में सन 1883 में विश्व
सम्मेलन में भाग लिया और भाषण भी दिया।

स्वामी विवेकानन्द जी वहाँ पर भारत के प्रतिनिधि के रुप में पहुचे थे। भाषण का आरम्भ उन्
बहनो और भाईयों शब्द से किया था इस सम्बोधन से ही लोगों ने तालिया बजानी शुरु कर दी थी।
दिन आपके एक संबंधी आपको रामकृष्ण परमहंस के पास ले गये।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने नरेन्द्र दत्त को देखते ही पूछा क्या तुम धर्म विषयक कुछ भजन गा स
हो फिर नरेन्द्र ने दो तीन भजन अपने मधुर स्वरों में गाए। नरेन्द्र नाथ दत्त के भजन में स्वामी परमहंस अत
प्रसन्न हुए तभी से नरेन्द्र दत्त स्वामी परमहंस का सत्संग करने लगे। 16 अगस्त 1886 को स्वामी पर
परलोक सुधार गये।

कंगला मांझी महाविद्यालय

कु. हेमलता नेताम, बी.ए. अंतिम

शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय जो कि श्री कंगला मांझी जी के नाम पर यह महाविद्या
खुला है उनका नाम हीरासिंह देव था। जो एक क्रांति वीर थे वह बघमार अंचल के रहने वाले थे। अतः प्र
वर्ष 05 दिसम्बर को हम अपने महाविद्यालय में उनकी पुण्यतिथि मनाते आ रहे है और आगे भी मनाते र

ग्रामीण अंचल में खुला यह महाविद्यालय डौण्डी तहसील के युवक युवतियों के लिए एक वर
से कम नहीं है। डौण्डी तहसील एक आदिवासी क्षेत्र है जहाँ आसपास के गांव से कई छात्र–छात्राऐ हि
ग्रहण करने इस महाविद्यालय में आते है और शिक्षा ग्रहण करते है। क्योंकि इन ग्रामीण क्षेत्रों में
छात्र–छात्राऐ किसानो के घर से है और कईयों के माता पिता उन्हे बाहर पढ़ाने में सक्षम नहीं होते या
उनके पास बाहर पढ़ाने के लिए कोई साधन हीं नही होती है। ग्रामीण क्षेत्र में अधिकांश परिवार ही
बच्चों को शहर में पढ़ने के लिए भेजते है। अगर मान लो कि यह महाविद्यालय इस क्षेत्र में नहीं होता
बारहवी कक्षा के बाद उनकी पढ़ाई ही नहीं होती और साधन के अभाव में हम वही रुक जाते, और ह
विकास की गति भी रुक जाती। क्योंकि यहां ज्यादातर लोग साइकल से ही आना जाना करते है।

हमारे महाविद्यालय में पढ़ाई के साथ–साथ खेलो को भी महत्व दिया जाता है। हमारे महाविद्या
में पुस्तकालय, कम्प्यूटर लैब इत्यादि की भी व्यवस्था है। इसके साथ ही यहां विशेष जनरल नॉलेज की
क्लास की जाती है। जिससे की हम छात्र–छात्रओं को कोई अच्छी रोजगार की प्राप्ति हो सके। और उ
शिक्षा का महत्व बढ़ सकें। हमारे महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना और रेडक्रास की भी व्यवस्था
जिससे हम लोगो तक स्वच्छ भारत एवं स्वस्थ भारत का प्रचार प्रसार करते है।

इसके अतिरिक्त कोई विशेष दिवस पर भी कार्यक्रम रखा जाता है तथा हम छात्र–छात्राओं को
अवगत कराया जाता है । उस विशेष दिन के बारे में जैसे – किसी महापुरुष की जंयती या कोई दिव
बारे में या अन्य कोई विषय के बारे में व्याख्यान भी कराया जाता है । कोई लेखक, कवि डॉ. या जज
माध्यम से, जो हमारे पढ़ाई में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह महाविद्यालय सन 2006 में खुला तब से
आज तक इसकी महत्व बनी हुई है। खास तौर पर हम ग्रामीण अंचल के लड़कियों के लिए हमें बड़े
के महाविद्यालय में ना सही किन्तु वैसे शिक्षा तो मिल रही है और जहां महाविद्यालय नहीं है वहाँ उनकी
को रोक दिया जाता है।

आओ कुछ सीखे

कु. लोपा साहू, बी.एस–सी. प्रथम वर्ष

बनना है तो,
महामहिम कंगला मांझी की तरह बनना सीखो।
पाकर आगे बढ़ना सीखो,
जिन्दगी कहती है,
ऐसा ही कुछ करना सीखो।

अभावों के रहते हुए भी,
जो महामहिम कंगला मांझी जी ने किया है।
तो हमारे पास सब कुछ होते हुए भी,
ऐसा काम करने के लिए सीखना होगा।
पढ़कर आगे बढ़ना होगा,
और जिन्दगी में ऐसा ही कुछ करना होगा।

करो तो मेहनत,
ऐसा करो की महान बन जायें।
लक्ष्य ऐसा चुनों की,
उसे पाने के लिए जी जान लग जायें।
काम ऐसा करो की,
मर के भी अमर हो जायें।
यहाँ जिन्दगी तो सभी काट लेते है,
जिन्दगी ऐसे जियो कि,
महामहिम कंगला मांझी जैसे मिसाल बन जायें।

बनना है तो,
ऐसा ही बनना सीखो।
पढ़कर आगे बढ़ना सीखों,
जिन्दगी कहती है,
ऐसा ही कुछ करना सीखों।

"जिन्दगी और समय, विश्व के दो सबसे बड़े अध्यापक हैं। जिन्दगी हमें समय का सही उपयोग करना सिखाती है जबकि समय हमें जिन्दगी की उपयोगिता बताता है।"
ए.पी.जे. अब्दूल कलाम

संगणक (कम्प्यूटर)

कु. पुनम, बी.ए. द्वितीय

वर्तमान समय में कम्प्यूटर की महत्ता और उपयोगिता सर्वविदित है। अब हिन्दी में कम्प्यूटर से आसानी से किया जा सकता है। पत्र–पत्रिकाएं, पुस्तक अनुवाद आदि का कार्य बड़ी सहजता से के द्वारा हम बहुत ही कम समय में कर सकते है। देवनागरी लिपि वैज्ञानिक लिपि है तथा देवनागरी में से काम करना कठिन नहीं है। पूर्णीकृत देवनागरी कम्प्यूटर के आने से मुद्रण प्रकाशन सम्प्रेषण और भाषाओं में मशीनों के संचालन की समस्या दूर हो गई है। भविष्य में हिन्दी के सन्दर्भ में हिन्दी के कम्प्यूटर द्वारा अनुवाद की बहुत अच्छी सम्भावनाएँ है।

इस वैज्ञानिक युग में कम्प्यूटर के चमत्कार से सभी परिचित है। इसका जन्म और विकास भाषी देशों में हुआ। फलतः इसका लाभ अधिकतर अंग्रेजी भाषा को मिला। इसकी तकनीकि शब्दावली अंग्रेजी भाषा में है। भारत मे प्रवेश के समय भी बहुत सी सरकारी नोटिस और बिल अंग्रेजी में आने लगे हिन्दी की प्रगति रुक सी गई थी भारत सरकार के राजभाषा विभाग सक्रिय होकर भारतीय वैज्ञानिक ध्यान इस ओर आकृष्ट किया।

परिणामतः बिड़ला प्रौद्योगिक तथा विज्ञान संस्थान पिलानी और डी.सी.एम. प्रोडेक्ट्स ने पहला द्वि साफ्ट वेयर सिद्धार्थ नाम से निर्मित किया। इसमें अंग्रेजी और हिन्दी के साथ तमिल में भी कुंजी पट तत्पश्चात् आई.आई.टी. कानपुर ने हिन्दी कम्प्यूटर निकाला। फिर तो हैदराबाद से लिपि नामक त्रै कम्प्यूटर भी मार्केट में आ गया। इन दिनों दर्जनों जो कि इस दिशा में सक्रियता दिखला रहे है। प्र कि–बोर्ड द्विभाषी है। इससे सरकारी कार्यालयों और सार्वजनिक प्रविष्ठानों को बहुत लाभ हुआ। क हिन्दी के साथ अंग्रेजी भी तो हमारी राजभाषा बनी बैठी है। इन आविष्कारों से दोनो में एक साथ कार्य लगे।

महान पुरुष कंगला मांझी

भुवन लाल साहू, बी.ए. अंतिम

कंगला मांझी जी छत्तीसगढ़ के महान सपुत थे। कंगला मांझी आदिवासियो के प्रमुख नेता व स सेनानी के रुप में जाने जाते हैं। कंगला मांझी जी ने अपने समय में हो रहे अंग्रेजो द्वारा शोषण के वि आवाज उठाई। मांझी जी अपनी युवा अवस्था में सन् 1913 में भारतीय स्वतंत्र आंदोलन में जुड़े और ही वर्ष में अंग्रेजो द्वारा जंगल का हो रहा दोहन के विरुद्ध आदिवासियों को खड़ा कर दिया। सन् 19 बस्तर में आंदोलन की गतिविधियों से चितिंत होकर आन्दोलन को दबाने की प्रयास किया, परन्तु कंगला के अनुरोध पर तत्कालीन राजमाता ने आदिवासियों का साथ दिया और अंग्रेजो को पीछे हटना पड़ा

कंगला मांझी लगातार अपने जंगल व गॉवो में अपने लोगो के बीच आदिवासियों को संगठित में लगे रहें। आन्दोलन के कारण मांझी जी को अंग्रेजी सरकार द्वारा गिरफ्तार किया गया। परन्तु जेल उनके लिए वरदान साबित हुआ। जेल मे उनकी मुलाकात गांधी जी से हुआ। वे गांधी जी के सत्य अ नीति से काफी प्रभावित हुए।

> "यह बिल्कुल सत्य है कि पानी में तैरने वाले ही डूबते है, किनारें पर खड़े रह वाले नहीं, लेकिन किनारे पर खड़े रहने वाले कभी तैरना भी सीख नहीं पाते
>
> सरदार वल्लभ भाई पटे

सन् 1920 में मांझी जी को फिर जेल भेजा गया। जहाँ पुनः गांधी जी से उनकी मुलाकात हुई और उसी समय बस्तर का स्वतंत्रता संग्राम की रणनीति तैयार की गई। गांधी जी से प्रेरणा लेकर कंगला मांझी ने एक शांति सेना का संगठन किया और आदिवासियों व सेना के दम पर आन्दोलन को चलाया और बस्तर के जंगल पर अंग्रेजो को पाव धरने नहीं दिया। वे देश की आजादी को ही अपना लक्ष्य बना लिये और उसी के मार्ग पर वे चलने लगे।

05 दिसम्बर को छ.ग. का यह महान सपूत स्वर्गीय हो गये। यह क्रांतिवीर पूरे देश के लिए स्मरणीय व प्रेरणा के स्त्रोत है। कंगला मांझी जी को स्मरण करते हुए उनके ग्राम बाघमार में 05 दिसम्बर को उनकी पुण्यतिथि पर व्यापक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। छ.ग. सरकार ने बालोद जिला अन्तर्गत डौण्डी स्थित शासकीय महाविद्यालय का नामकरण कंगला मांझी जी के नाम पर किया है।

इस महाविद्यालय में आदिवासी अंचल के छात्र–छात्रायें शिक्षा ग्रहण कर रहे है। 05 जनवरी 2019 को महाविद्यालय के वार्षिक उत्सव सम्मेलन में महाविद्यालय के प्राचार्य महोदय डॉ. यू.के.मिश्र के प्रयासों से महाविद्यालय में कंगला मांझी जी की मूर्ति स्थापित हुई। मांझी जी की धर्मपत्नी श्रीमती फुलवा देवी जी के द्वारा उसका अनावरण किया गया। ऐसे महान क्रांतिवीर कंगला मांझी जी को मेरा शत्–शत् नमन व प्रणाम। जय हिन्द, जय छत्तीसगढ़, जय कंगला मांझी।

मेरे गुरुजनों की बाते, मेरी जुबानी

बलराम, भूतपूर्व छात्र, बी.ए. अतिम

गुरु–शिष्या का रिश्ता, है बड़ी पुरानी।
दो पन्नों में सिमट जाए, नहीं ऐसी कहानी।।
कभी बातें सांसारिक तो, बाते कभी रुहानी।
सुन लो बाते गुरुजनों की मेरी जुबानी।।
सिखाते हमको सदाचार, परोपकार इनकी वाणी।
कोई बन जाता पुलिस, कलेक्टर ज्ञानी।।
कभी कथा पुराण तो, बाते कभी अनजानी।
सुन लो बाते गुरुजनों की मेरी जुबानी।।
सफल हो जीवन में, रखते सब पर निगरानी।
डांट–फटकार भी लगाते, न करे हम शैतानी।।
कभी प्यार मुहब्बत तो, कभी सिखाते रिश्ते विविध निभानी।
सुन लो बाते गुरुजनों की मेरी जुबानी।।
भटक जाए मार्ग बताते, महापुरुषों की आत्म कहानी।
जिसमें संघर्षो की है, भारी बातें अमृत वाणी।।
रहीम कभी तो, कभी कबीर की अमृत वाणी।
सुन लो बाते गुरुजनों की मेरी जुबानी।।
सदैव चलो सच्चाई की डगर पे, कहते बात सुहानी।
रखों विचार उच्च जीयों, जीवन सादा न करों बेईमानी।।
बने पालक–पोषक कभी हमारे, कभी बने महादानी।
मेरे और मेरे गुरुजनों की, बस यही कहानी।
सुन लो बाते गुरुजनों की मेरी जुबानी।।

कंगला मांझी कॉलेज में पौधरोपण

डौण्डी शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय में हरियर छग योजना के तहत 100 नग फलदार, छायादार एवं औषधीय पौधे जिसमें कटहल, आंवला, बेल, गुलमोहर, जामुन, अशोक, नीबू, स्प्रेटाफार्म, काजू आदि पौधों का रोपण किया गया. पौधरोपण करने से पूर्व वृक्षों का वर्तमान समय में महत्व पर प्रकाश डालते हुए वरिष्ठ प्राध्यापक एमके सरकार ने कहा कि पृथ्वी पर मात्र 3 प्रतिशत पानी ही पीने योग्य है. इसलिए हमें पानी को संरक्षित करने की जरूरत है इसका सबसे अच्छा उदाहरण पौधरोपण है. महाविद्यालय में जल संरक्षण अभियान के तहत रंगोली प्रतियोगिता एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया. संगोष्ठी में छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना व्हीके कोमा ने कहा कि जल संरक्षण अभियान का उद्देश्य पानी कैसे बचाएं पानी का कैसे सीमित उपयोग करे. जिसे जल का सामान्य स्तर बना रहे पर विचार मंथन किया जा रहा है. योगेश्वर साहू ने कहा कि जल को संरक्षित रखना है तो हम अधिक से अधिक पौधा रोपण करना होगा क्योंकि पानी वहीं गिरता है जहां पेड़ पौधे होते है. इस अवसर पर एसएल ध्रुव, केएस साहू, भूपेन्द्र गायकवाड़ एवं लगभग 230 छात्र-छात्राएं उपस्थित थे.

25/07/2019

खैरवाही में लगा विशेष शिविर

डौण्डी. शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का सात दिवसीय विशेष शिविर ग्राम खैरवाही में आयोजित किया गया है. यह छग सरकार की महत्वाकांक्षी योजना है और इस योजना के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का लक्ष्य रखा गया है जब समाज के हर व्यक्ति का योगदान नहीं होगा तब तक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होगी. अध्यक्षता कर रहे डॉ. यूके मिश्र ने कहा कि महात्मा गांधी व स्वामी विवेकानंद के विचारों को मूर्त रूप देने यहां काम करेंगे. देश के विकास के लिए महात्मा गांधी ने गांव के विकास की बात कही थी. स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को प्रेरणा दिया. यह दोनों बातें हमें राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर में देखने को मिल रहा है. शिविर प्रभारी व्हीके कोमा ने शिविर की जानकारी देते हुए बताया कि हर रोज सुबह प्रभात फेरी के बाद परियोजना कार्य व बौद्धिक चर्चा होती है. रात में सांस्कृतिक कार्यक्रम किया

शासकीय महाविद्यालय [illegible] मनाई तुलसीदास जयंती

डौण्डी. शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी में प्राचार्य डॉ. यूके मिश्र के मार्गदर्शन में [illegible] गोस्वामी तुलसीदास की जयंती मनाया गया. कार्यक्रम को [illegible] [illegible]

स्वयं सेवकों ने ग्राम कामता में की सफाई

डौंडी. कालेज के छात्रों ने स्वच्छता पखवाड़ा में निकाली रैली।

डौंडी शासकीय कंगला मांझी कॉलेज में स्वच्छता पखवाड़ा का समापन गुरुवार को हुआ। इसके तहत राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयं सेवकों ने कॉलेज एवं गोद ग्राम कामता में अलग-अलग गतिविधियां की। कॉलेज के शौचालय, कार्यालय, प्रयोगशाला, कक्षाओं की सफाई की गई। 6 से 8 अगस्त के बीच गोद ग्राम कामता में डोर टू डोर कार्यक्रम के तहत शौचालय के निर्माण व उपयोग के बारे में ग्रामीणों को बताया। 9 से 10 अगस्त को ग्राम कामता में गलियों, नालियों, सरकारी भवन, स्कूलों, पंचायत भवन व आंगनबाड़ी की सफाई की। 11 से 13 अगस्त के बीच स्वयं सेवकों ने हो सार्वजनिक स्थल, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र डौंडी व कॉलेज भवन की सफाई की। बुधवार को स्वयं सेवकों ने कार्यक्रम अधिकारी व्हीके कोमा व दलनायक ईशु मानकर के नेतृत्व में स्वच्छता जागरूकता रैली निकाली।

शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय में मना युवा दिवस

निबंध प्रतियोगिता में ईशु मानकर प्रथम

डौण्डी. शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा महाविद्यालय में स्वामी विवेकानंद के जन्म दिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया गया. कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रतीक पुरुष स्वामी विवेकानंद के छायाचित्र पर दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया. कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्राचार्य डॉ. यूके मिश्र ने कहा कि विवेकानंद ने भारत को विश्व में पहचान दिलाया है. लोगों के मानस पटल पर भारतीय संस्कृति की छाप छोड़ी है तथा भारत को विश्व गुरु बनने का गौरव प्रदान किया. प्रो. डीके मेश्राम ने कहा कि युवाओं को विवेकानंद के सिद्धांतों को आत्मसात करने की जरूरत है. युवा दिवस के अवसर पर

महाविद्यालय के चार निर्धन छात्र-छात्राओं ईशु मानकर, योगेश्वरी, खेमनराम एवं तृप्ति देवांगन को 300-300 रुपए का आर्थिक सहायता विवेकानंद सहायता कलश के माध्यम से दिया गया. युवा दिवस के अवसर पर निबंध प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. निबंध में प्रथम ईशु मानकर, [illegible] पोस्टर में प्रथम [illegible] सचिन कुमार रहे. वाद-विवाद में प्रथम रविकुमार एवं [illegible] नीलकमल प्रथम पर रहे. इस अवसर पर राधेश्वरी देशमुख, डॉ. [illegible] फिरोप, भूमिका, [illegible] पदमावती, पालकर एवं [illegible] उपस्थित थे.

स्वयं सेवकों ने 7 दिन तक नाली, सड़क, स्कूल, तालाब और गौठान की सफाई कर दिया स्वच्छता का संदेश

भास्कर न्यूज | डौंडी

शासकीय कंगला मांझी कॉलेज डौंडी के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का सात दिवसीय शिविर का समापन ग्राम खैरवाही में गुरुवार को हुआ। मुख्य अतिथि जनपद सदस्य शिवगिरी चुरेन्द्र थे। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ.यूके मिश्र ने की। कार्यक्रम की शुरुआत राजकीय गीत अरपा पैरी के धार से हुआ। विशेष अतिथि प्रधान पाठक बीके छेदैया ने कहा कि डौंडी कॉलेज के छात्रों ने सात दिनों तक अनुशासन में रहकर विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया। जनपद सदस्य चुरेन्द्र ने कहा कि शिविर में परियोजना कार्य गांव की गलियों, नालियों, सड़क, पंचायत भवन, स्कूल प्रांगण, तालाब व गौठान के आसपास सफाई कर स्वच्छता का संदेश दिया है। साथ ही नाडेप गड्ढे का भी निर्माण किया ताकि कचरे को इधर-उधर ना फेंके। कार्यक्रम अधिकारी वीके कोमा ने बताया कि शिविर के दौरान परियोजना कार्य के साथ [illegible] नृत्य, संगीत व नाटक के माध्यम से नवाचार व सामाजिक जागरूकता का संदेश दिया गया। इस [illegible] पर परन सिंह लेंझिया, [illegible] राम मंडावी, सुरेश मालेकर [illegible] साथ राष्ट्रीय सेवा योजना के [illegible] उपस्थित थे।

बापू के विचारों को मूर्त रूप देने का काम करेंगे युवा: डॉ. मिश्र

26-11-2019

भास्कर न्यूज | डौंडी

डौंडी. रासेयो शिविर में स्वास्थ्य परीक्षण करते हुए डॉक्टर।

शासकीय कंगला मांझी कॉलेज डौंडी के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का सात दिवसीय विशेष शिविर ग्राम खैरवाही में शुरू हुआ। नरवा, गरवा, घुरवा, बारी विषय पर लगे शिविर के प्रथम दिन के मुख्य अतिथि जनपद अध्यक्ष प्रभारी आर्य ने कहा कि जिस विषय को लेकर लगाया गया है, वह छत्तीसगढ़ सरकार की महत्वाकांक्षी योजना है और इस योजना के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का लक्ष्य रखा गया है। जब समाज के हर व्यक्ति का योगदान नहीं होगा तब तक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होगी।

अध्यक्षता कर रहे प्राचार्य डॉ. यूके मिश्र ने कहा कि महात्मा गांधी व स्वामी विवेकानंद के विचारों को मूर्त रूप देने यहां काम करेंगे। देश के विकास के लिए महात्मा गांधी ने गांव के विकास की बात कही थी। स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को प्रेरणा दिया। यह दोनों बातें हमें राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर में देखने को मिल रहा है। शिविर प्रभारी व्हीके कोमा ने शिविर की जानकारी देते हुए बताया कि हर रोज प्रभात फेरी के बाद परियोजना कार्य व बौद्धिक परिचर्चा होगी। रात में सांस्कृतिक कार्यक्रम होगा। पहले दिन शिवार्थियों ने गांव की गलियों की सफाई की। स्वास्थ्य टीम ने 50 छात्र-छात्राओं का शुगर और बीपी जांच की। स्वास्थ्य टीम में केएस कुरुपाल, बीआर बरोठिया, आरके लारेन्द्र, एके नेताम, एन बग्गा, जितेंद्र पुरुषेंद्र उपस्थित थे। शिविर के तीसरे दिन अधिवक्ता पुरुषेंद्र साहू व अनिल योगी ने साइबर क्राइम पास्को एक्ट व महिला बाल संरक्षण से संबंधित कानूनी अधिकार की जानकारी दी।

शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय में हुआ आयोजन

विद्यार्थियों को दी कानून की जानकारी

19-10-19

शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौंडी में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण बालोद के तत्वावधान में विधिक जागरूकता शिविर राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के सहयोग से आयोजित हुआ। इस जागरूकता शिविर का उद्देश्य छात्र-छात्राओं को कानून संबंधी जानकारी देना था।

मुख्य वक्ता अनिल योगी अधिवक्ता जिला न्यायालय बालोद ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा... [illegible]

19-10-19

स्वच्छता के लिए विद्यार्थियों को दिलाई शपथ

19-8-19

डौंडी. शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी में स्वच्छता पखवाड़ा 1 से 15 अगस्त तक आयोजित किया गया. 2 अगस्त को प्राचार्य द्वारा स्वच्छता शपथ दिलाया गया. 5 अगस्त को महाविद्यालय परिसर की साफ सफाई किए जिसमें शौचालय, कार्यालय, प्रयोगशाला, कक्षाएं प्रमुख है. 6 से 8 अगस्त के बीच गोदग्राम कामता में डोर टू डोर कार्यक्रम के तहत शौचालय के निर्माण एवं उसके उपयोग के बारे में ग्रामवासियों को जानकारी दी गई. 9 से 10 अगस्त को ग्राम कामता में जाकर स्वयं सेवकों ने गलियों, नालियों, सरकारी भवनों, स्कूलों, पंचायत भवन एवं आंगनबाड़ी, सार्वजनिक स्थल, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र डौण्डी एवं महाविद्यालय भवन की साफ-सफाई किए गए. 14 अगस्त को स्वयं सेवकों ने कार्यक्रम अधिकारी व्हीके कोमा एवं दलनायक ईशु मानकर के नेतृत्व में स्वच्छता जागरूकता रैली का आयोजन महाविद्यालय परिसर से डौण्डी नगर तक कर स्वच्छता का संदेश लोगों को दिए गए. कार्यक्रम को सफल बनाने में महाविद्यालय के अधिकारी-कर्मचारी एवं छात्र-छात्राओं का विशेष योगदान रहा है.

स्वयंसेवकों ने की सड़क, नाली, हैंडपंप, तालाब के आस-पास की सफाई

डौंडी।सोमवार को शासकीय कंगला मांझी कालेज डौंडी के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों ने गोद ग्राम कामता में एक दिवसीय स्वच्छता शिविर का आयोजन किया। स्वच्छता के लिए युवा थीम पर आयोजित इस शिविर का संचालन रासेयो के कार्यक्रम अधिकारी वीके कोमा व दल नायक ईशु मानकर ने किया। शिविर में 64 स्वयंसेवकों ने महिला स्वच्छता मित्र के टीम के साथ मिलकर गांव की सड़क, नाली, हैंडपंप, तालाब के आस-पास की सफाई कर स्वच्छता का संदेश दिया। साथ ही गांव को प्लास्टिक मुक्त ग्राम बनाने के लिए संकल्प लिया। इसके लिए फैले प्लास्टिक को बोरी में एकत्र कर रिसाइक्लिंग उपयोग के लिए नगर पंचायत डौंडी को दिया। ग्राम कामता के सरपंच धनसिंह नायक ने कहा कि स्वयंसेवकों ने एक दिवसीय शिविर के माध्यम से जो स्वच्छता अभियान चलाया। वह निश्चित ही सराहनीय है। प्रोफेसर दीपक मेश्राम, प्रधानपाठक रेखा ठाकुर, सहायक शिक्षक ओमप्रकाश यादव, राजमती दुग्गा, ओंकार राव जाधव, स्वयंसेवक प्रीति, हेमा, मीना, रेणुका, हर्षिता, नीलिमा, करीना [illegible]

04-12-2019

एड्स के बारे में खुलकर बात करें और अपनी मानसिकता बदलें: यूके मिश्र

भास्कर न्यूज | डौंडी

छात्रों ने मानव श्रृंखला बनाकर एड्स के बारे में जागरूक किया।

शासकीय कंगला मांझी कॉलेज डौंडी में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई यूथ रेडक्रॉस व रेड रिबन क्लब के संयुक्त तत्वावधान में विश्व एड्स दिवस मनाया गया। इस अवसर पर छात्रों ने मानव श्रृंखला बनाकर लोगों को एड्स के बारे में जागरूक किया।

इस अवसर पर प्रोफेसर डीके मेश्राम ने कहा कि एड्स के बारे में जितना भी जागरूकता फैलाया जाए उतना ही लोगों के लिए लाभदायक होगा। संस्था के प्राचार्य डॉ यूके मिश्र ने कहा कि एड्स के संबंध में कोई झिझक या शंका नहीं होनी चाहिए। इस संबंध में खुलकर बातें करनी चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि हम अपनी मानसिकता को बदलें। पीड़ित व्यक्ति के प्रति सहानुभूति रखें ताकि वह समाज में एक सामान्य व्यक्ति की तरह जीवन जी सके। कार्यक्रम में रेडक्रॉस प्रभारी वीके कमाने कहा कि एड्स के पीड़ित सर्वप्रथम 1981 में पाया गया। इसके बाद विश्व के सभी देश जागरूक हुए और दिसंबर 1988 से विश्व एड्स दिवस मनाने का संकल्प लिया। तब से आज तक हम एड्स दिवस मनाते आ रहे हैं। इस मौके पर प्राध्यापक एनके साखरे, आरपी निषाद, राधेश्वरी देशमुख, डॉक्टर चाह्लता फिलिप, भूमिका साहू, गीता देवांगन, पद्मावती साहू, विजय कुमार, भालचंद्र सिन्हा, हेमा धनकर, मोनिका, ओमी साहू, प्रदीप कुमार समेत छात्र-छात्राएं व स्टाफ उपस्थित थे।

महाविद्यालय में विद्यार्थियों ने की साफ-सफाई

डौण्डी. शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी में महात्मा गांधी जी के 150वीं वर्षगांठ मनाया गया. शासन के निर्देशानुसार 1 अक्टूबर को महाविद्यालय में गहन साफ सफाई किया गया. जिसके अन्तर्गत कक्षाओं, कार्यालयों, प्रयोगशाला, सौचालय एवं महाविद्यालय परिसर

के आसपास घास की सफाई प्राध्यापकों एवं छात्र-छात्राओं द्वारा किया गया. एक दिवसीय स्वच्छता अभियान के निरीक्षण के लिए विश्वविद्यालय दुर्ग से गठित समिति डॉ. राघवेश पाण्डेय सहायक प्राध्यापक बिधि, प्रो. सीडी मानिकपुरी, योगिता ठाकुर एवं वन्दना द्वारा निरीक्षण किया गया. राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा महाविद्यालय में जल संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए वाटर हार्वेस्टिंग बनाने की प्रक्रिया आरंभ की गई. इस अवसर पर योगेश्वर साहू द्वारा गांधी की जीवनी पर विचार किया गया. कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. यूके मिश्र ने कहा कि आज देश का जो विकास हो रहा है इसमें कहीं न कहीं गांधी जी के विचारों की अहम भूमिका है. गांधी जयंती के अवसर पर महाविद्यालय में वाचनालय का उद्घाटन किया गया, जिसका नाम गांधी वाचनालय रखा गया. साथ ही छात्र-छात्राओं के लिए प्रतियोगी परीक्षा के लिए विशेष कोचिंग शुरुआत करने की प्राचार्य द्वारा घोषणा की गई. गांधी जयंती पर निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान गीतांजली बीए प्रथम, द्वितीय केकती यादव बीएससी द्वितीय, पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम ऋषभ बीएससी द्वितीय, द्वितीय स्थान प्रवीण साहू व शिवानीकला रही. वाद-विवाद में प्रथम रवि द्वितीय शदाबुद्दीन तथा विपक्ष में प्रथम कामिनी द्वितीय इशु मानकर रहे. रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम स्थान दिव्या, द्वितीय योगेश्वरी पटेल रही.

दुपचेरा में मनाई गांधी व शास्त्री जयंती

गुरूर. ग्राम पंचायत दुपचेरा में महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री की जयन्ती मनाई गई. इस अवसर पर सरपंच एस कुमार कलिहारी, उपसरपंच चन्द्रीका पनकागम, पंचगन सहित ग्रामीणजन उपस्थित थे.

प्लास्टिक का उपयोग न करने दिया संदेश

डोडीलोहारा. प्रगति विद्यालय में गांधी जयन्ती के अवसर पर बच्चों को शपथ दिलाई गई. इस अवसर पर गांधी जी का प्रिय भजन, रघुपति राघव राजाराम, शिक्षक मूलचंद साहू द्वारा गाया गया. प्लास्टिक से होने वाली परेशानी और दुष्प्रभाव पर बलदेव सिंह यादव ने विस्तार से बताया, प्राचार्य श्री देवांगन ने बापू को महात्मा क्यों कहा गया. इस पर उन्होंने कुछ दृष्टांत द्वारा बच्चों को बताया, इसके पश्चात बच्चों द्वारा रैली के माध्यम से वार्ड भ्रमण कर प्लास्टिक का प्रयोग न करने संदेश दिया. इसके पूर्व महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई. इस अवसर पर प्राचार्य देवांगन सहित ललित सिंह गौर, श्री गंजीर, श्री ठाकुर, पवन पटेल सहित पूरे स्टाफ उपस्थित थे.

कोरोना वायरस से बचाव के तरीके बताए

नवभारत 11/6/2020

डौण्डी. शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों ने वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के प्रति लोगों को जागरूक कर रहे हैं. कार्यक्रम अधिकारी व्हीके कोमा के मार्गदर्शन और दलनायक ईशु मानकर के नेतृत्व में लगभग 35-40 स्वयंसेवकों ने अपने अपने गांवों एवं वार्डों में कोरोना वायरस से बचाव के तरीके बता रहे हैं. दलनायक ईशु मानकर ने अपने भंडारीपारा में वायरस से बचाव के तरीके बता रहे हैं. सामाजिक दूरी का पालन करने एक दूसरे से 6 फीट की दूरी बनाए रखना, घर से बाहर निकलने पर मास्क या सादे कपड़े से मुंह को बांधने के संबंध में जानकारी दी गई. छात्र गणेश्वर ने वार्डवासियों को 20 सेकण्ड तक साबुन या हैण्डवास से हाथ धोने के तरीके बताए, इसी क्रम में प्रीति एवं धनेश्वरी ने अपने ग्राम आड़ेझर में दीवार पर नारा लिखकर कोरोना वायरस के प्रति ग्रामवासियों को सचेत किया. छात्र रवि कुमार ग्राम भर्रीटोला में खेत में काम करने वाले मजदूरों को मास्क वितरण कर सामाजिक दूरी बनाए रख कर खेती कार्य करने की सलाह दी. इसके अतिरिक्त हेमा धनकर, कामनी यादव, यमुना कोमा, रेणुका नायक, दामिनी कौशिक, नीलम कोमा, उमेश्वरी, आदि स्वयंसेवकों ने भी अपने-अपने गांवों में लोगों को वायरस से बचाव के संबंध में जानकारी दी.

कार्यक्रम : महाविद्यालय की रासेयो इकाई ने कामता में मनाया बाल दिवस

कबड्डी में प्रीतम व साथी की टीम...

भास्कर रिपोर्ट | डौण्डी
www.navbharat.org

शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा गोद ग्राम कामता में प्राचार्य डॉ. यूके मिश्र के मार्गदर्शन एवं कार्यक्रम अधिकारी व्हीके कोमा के नेतृत्व में बाल दिवस मनाया गया. पं. जवाहर लाल नेहरू की छायाचित्र पर पुष्प अर्पित एवं दीप प्रज्जवलित कर प्रथम प्रधानमंत्री को याद किया गया. इसके बाद राष्ट्रीय स्वयं सेवकों द्वारा प्राथमिक शाला कामता के बच्चों को गुलाल लगाकर सम्मानित किया गया. दल नायक ईशु मानकर ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि पं. जवाहर लाल नेहरू का योगदान देश के लिए अतुलनरय रहा है उनके द्वारा किए गए साहसिक कार्य नए भारत का याद दिलाता है. ग्राम पंचायत कामता के सरपंच धनसिंह नायक इस अवसर पर उपस्थित रह कर बच्चों को आर्शीवाद देते हुए कहा कि बच्चे देश के भविष्य होते है. अतः इन्हे आर्शीवाद के साथ-साथ प्रेरित करने की भी जरूरत है. इस अवसर पर विविध खेलों का आयोजन भी किया गया, जिसमें स्कूल के बच्चों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया. जिसमें रस्सी दौड़ में नीलिमा, द्वितीय नीता एवं प्रियंका तृतीय स्थान पर रही. इसी प्रकार 100 मी. दौड़ में बालक वर्ग में प्रथम स्थान उमेश, द्वितीय स्थान विजय एवं तृतीय सामजन कुमार रहे जबकि 100 मी. दौड़ बालिका वर्ग में प्रथम यामनी, द्वितीय पल्लवी एवं तृतीय लीना रही. प्रश्नोत्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान तिजेश्वरी, द्वितीय खुशी एवं तृतीय गुलशन रहे. कबड्डी में प्रीतम और साथी की टीम प्रथम स्थान पर रहे. इस तरह खेल और प्रश्नोतरी का आयोजन कर बच्चों के बौद्धिक एवं शारीरिक विकास को परखा गया. इस अवसर पर स्कूल के समस्त शिक्षकगण, छात्र-छात्राएं, ग्रामवासी एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवक प्रीति, हेमा, सुरेश, सचिन, कुमेश, कामिनी आदि उपस्थित थे.

नवोदय में हुई खेलकूद स्पर्धा

बालोद. जवाहर नवोदय विद्यालय में स्व. भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की 130वीं जयंती पर आयोजित बाल दिवस कार्यक्रम को धूमधाम से मनाया गया. सर्वप्रथम विद्यालय के बच्चों ने चाचा नेहरू छायाचित्र पर माल्यार्पण कर पूजा अर्चना संगीत शिक्षक अनिल कुमार के नेतृत्व में पश्चात् प्राचार्य डॉ राजेन्द्र प्रसाद यदु ने नेहरू मटका फोड़ प्रतियोगिता में बच्चों ने बढ़ सिंह, भारतेन्दु वर्मा, कुलेश्वरी, अपूर्वा में योगदान रहा.

बालोद. मां शारदा विद्यापीठ करहीभदर में बाल दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया जहां बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई. कुर्सी दौड़, बिन्दी लगाओ एवं रंगोली, पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में संस्था प्रमुख जागृति साहू, डोमेश्वरी यादव, मिनाक्षी सिन्हा, खेमलता सोरी, नंदिनी कलिहारी, उर्वशी साहू, दिनेश्वरी सिन्हा, रोहिणी साहू, चित्रलेखा वर्मा, भूपेन्द्र धनकर, बोधीराम रावटे, हेमंत अठभागर आदि शिक्षक शिक्षिका उपस्थित थे.

बालोद.

शासकीय हाईस्कूल आमापारा

एनएसएस का शिविर आज से

डौण्डी. शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का सात दिवसीय शिविर ग्राम खेरवाही में 22 से 26 नवम्बर तक आयोजित हो रहा है. इस शिविर का विषय नरवा, गरवा, घुरूवा एवं बारी पर आधारित है. इस शिविर में कुल 50 विद्यार्थी भाग ले रहे है. यह सात दिवसीय शिविर प्राचार्य डॉ. यूके मिश्र के मार्गदर्शन एवं कार्यक्रम अधिकारी व्हीके कोमा के नेतृत्व में आयोजित हो रहा है. कार्यक्रम का उद्घाटन दोपहर 2 बजे स्कूल मैदान पर आयोजित होगा. इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रकाश आर्य जनपद अध्यक्ष डौण्डी तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. यूके मिश्र करेंगे विशेष अतिथि जनपद सदस्य शिवगिरी चुरेन्द, उपसरपंच अश्वनी दास मानिकपुरी, हेमन सिंह पटेल, बीआर छेदैहा प्रधानपाठक पूर्व माध्यमिक विद्यालय खेरवाही उपस्थित रहेंगे.

फिट इंडिया मूवमेंट का देखा प्रसारण

डौण्डी. शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी में राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर फिट इंडिया मूवमेंट शुभारंभ का लाइव प्रसारण को महाविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्र-छात्राओं ने देखा. प्रसारण में भारत के विभिन्न राज्यों के कला, संस्कृति को दिखाया गया जिसका उद्देश्य कला संस्कृति के माध्यम से फिटनेस के महत्व को समझे और जाने. इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. यू.के. मिश्र, प्राध्यापक एन.के.साखरे, आरपी निषाद, व्हीके कोमा, राधेश्वरी देशमुख, योगेश्वर साहू के साथ-साथ महाविद्यालय के कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित थे.

नवभारत, 30/8/19

महाविद्यालय के छात्रों ने मनाया सद्भावना दिवस

नवभारत रिपोर्ट 24-8-19

डौण्डी. शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयं सेवकों द्वारा महाविद्यालय में राजीव गांधी के जन्म दिवस को सद्भावना दिवस के रूप में मनाया गया. इस अवसर पर वाद-विवाद एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. भाषण प्रतियोगिता में ईशु मानकर प्रथम बीए अंतिम एवं द्वितीय स्थान पर सदाबुद्दीन बीए अंतिम वर्ष रहा है. इसी प्रकार वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम प्रीति बीएससी अंतिम वर्ष एवं द्वितीय स्थान नीलेमकमल बीएससी प्रथम वर्ष रहा. इसके बाद मानव श्रृंखला बना कर समाज से सभी लोगों के प्रति सद्व्यवहार करने का संकल्प लिये. कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कार्यक्रम अधिकारी व्हीके कोमा ने कहा कि राजीव गांधी सबसे युवा प्रधानमंत्री रहे और उन्होंने अपने कार्यकाल को संबोधित करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. यूके मिश्र ने कहा कि राजीव गांधी द्वारा अपने कार्यकाल में किये गये कार्य का प्रासंगिकता आज भी है जैसे मताधिकार 18 वर्ष, कम्प्यूटर शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, इस अवसर पर महाविद्यालय के अधिकारी कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे.

कार्यशाला में विद्यार्थियों को दी पोषण आहार की जानकारी

डौण्डी. शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी ने महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा पोषण आहार अभियान के तहत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला मे 10 से 19 साल के किशोरो को पोषण आहार संबंधी जानकारी दिया गया. कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पुष्पा साहू, पर्यवेक्षक महिला एवं बाल विकास डौण्डी ने गर्भवती महिलाओ एवं बच्चो को जन्म के समय दिए जाने वाले पोषक आहारो की विस्तृत जानकारी दिए. हीरो साहू पर्यवेक्षक डौण्डी द्वारा संतुलित आहार जैसे कार्बोहाइड्रेड, प्रोटीन, विटामिन एवं खनिज लवण का मानव जीवन मे उपयोगिता के बताए जिसमे उन्होने हाथ धुलाई के सात चरण को विस्तारपूर्वक छात्र-छात्राओ को जानकारी दिए. दीपा शाह, परियोजना अधिकारी डौण्डी द्वारा सरकार द्वारा चलाये जा रहे पोषण माह के बारे मे विस्तृत जानकारी दिये. आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओ द्वारा रेडी टू इट योजना के तहत विभिन्न व्यंजन घर से बना करके कार्यशाला मे लाए, जिसका परीक्षण करने के बाद प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले कार्यकर्ताओ को प्राचार्य द्वारा सम्मानित किया गया. महिला बाल विकास द्वारा पोषण आहार से संबंधित दिये गये जानकारी के बाद छात्र-छात्राओ से प्रश्न किया गया. छात्र-छात्राओं द्वारा सभी प्रश्नो का उत्तर दिया गया. अंत मे महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. यू.के. मिश्र द्वारा धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि पोषण आहार मानव जीवन के लिए आवश्यक है. बिना पोषण के हम स्वस्थ्य नही रह सकते. उन्होने कहा कि स्वास्थ्य शरीर मे स्वास्थ्य मस्तिष्क का वास होता है. इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राध्यापक एनके साकरे, आरपी निषाद, योगेश्वर साहू के साथ-साथ कर्मचारीगण एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे.

फिट इंडिया मुवमेंट का देखा प्रसारण

डौण्डी. शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी में राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर फिट इंडिया मुवमेन्ट शुभारंभ का लाइव प्रसारण को महाविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्र-छात्राओं ने देखा. प्रसारण मे भारत के विभिन्न राज्यों के कला, संस्कृति को दिखाया गया जिसका उद्देश्य कला संस्कृति के माध्यम से फिटनेस के महत्व को समझे और जाने. इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. यु.के. मिश्र, प्राध्यापक एन.के.साकरे, आरपी निषाद, व्हीके कोमा, राधेश्वरी देशमुख, योगेश्वर साहू के साथ-साथ महाविद्यालय के कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित थे.

नवभारत, 30/8/19

कार्यालय ग्राम पंचायत खेरवाही

राष्ट्रीय सेवा योजना

राष्ट्रीय सेवा योजना

मतदाता जागरुकता
अभियान

राष्ट्रीय सेवा योजना

महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका "मांझी" के प्रथम संस्करण का विमोचन

वार्षिक स्नेह सम्मेलन 2019–20 के सम्मानित अतिथिगण के द्वारा छात्रों को सम्बोधित करते हुए

मुख्य अतिथि–श्री बी.एल.ठाकुर (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.अधिकारी एवं छ.ग. लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष)

विशिष्ट अतिथि– डॉ. संतोष सिंह (प्राचार्य, शासकीय नेमीचन्द जैन महाविद्यालय दल्ली राजहरा)

विशिष्ट अतिथि– प्रो. पी.एस.चुरेन्द्र (प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय, मंगचुवा)

अध्यक्षता– प्रो. (डॉ.) ए.के.मिश्र (प्राचार्य, शासकीय कंगला मांझी महाविद्यालय, डौण्डी)